

श्री सद्गुरुवे नमः

अध्यात्मिक प्रश्नोत्तर

अव्वल संत कबीर हैं, दूजै रामानन्द।
तासे भक्ति प्रगट भई, सात दीप नव खण्ड॥

जा गुरु ते भ्रम न मिटे, भ्रांति न जिव की जाय।
सो गुरु झूठा जानिये, त्यागत देर लाय॥

धर्मदास तहाँ वास हमारा। काल अकाल न पावे पारा॥
ताकी भक्ति करे जो कोई। भव ते छूटे जन्म न होई॥
सांचा सबद कबीर का, हिरदे देखु विचार।
चित्तु देके समुझे नहीं, मोहिं कहत भये जुग चार॥

— सद्गुरु मधु परमहंस जी

साहिब



बन्दगी

सन्त आश्रम रांजड़ी, पोस्ट राया, ज़िला साम्बा (जे. एण्ड के .)

अध्यात्मिक प्रश्नोत्तर

— सतगुरु मधुपरमहंस जी

© SANT ASHRAM RANJRI (J & K)

ALL RIGHTS RESERVED

First Edition	—	March, 2014
Copies	—	5000

Website Address.

www.sahibbandgi.org

www.sahib-bandgi.org

E-Mail Address.

*satgurusahib@sahibbandgi.org

प्रचार अधिकारी

— राम रतन, जम्मू

Editor

Sahib Bandgi Sant Ashram Ranjri

Post -Raya, Distt.-Samba (J & K)

Ph. (01923) 242695, 242602

अध्यात्मिक के मसीहा	6
1. आप जो कहते हैं कि जो वस्तु मेरे पास है, ब्रह्माण्ड में किसी के पास नहीं है, यह	13
2. क्या जीवात्मा अपनी कमाई से पार नहीं हो सकता है?	17
3. आप गुरु भक्ति के लिए बोल रहे हैं। यह तो इंसान की भक्ति हुई न? हम सीधा परम पुरुष ...	22
4. आप कमाई का विरोध करते हैं, पर आप स्वयं कहते हैं कि ध्यान भजन करना। कमाई वाले भी ..	26
5. गुरु और सद्गुरु में क्या अंतर है?	28
6. आपके पंथ के नियम क्या हैं?	30
7. यदि कोई इन नियमों का पालन नाम पाने के बाद न कर पाए तो क्या होगा?	30
8. ये नियम तो बड़े कठिन हैं। इन पर चलना साधारण इंसान के बस की बात नहीं है....	31
9. इसका क्या प्रूफ है कि नाम की ताकत से इन नियमों पर चलना आसान हो जाएगा?	31
10. आपका नाम कैसा है?	32
11. आप ध्यान कहाँ पर एकाग्र करने को कह रहे हैं और क्यों?	32
12. आप किसकी भक्ति दे रहे हैं?	32
13. आप साकार और निराकार की भक्ति क्यों नहीं करते?	33
14. क्या आप कबीर पंथी हैं?	33
15. क्या आपका मत संत-मत है?	33
16. यह भृंग मता क्या है?	34
17. योगमत और संतमत में क्या अंतर है?	37
18. किसी की भी भक्ति करो, क्या यह एक ही बात नहीं है?	41
19. क्या आप सुरति शब्द अभ्यास के खिलाफ हैं?	42
20. आप किस शब्द की बात कर रहे हैं?	42
21. यह सार नाम क्या चीज है और कहाँ से आया?	42
22. क्या एक गुरु को छोड़कर दूसरा गुरु करने में कोई पाप है?	44
23. नाम लेने आना हो तो क्या लेकर आना है?	44
24. साहिब का नाम लेने के बाद देवी देवताओं की भक्ति छोड़ देने से क्या वो हमारा अहित नहीं करेंगे?	44
25. सद्गुरु की भक्ति में आने के बाद निरंजन का तो नुकसान होता है न? फिर वो तो अहित ...	46
26. नाम का सुमिरन माला से क्यों न करें? स्वांसा से क्यों करना है?	47
27. सच्चे संतों ने क्या संदेश दिया है?	48
28. क्या जीवों के कल्याण के लिए बहुत सारे संत एक साथ धरती पर अवतरित होते हैं?	48
29. संसार में कई पंथ, मत-मतान्तर हैं जो संतों की शिक्षा पर चलते हैं। क्या वहाँ भी संत नहीं हैं?	49
30. संतों की भीड़ में सच्चे संत सद्गुरु को कैसे पहचानें?	50
31. आप कहते हैं कि देवी देवताओं को नहीं मानना है, उनकी भक्ति नहीं करनी है। यह तो उनकी निंदा हुई न? ऐसा क्यों?	51
32. क्या मुक्ति जरूरी है?	54
33. मुक्ति कितने प्रकार की है? संतों ने किस मुक्ति की बात की है?	55
34. मन क्या है?	57
35. माया क्या है?	57
36. आत्मा क्या है?	58
37. क्या एक दिन सब समाप्त हो जाएगा? अगर कोई बचेगा तो कौन?	58
38. परमात्मा को सबका मालिक कहते हैं, सब ब्रह्माण्डों का भी मालिक कहते हैं तो जिस दुनिया में हम रह रहे हैं, क्या वो परमात्मा के हाथ में नहीं है? यदि इसका मालिक परमात्मा नहीं है तो कौन है?	58

39. क्या हम सबका संचालन परमात्मा नहीं कर रहा है? 59
40. क्या मरने के बाद सब एक जगह जाकर समाते हैं? यदि नहीं तो कौन कहाँ गया, कैसे पता चले? 59
41. 10वाँ द्वार कहाँ पर है और कैसे खुलता है? 61
42. 11वाँ द्वार कहाँ पर है और कैसे खुलता है? 65
43. यदि योग, यज्ञ, तप, साधना आदि से अमर लोक में नहीं जा सकते हैं तो जो हमारे ऋषि मुनि आदि जो हजारों साल योग, तप, साधना आदि किए, वो कहाँ गये? क्या उनकी मुक्ति नहीं हुई? 65
44. आपके लोग आपको कबीर साहिब जी का अवतार मानते हैं। प्रूफ करो? 65
45. सबसे बड़ा कार्य दुनिया में क्या है? 66
46. आत्म-साक्षात्कार क्या है? 66
47. निरंजन में इतनी ताकत कहाँ से आई कि परम पुरुष की अंश इतनी शक्तिशाली आत्मा को कैद करके रखा हुआ है? 67
48. क्या प्रलय भी निरंजन करता है? 67
49. महाप्रलय कैसे होती है? 67
50. महाप्रलय के बाद क्या होता है? 68
51. अगर परम पुरुष की सब आत्माएँ निष्पाप हैं तो दुखों की नगरी में दुखदायी शरीर में किस अपराध से फेंका गया है? 69
52. यदि परम पुरुष के उस अमर लोक में शरीर भी नहीं है, पाँच तत्व भी नहीं हैं तो गुरु या सद्गुरु भी नहीं होगा न? फिर वो सत्य कैसे है? फिर उनका ध्यान करना कहाँ तक उचित है? 69
53. सद्गुरु सपने में आएँ तो क्या वो सच होता है या सपना? 70
54. जो अकस्मात् मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं, क्या वो दुष्टात्माओं का रूप धारण कर लेते हैं? 70
55. मानव-तन कब मिलता है और क्यों? 70
56. चार खानियों में आत्मा को क्यों फेंका गया है? 70
57. आत्मा का देश सतलोक कैसा है? 71
58. वो परम पुरुष कैसा है? क्या इसका कोई इशारा मिल सकता है? 72
59. संत सद्गुरु की शरण में कौन पहुँच पाता है? 75
60. गुरु दर्शन का क्या महात्म है? 75
61. क्या जीवों को कष्ट देने वाले निरंजन का भी कभी नाश होगा और सारे जीव सदा के लिए ... 80
62. क्या परम पुरुष निरंजन को अपने लोक में स्थान देकर दुखदायी स्थूल सृष्टि की रचना को... 80
63. जब निरंजन के राज्य करने की अवधि समाप्त हो जाएगी, जीवों को कष्ट देने वाले निरंजन का अंत हो जाएगा, तब क्या परम पुरुष दोबारा किसी निरंजन को उत्पन्न करेंगे? 81
64. परम पुरुष ने माया क्यों बनाई? 81
65. क्या परम पुरुष को नहीं पता था कि निरंजन ऐसा निकलेगा? यदि पता था तो क्यों ... 82
66. परम पुरुष ने अपनी अंश आत्माएँ निरंजन को क्यों दीं? क्या इसका यह मतलब है कि उन्होंने ही हमें जानबूझकर कष्ट भरे संसार में फेंका? 82
67. क्या परम पुरुष को नहीं पता था कि जीवों को निरंजन तंग करेगा? फिर आत्माएँ क्यों दीं? 83
68. निरंजन को एक लाख जीव निगलने का शाप देना आत्मा को सजा नहीं हुई क्या? 83
69. निरंजन और आद्य शक्ति की शरीर संरचना क्या वीर्य सृष्टि के लिए ही थी? 83
70. निरंजन तो बुरा बेटा था, पर आद्य शक्ति ने परम पुरुष की अंश आत्माओं को माया जाल में फँसाने के लिए निरंजन की सहायता क्यों की? 84
71. प्रेतात्माएँ आत्मा में प्रवेश ले लेती हैं तो आत्मा विस्मृत हो जाती है। इसका मतलब है कि आत्मा में कुछ डाला जा सकता है, कुछ निकाला जा सकता है। यदि ऐसा नहीं है तो प्रेतात्मा कैसे आ सकती है? 84
72. यदि इंसान देही मुक्ति का एक अवसर दिया गया तो निरंजन ने यह अवसर दिया ही क्यों? 85

73. निरंजन ने सिर्फ इंसान देही ही क्यों नहीं बनाई? बाकी जीव क्यों बनाए? 85
74. मनुष्य जो इतने भगवानों की भक्ति करता है, क्या सच में इतने भगवान हैं? 86
75. बुद्धि क्या है? क्या इससे परमात्मा की प्राप्ति कर सकते हैं? 86
76. इस संसार में अन्याय क्यों हैं? 87
77. क्या स्त्री माया है? 88
78. मनुष्य-तन को देवता लोग भी क्यों पाना चाहते हैं? 88
79. स्त्री का गुरु तो उसका पति होता है। फिर उसे गुरु करने की क्या, जरूरत है? 89
80. परम पुरुष चाहें तो आत्माओं को मुक्ति नहीं दे सकते क्या? 91
81. आत्मा का क्या कसूर था? 92
82. पीड़ा में, कष्ट में या कुछ पाने के लिए जो हम पुकार या प्रार्थना करते हैं, क्या हमारी वो पुकार या प्रार्थना प्रभु तक जाती है या फिर हम ऐसे ही अंधकार में पुकार रहे हैं? 92
83. जो नाम आप दे रहे हैं, आप कह रहे हैं कि वो वाणी का विषय नहीं है। पर वो तो हम बोल भी सकते हैं। फिर यह क्या रहस्य है? 93
84. क्या सच में मनुष्य योनि 6 शरीरों से सम्पन्न है? यदि हाँ तो वो 6 शरीर कौन से हैं? 93
85. परम पुरुष के 16 शब्द पुत्र थे, पर उन्होंने एक मात्र बुरे पुत्र काल निरंजन को ही जीवात्माएँ क्यों दी? 101
86. परम पुरुष का पुत्र होने पर भी काल निरंजन ने जीवात्माएँ क्यों माँगी? यदि माँगी भी तो जीवात्माओं को तंग क्यों किया करता है? 103
87. ये अमर लोक, ये 14 लोक, ये निरंजन, ये माया, ये आत्मा, ये ब्रह्माण्ड, ये देवी-देवता आदि किसने और कैसे बनाए? 104
88. चक्र भेद क्या है? 108
89. पंच मुद्राएँ क्या हैं? क्या इन मुद्राओं से हम परम सत्य की प्राप्ति नहीं कर सकते हैं? 108
90. आत्मा सत्य लोक जाती है तो क्या यह दुनिया याद रहती है? 112
91. क्या सतलोक से इस दुनिया में आने के बाद यह याद रहता है कि सत्लोक है? 112
92. आत्मा सतलोक जाती है तो कैसा लगता है? 112
93. शरीर से निकलने पर चित्त तो यहीं पर रह गया, दिमाग तो यहीं रह गया, फिर कैसे कुछ देर तक याद रहता है कि कोई दुनिया थी और वहाँ से आने पर यह याद रहता है कि कोई सतलोक है? 113
94. कबीर साहिब ने भी तो कई जगहों पर राम का नाम लिया है। यदि वो सगुण निर्गुण भक्तियों से परे की बात कहे हैं तो फिर किस राम की बात किये हैं? 113
95. यदि कोई परम पुरुष है तो धर्म शास्त्रों में सत्य पुरुष की बात क्यों नहीं है? 115
96. सत्संग और कथा में क्या अंतर है? 115
97. स्वर्ग क्या है? 115
98. क्या स्वर्ग और नरक की व्यवस्था निरंजन ने की है? 117
99. दिव्य दृष्टि कहाँ है? यह कैसे खुलती है? 117
100. सहज समाधि क्या है? 118
101. एक गुरु को छोड़कर दूसरे गुरु के पास जाना अपने पति को छोड़कर पराए पति के पास जाने वाली बात नहीं है क्या? 119
102. संत सद्गुरु भी तो एक इंसान हैं। फिर शिष्य का या उनका शरीर छूट जाने के बाद वो शिष्य की आत्मा को अमर लोक ले जाने के लिए कैसे आ सकते हैं? 120
103. जो अवतार आदि संसार में हुए, क्या वो परमात्मा के अवतार नहीं थे? 121
104. यदि यह संसार स्वप्नवत् है तो यहाँ पर जो हम सूर्य, चाँद तारे आदि देख रहे हैं, वो भी स्वप्नवत् हुए न। फिर गुरु भी तो स्वप्नवत् हुआ न? फिर सत्य क्या है? 122
- * जौन भेद में मैं बसौ, वेदौ जानत नाहिं 124
- * युगन युगन से हम चले आए 125
- * मरने वाले का पता 134
- * सार नाम सत्यपुरुष कहाया 135
- * धर्मदास तहाँ वास हमारा काल अकाल न पावे पारा 140



अध्यात्मिक के मसीहा

सम्वत् 1455 सुदी 1398 ई पूर्णिमा सोमवार के दिन अमृत वेला में महान् मानवता वादी अध्यात्मिकता के बानी सन्त सद्गुरु कबीर साहिब का अवतरण काशी के लहरताला नामक तलाब में हुआ। उनके जन्म के विषय में जितनी शंकाएँ और भ्रम लोगों में हैं शायद ही किसी अन्य महात्मा के विषय में हो! किसी ने उन्हें कुंवारी ब्राह्मणी की सन्तान बताया, किसी ने अज्ञात बालक! किसी ने कुछ, किसी ने कुछ। आज भी उनका जन्म एवं जीवन संसार के लोगों के लिए रहस्य है। हालांकि उन्होंने अपने जीवन के विषय में स्वयं अपने शब्दों में रहस्य प्रकट किए हैं। अपना विवरण दिया है कि मैं उस परम सत्ता से शुद्ध चेतन रूप में अवतरित हुआ हूँ :

“सन्तों अविगत से हम आए, कोई भेद भ्रम ना पाये।

ना हम रहले गर्भवास में, बालक होई दिखलाये।

काशी तट सरोवर भीतर, तहाँ जुलाहा पाये॥

ना हमारे भाई बन्धु है, ना संग गिरही दासी।

नीरु के घर नाम धराये, जग में हो गई हाँसी॥

आणे तकिया अंग हमारी, अजर अमर पुर डेरा।

हुक्म हैसियत से चल आए, काटत यम का फेरा॥

काशी में हम प्रकट हुए, रामानन्द पर धाया।

कहै कबीर सुनो भाई साधो, हंस चेतावन आया॥”

ऐसे अनेक स्थलों पर कबीर साहिब ने अपने विषय में अद्भुत रहस्य प्रकट किए हैं जिनके द्वारा प्रतीत होता है कि वे माता के पेट से नहीं जन्मे एवं उस परम पुरुष के अद्भुत प्रकाश से इस धरती पर उनका अवतरण हुआ। प्रिय पाठको मेरा अभिप्राय किसी

विवाद या संशय को उत्पन्न करना नहीं है, वरन् एक महान् सत्य को तर्क युक्त तरीके से आपके समक्ष रखना है। कबीर शब्द अपने आप में अर्थ समेटे हैं। कथावीर कबीर कहाया।

कक्का केवल नाम है, बब्बा वरण शरीर।

ररा सब में रम रहा, जिसका नाम कबीर॥

गगन मण्डल से उतरे, सद्गुरु सत्य कबीर।

जब मांहि पौढ़न किया, सब पीरों के पीर॥

ऐसे अनेकों शब्द स्पष्ट कर रहे हैं कि वे असाधारण थे। जितना विस्तृत व्यक्तित्व कबीर साहिब का मिलता है शायद ही किसी अन्य का हो। समाज उन्हें महान् समाज सुधारक के रूप में, कार्ल मार्क्स से पहले का समाज सुधारक मानते हैं। कवि लोग उनकी सरल शैली एवं रचनाओं को देखकर उन्हें कवि सम्राट मानते हैं। तर्क वादी उन्हें परम स्पष्ट वक्ता के रूप में मानते हैं। ब्रह्मज्ञानी उनकी ज्ञान शैली का अध्ययन करने पर उन्हें ब्रह्मवेत्ता के रूप में मानते हैं। सन्तों में उनका स्थान सन्त सम्राट या प्रथम सन्त सद्गुरु के रूप में मानते हैं। योगी लोग उनके परा रहस्यों एवं साधना के आन्तरिक आयामों का मनन करने पर उन्हें परम योगेश्वर मानते हैं। व्यंगकार उन्हें महान् व्यंगकार मानते हैं। भक्त लोग कबीर साहिब की भक्ति रस की रचनाओं को पढ़कर उन्हें परम भक्त मानते हैं। न्याय कर्ता उनके तर्कों का अध्ययन करके उन्हें महान् न्याय वेत्ता मानते हैं। रहस्य वादि उन्हें अध्यात्म जगत का महान रहस्यवादि मानते हैं। ज्ञानियों में उनका स्थान वैसा है जैसे सरिताओं में गंगा। उन्होंने किसी धर्म की स्थापना नहीं की उनका एक लक्ष्य था, केवल मानव को जगाना। मानवता को जगाने के साथ उन्होंने सर्वशक्तिमान की भक्ति का संदेश दिया। कुछ लोग उन्हें खण्डन वादी मानते हैं परन्तु उन्होंने हर भक्ति का महात्म बताया साथ में बताया कि **किस भक्ति से किस तत्व की प्राप्ती होती है चार तरह की मुक्तियों के स्थान (सामिष्य मुक्ति, सालोक्य, सारोष्य तथा सायुज्य मुक्ति)** का वर्णन

किया, इनको चार किसम के स्वर्ग भी कहा, उनकी प्राप्ति के सूत्र बताए जो वेदों से मिलते हैं। परमनिर्वाण के विषय में बताया जहाँ जाकर आत्मा स्थाई अमरतत्व को प्राप्त होती है। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को पिंड में बताया, उनके साधना के सूत्र सर्व मान्य हुए, उनकी शैली को सबने स्वीकार किया।

भक्ति को कबीर साहिब जी ने तीन भागों में बाँटा

सगुण भक्ति निर्गुण भक्ति परा भक्ति
(वर्णनात्मिक शब्द) (धुनात्मिक शब्द) (मुकात्मिक शब्द)

सुन्न गगन में सबद उठत है , सो सब बोल में आवै ।
निःसबदी वह बोलै नाहीं सो सत सबद कहावै ।
—पलटू साहिब जी

सगुण भक्ति करे संसारा । निर्गुण योगेश्वर अनुसार ।।
इन दोनों के पार बताया । मेरो चित्त एको नहीं आया ।।
आपने इन दोनों के पार बताया । दादू दयाल जी ने कहा—

कोई सगुण में रीझ रहा, कोई निर्गुण ठहराय ।
अटपट चाल कबीर की, मौसे कही न जाय ॥

जाप मरे अजपा मरे , अनहद भी मर जाय ।
सुरति समानी शब्द में , उसको काल न खाय ॥

अंदर धुनें हैं । कुछ इसे सुरति शब्द अभ्यास भी कह रहे हैं और उनमें खो जाते हैं । कुछ धुनों को ही परमात्मा कह रहे हैं । पर इससे तुरीयातीत की अवस्था से पार नहीं जा सकते हैं । सबका अपना वजूद है । धुनें खत्म हो जाती हैं । फिर यह कौन-सा शब्द हुआ ! यानी धुनात्मिक शब्द भी नहीं है, वर्णनात्मिक शब्द भी नहीं है । साहिब कह रहे हैं— ‘सो

तो शब्द विदेह ॥' भाव शरीर से बाहर मूकात्मिक शब्द है अर्थात् बिना अवाज़ का शब्द, आवाज़ रहित धुन (**Sound less sound**) है वो, क्योंकि - 'दो बिन होय न अधर अवाज़ा ॥' आवाज़ दो तत्व के टकराने के बिना नहीं होती और जहाँ आवाज़ है, वहाँ माया है।

हद टप्पे सो औलिया, बे-हद टप्पे सो पीर।

हद-बेहद दोनों टप्पे, तिसका नाम कबीर ॥

कालान्तर में जितने रुहानियत की बात करने वाले सन्त महात्मा हुए सबने निर्विवाद रूप से उनकी बात एवं सिद्धान्त को स्वीकार किया। हर पहलू को अत्यन्त सावधानी के साथ छुआ। सहज साधन के सिद्धान्त को समाज तक पहुंचाया कि हम किस तरह गृहस्थ आश्रम में रहते हुए परमतत्व की साधना को कर सकते हैं। सुषमना नाड़ी को किस तरह खोलकर ब्रह्माण्ड की यात्रा की जा सकती है। इन रहस्यों को आम आदमी की भाषा में बोला :

“खेल ब्रह्माण्ड का पिण्ड में देखिया, जगत की भर्मना दूर भागी।

बाहरा भीतरा एक आकाशवत्, सुषमना डोर तह पलट लागी ॥

पवन को पलट कर शुन्य में घर किया, घर औ अघर में भरपूर देखा।

कहै कबीर गुरु पूरे की मेहर से, त्रिकुटी मध्य दीदार देखा ॥

देख दीदार मस्त होय रहूं, सकल भरपूर है नूर तेरा।

सुभग दरियाव जहाँ हंस मोती चुगे, काल का जाल तहां नाहीं तेरा ॥

ज्ञान का थाल औ सहज मति पथ है, धर अधर में अगम किया डेरा।

कहै कबीर तहाँ भ्रम भासै नहीं, आवागमन का मिटा फेरा ॥

यह शब्द शुद्ध अध्यात्म जगत् के अन्दर ले जाते हैं यदि आप देखें तो पाएँगे ग्रन्थ साहिब में कबीर साहिब की वाणी को बहुत ही ऊंचा स्थान दिया गया है। दादू दयाल जी ने कबीर साहिब के लिए लिखा है।

केते सन्ता कूप है, केते सरिता नीर।

दादू अगम अथाह है, दरिया सत्य कबीर ॥

कः कलौ केवलः सार्थो विद्वेषपरिकीर्तितः।

वृद्धि शुभसमासेन यः कबीरः स योच्चते॥

अर्थात् (क) कलियुग में जीवों के साथ है। (ब) बोध रूप होकर पापों का नाश करता है (र) सबके हृदय में मिल रहा है उसको कबीर कहते हैं।

बाजा बाजे रहित का, पड़ा नगर में शोर।

सद्गुरु खसम कबीर है, नजर ना आवे और॥ -धर्मदास जी

बानी अरब व खरबलों, ग्रन्थाँ कोटि हज़ार।

कर्ता पुरुष कबीर है, नाभे किया विचार॥ -सन्त नाभाजी

यक अर्ज गुफ्तम पेश, तू दर गोश कुन करतार।

हक्का कबीर करीम तू, बेएब परवरदिगार॥

-गुरु नानक साहिब जी

कबीर कर्ता आप है, दूजा नाहीं कोय।

दादू पूर्ण जगत को, भक्ति दृढ़ावन सोय॥

दादू नाम कबीर का, जो कोई लेवे ओट।

उसको कभी न लागसी, काल बज्र की चोट॥ -दादू दयालजी

जैसे बादल गगन में, चलते हैं बे पाँव।

ऐसे पुरुष कबीर हैं, शुन्य में रहे समाव॥

गगन मण्डल से उतरे, साहिब पुरुष कबीर।

चोला धरा खवास (सेवक) का तोड़े यम जंजीर॥

-गरीब दासजी

इत्यादि सन्तों के शब्द प्रकट कर बता रहे हैं कि कबीर साहिब मानव नहीं थे। ऐसे तो सब लोग अपने-अपने इष्ट की प्रशंसा करते हैं, बड़ाई बताते हैं पर भाईयो मेरे तर्क में वज्रन है, गहराई है। साफ हृदय से एवं निष्पक्ष विचार करें! कबीर साहिब जानते थे कि लोगों ने मेरे जन्म के विषय में कई भ्रांतियाँ पैदा की हुई हैं, अन्तः चलते

चलते संसार को बताकर चलते हैं कि हम क्या हैं जैसा कि आप जानते हैं उनका अवतरण सम्वत् 1455 ज्येष्ठ सुधी पूर्णिमा को हुआ। ठीक 120 वर्ष तक संसार में सत्य भक्ति का उपदेश देकर जब उन्हें वापस अपने धाम जाना था तो ऐलान किया कि मैं माघ सुधी एकादशी सम्वत 1575 मगहर (गोरखपुर के पास) में शरीर छोड़ूँगा। उनका ऐलान सुनकर लाखों की संख्या में लोग मगहर में एकत्रित हुए, उसमें उनके प्रमुख शिष्य काशी के राजा वीर सिंह बघेल अपने दल बल के साथ आए तथा अवध के नवाब बिजली खान पठान व अनेकों शिष्यों के साथ-साथ कुछ तमाशबीन भी एकत्रित हुए। राजवीर सिंह ने अपने सेनापति को आदेश दिया जब कबीर साहिब अपना शरीर छोड़ें तो उनके पार्थिव शरीर को लेकर काशी चलना वहाँ मैं उनका संस्कार करके समाधि बनाऊँगा। जब यह बात बिजली खान को पता चली तो उन्होंने कहा मैं ऐसा कभी नहीं होने दूँगा क्योंकि कबीर साहिब मेरे मुर्शिद हैं मैं उन्हें मुस्लिमान धर्म के अनुसार क्रिया करके मज्जार बनाऊँगा। दोनों ओर से तलवारें खिंच गई। दोनों युद्ध के लिए तैयार हो गए। इतने में एक अद्भुत प्रकाश हुआ एवं आकाशवाणी हुई, **“उठाओ पर्दा नहीं है मुर्दा, ऐ मुख नादाना तुमने हमको नहीं पहचाना।”** जब चादर उठाई गई तो कमल के फूल मिले लाश नहीं। यह कार्य कबीर साहिब ने लाखों लोगों के सामने सरअंजाम दिया। हिन्दुओं ने फूल लेकर समाधि बनाई मुस्लिमानों ने चादर लेकर मज्जार। यह दोनों आज भी मगहर में उस महान पुरुष की गवाही दे रहे हैं कि ओ संसार के लोगो वह मानव नहीं, स्वयं पूर्ण परम पुरुष थे। भाइयों आप मेरे तर्क पर विचार करें की इसमें कितना सत्य एवं ज्ञान है। इससे पहले इस संसार में किसी भी काल में किसी ने अपना शरीर विदेह नहीं किया। यह अपने आप में प्रथम एवं अन्तिम कौतुक है जो साहिब ने संसार को दिखाया। उनकी वाणी हमेशा संसार को दिशा एवं सर्वशक्तिमान तक जाने का रास्ता

देगी। वर्तमान परिवेष में उनके सिद्धान्त संसार को शान्ति एवं सत्य के मार्ग की ओर ले जाने को सर्वथा उपयुक्त हैं।

सत्य साहिब कबीर थे, कह गये संत सभी

वाह वाह कबीर के गुरु पूरा है, वाह वाह कबीर गुरु पूरा है।
पूरे गुरु के मैं बलि जौहों, जाका सकल जहूरा है ॥

अव्वल संत कबीर हैं, दूजै रामानन्द।

तासे भक्ति प्रगट भई, सात दीप नव खण्ड ॥

यक अर्ज गुफ्तम पेश, तू दर गोश कुन करतार।

हक्का कबीर करीम तू, बेएब परवर दिगार ॥

—गुरु नानक देव जी

स्वामी! जौ तुम गवौ सो हौं गाऊँ, तुम्हारा ज्ञान विचारूँ।

कहैं रैदास सुणों हो स्वामी, भर्म कर्म सब छाडूँ ॥

—रविदास जी

पानी ते पैदा नहीं, श्वासा नहीं शरीर।

अन्न अहार करता नहीं, ताको नाम कबीर ॥

—नाभादास जी

गगनमण्डल से उतरे, साहिब पुरुष कबीर।

चोला धरा खवास का, तोड़े यम जंजीर ॥



अमली होकर धरे ध्यान,

गिरही होकर कथे ज्ञान।

साधु होकर कूटे भग,

कहे कबीर यह तीनों ठग ॥

अध्यात्मिक प्रश्नोत्तर

1) प्रश्न : आप जो कहते हैं कि जो वस्तु मेरे पास है, ब्रह्माण्ड में किसी के पास नहीं है, यह आपका अहंकार है?

उत्तर : मेरे शब्दों की तरफ ध्यान दो जो हम बोल रहे हैं कि जो वस्तु मेरे पास है वो ब्रह्माण्ड में कहीं नहीं है वो तीन लोक की नहीं है वो चोथे लोक अमर लोक की है। मेरे इस शब्द पर विवाद उठता है। बिजली तार पर संचारित होती है, अहंकार पाँच पर होता है—बल मद, रूप मद, धन मद, विद्या मद, जाति मद।

मैं कोई अहंकार नहीं रखता हूँ। कोई धन का अहंकार रखता नहीं हूँ। पूरे भारत-वर्ष में ऐसे ही अकेले घूमता रहता हूँ। चाहता तो बाडीगार्ड रख सकता था। रूपमद भी नहीं है। हफ्ते में एक बार दाढ़ी बनाता हूँ। कोई सजावट नहीं करता हूँ। साधारण कपड़े पहनता हूँ। किसी भी तरह का अहंकार नहीं रखता हूँ। पर यह बात मैं भरोसे से कह रहा हूँ कि जो वस्तु मेरे पास है वो ब्रह्माण्ड में कहीं नहीं है। मैं अहंकार से परहेज करता हूँ। गरीब भी बुलाए, चल पड़ता हूँ उसके घर। मैं सेवक बनकर घूम रहा हूँ। किसी को अपने हाथ-पाँव दबाने नहीं देता हूँ। पर यह बात मैं भरोसे से कह रहा हूँ। आप चेक करें न मेरे लोगों को। वो दुनिया से निराले लगेंगे। यह उस वस्तु का कमाल है। वो वस्तु कौवे से हंस बनाकर सुरति को उसके घर ले जाने वाली है। अहंकार वाली बात ही नहीं है।

सबमें तेरा जलवा समा रहा है ॥

मुझे सबमें आत्मदेव नज़र आ रहा है। इसलिए घमंड किस बात का करना है! भाई, घमंड किस बात का होता है? आपके पास माँस और हड्डी ज्यादा है। किसी के पास कम है। उसे देखकर कहते हो—चुप रह। तमाचा मारूँगा, सीधा कर दूँगा, जानता नहीं है मुझे। यह हमने हड्डियों का घमंड किया न! अगर हम आत्मा देखेंगे तो यह घमंड आएगा नहीं। दूसरा, पैसे का घमंड आता है न! अरे, इतना पैसा है मेरे पास, तुम्हारी औकात क्या है! मेरे पास पैसा ही नहीं है तो घमंड किस बात का होगा! घर भी नहीं है। लोग कह रहे हैं कि इतने आश्रम! मैं कहता हूँ कि कोई भी मेरा नहीं है। ये संगत का पैसा है। घमंड किस बात का! आप हड्डियों की इज्जत कर रहे हैं, पैसों की इज्जत कर रहे हैं। आत्मदेव की अवहेलना कर रहे हैं। हम आत्मदेव को पकड़ रहे हैं। ठीक है।

सबमें आत्म रूप पछान।।

सारी कायनात मेरे कदमों में भी आ जाएगी, तब भी ऐसा ही रहूँगा। अहंकार तब आता है, जब दिल के किसी-न-किसी कोने में अज्ञान वास करता है। अहंकार की उत्पत्ति अज्ञान से होती है। इसलिए जो अहंकार है, वो अज्ञान है। पहले मैं सत्संग भी नीचे बैठकर करता था। सात साल मैंने नीचे बैठकर सत्संग किया। किसी भी बिंदु पर आपसे अलग ज़ाहिर नहीं कर रहा हूँ। पर लोग ऊँचे हो-होकर देखते थे। क्योंकि वो नहीं देख पाते थे न! इसलिए मैंने एक तख्ता बनवाया लकड़ी का। उस पर सत्संग करता था। लोगों ने उसे सजाना शुरू कर दिया। कहीं फूल लगाना। मैं कुछ नहीं रखने देता हूँ। कोई माला पहनाने आता है, मैं मंजूर नहीं करता हूँ। कोई भी अलंकार शरीर पर नहीं रख रहा हूँ। सादगी में रहता हूँ। अहंकार किसी चीज़ का है नहीं। जिस चीज़ को आप अहंकार समझ रहे हैं, वो मेरा भरोसा है। वो परम सत्य बोल रहा हूँ।

जैसे कोई दुकानदार कहता है कि जो मिर्ची मेरे पास है, कहीं नहीं मिल सकती। वो कहता है कि यह फलानी-फलानी जगह से आई है। ...तो मैं जिस वस्तु की बात कर रहा हूँ, वो भी इस संसार की नहीं

है, तीन लोक में कहीं नहीं है। वो चौथे लोक की वस्तु है। जब वो वस्तु मिलती है तो तीन चीज़ें आ जाती हैं। मैंने अपनी इस चीज़ का अनुभव एक-दो पर नहीं, बल्कि लाखों लोगों पर किया है। इसलिए इसमें कोई संशय नहीं है, पक्की बात है। तीन चीज़ें शर्तिया होती हैं। जिसे भी मैं नाम देता हूँ, तीन चीज़ें पक्का हो जाती हैं—

1. आत्मा और मन अलग हो जाते हैं।

2. संसार का आकर्षण समाप्त हो जाता है।

3. एक पूर्ण सुरक्षा मिल जाती है।

असर सामने है। मेरा हर नामी नाम पाकर बदल जाता है। हर इंसान मन तरंग में नाच रहा है। मन प्रबल है। पर मेरे नामी के साथ अब ऐसा नहीं हो पा रहा है। नाम पाने के बाद मेरा हर नामी चेतन हो जाता है। अन्य पंथों के लोगों के साथ मेरे नामी की तुलना की जाए तो उनका अपने ऊपर कोई होल्ड नहीं मिलता है, कोई आध्यात्मिकता नहीं मिलती है। मेरे नामी अपने को सबसे अलग पाते हैं, उन्हें अपने अन्य साथी बेवकूफ़ लगते हैं, उनकी हरकतें पागलों वाली लगती हैं, क्योंकि उनके मूड का कोई पता नहीं होता कि कब अच्छे बन जाएँ और कब गंदे। कब मूड खराब हो जाए, कोई पता नहीं। यानी मन पर कोई होल्ड नहीं होता, इसलिए पागल लगते।

मेरे नामी का मन पर होल्ड होता है, क्योंकि नाम के साथ मैं मन से उसकी आत्मा का बिलगीकरण कर देता हूँ, दोनों को अलग कर देता हूँ, जिससे मन समझ में आने लगता है। यह काम दुनिया में सबसे कठिन है, जो कोई नहीं कर सकता है। जब मन समझ आने लग जाता है तो दुनिया फीकी लगने लग जाती है, उसका आकर्षण समाप्त होने लग जाता है। फिर तीसरा हर नामी को लगता है कि उसके साथ मैं एक सबल संरक्षक है, हरेक को वो संरक्षक अनुभव होता है। सच है, यह जो वस्तु मेरे पास है, ब्रह्माण्ड में कहीं नहीं है। इस वस्तु से मन की दुनिया समाप्त होती जाती है और आत्मा का रूप समझ आने लग जाता है।

ध्यान क्यों किया जा रहा है? यह जानने के लिए कि मैं क्या हूँ? गुरु आत्मा और मन को अलग कर देता है। किसी कीमत पर यह काम अपनी ताकत से नहीं हो सकता है। मन ने ऐसे उलझा दिया है कि आत्मा कुछ समझ नहीं पा रही है। मन कहता है कि रोटी खानी है तो आत्मा कहती है कि यही मेरी इच्छा है। इस तरह मन ने आत्मा को अपने पीछे लगा रखा है। आत्मा सभी इच्छाओं में, कल्पनाओं में घूम रही है। जितने भी कर्म मनुष्य कर रहा है, सभी उलझन वाले हैं। जब भी कोई चाहे कि इससे निकलें तो यह नहीं निकलने दे रहा है। इसकी पकड़ बड़ी दूर तक है। धन-दौलत दे देगा, सिद्धियाँ-शक्तियाँ दे देगा, पर अपने से आगे नहीं जाने देगा। एक अदब गुरु आपको बाहर निकाल देगा।

मन की पहली ताकत है-अज्ञान। मन आत्मा में ऐसे घुल-मिल गया है कि बड़ा झमेला हो गया है। आत्मा यह झमेला लिए-लिए घूम रही है, इसे समझ नहीं पा रही है। चाहे कोई करोड़ों उपाय भी कर ले, इस झमेले को समझ नहीं सकता है, मन की सीमा से बाहर नहीं जा सकता है।

गुरु यथार्थ में आत्म रूप दिखाता है। हंस की चोंच में गुण है। वो दूध पीता है। अगर उसमें पानी मिला हो तो वो उसे छोड़ देता है, केवल दूध-दूध पी जाता है। यदि पाव दूध में पाव पानी मिलाकर दे दिया जाए तो वो पूरा दूध पी लेगा और पूरा पानी छोड़ देगा। यह काम और कोई नहीं कर सकता है। केवल हंस की तरह ऐसे ही पूर्ण सद्गुरु की सुरति में यह ताकत है कि आत्मा और मन को अलग कर सकता है। यह काम गुरु पल में कर देता है। फिर आत्मा दुबारा मन में नहीं समा सकती। चाहकर भी नहीं। जैसे—

दूध को मथ घृत न्यारा किया,
पलट कर फिर ताहिं में नाहिं समाई ॥

दूध से घी बना लिया तो फिर दूध नहीं हो सकता। यदि दही को मथ मक्खन निकाल लिया तो फिर चाह कर भी उसमें नहीं समा सकता।

जब पूर्ण गुरु आत्मा को मन से अलग कर देता है तो फिर आत्मा मन में नहीं समा सकती है।

कितनी भी ताकत लगा ले कोई, यह काम नहीं कर सकता है। पर-

कोटि जन्म का पथ था, गुरु पल में दिया पहुँचाय ॥

तब एक संतुष्टि मिलती है। जैसे काँटा लगा हो तो निकालने पर आराम मिलता है। ऐसे ही मन का काँटा गुरु निकाल देता है। फिर आप चाहकर भी जगत के पदार्थों में रम नहीं पायेंगे। जगत के पदार्थ आपको रोमांचित नहीं कर पायेंगे। ऐसे पर ही कहा-

सतगुरु मोर शूरमा, कसकर मारा बाण।

नाम अकेला रह गया, पाया पद निर्माण ॥

नाम पाय सत्य जो बीरा, संग रहूँ मैं दास कबीरा ॥

सच मानना, अभी बार-बार चेताकर कह रहा हूँ, जब यहाँ से चला जाऊँगा तो दुनिया पछताएगी, क्योंकि सत्य है-**जो वस्तु मेरे पास है, ब्रह्माण्ड में कहीं भी नहीं है।**



2) प्रश्न : क्या जीवात्मा अपनी कमाई से पार हो सकता है?

उत्तर : कदापि नहीं। अपनी ताकत से करोड़ों जन्मों की तपस्या से भी यह जीव निरंजन का घेरा पार नहीं कर सकता है। निरंजन अपने तक भी नहीं पहुँचने देगा। यदि बहुत जोर लगाकर पहुँच भी गया तो निरंजन में पहुँचकर अपने को भूल जाएगा। पार होने का सवाल ही खड़ा नहीं होता है। असंभव है। इस तीन लोक तक की बात हो तो संभव है, पर वहाँ नहीं। संत सद्गुरु, जिनके पास पारस सुरति होती है, जीव को अपने में समाकर ले जाते हैं अन्यथा निरंजन और माया का आकर्षण खींच लेता है।

जीव विचारा क्या करे, जो न छुड़ावे पीव ॥

यह अपनी ताकत से नहीं छूटने वाला है। कुछ को बुरा लगा। वो कह रहे हैं कि दान करो, कल्याण हो जायेगा। तीर्थ करो, कल्याण हो

जायेगा। निःसंदेह जब उन्हें ठेस लगी तो विरोध हुआ साहिब का। स्वाभाविक भी है।

साहिब ने कहा कि निरंजन का पॉवर जो अन्दर में है, वो अपनी ताकत से पार नहीं होने देगा। आप कथाओं में सुनते भी हैं कि ऋषि-मुनियों ने बड़ी-बड़ी तपस्या की, पर फिर कहीं काम ने वश में कर लिया, कहीं क्रोध के वशीभूत हो गये। अगर इतनी तपस्या करके वो क्रोध से नहीं छूट सके, काम से नहीं छूट सके तो मन-माया के इतने भयंकर जाल से कैसे छूटेंगे! काम तो मन का एक हाथ ही है। क्रोध तो मन का एक हाथ है। तभी तो कह रहे हैं—

कितने तपसी तप कर डारे, काया डारी गारा।

गृह छोड़ भये सन्यासी, तऊ न पावत पारा॥

तो अनुकंपता की बात आई। सद्गुरु की कृपा की बात आई। एक महात्मा ने कहा कि कैसे पार कर देगा सद्गुरु! मेरी समझ से परे है। सच है, उनकी समझ से परे की बात है। क्योंकि उनके पास यह ताकत नहीं होगी। इसलिए समझ से परे है। साहिब कह रहे हैं—

इसके आगे भेद हमारा। जानेगा कोई जाननहारा॥

क्या यह बात गप है? नहीं। योग का सूत्र है—क्रिया। इसलिए गुरु को महात्म नहीं दिया। पर संत महात्म दे रहे हैं। सब पंथों के लोग ये क्रियाएँ बता रहे हैं। पर संत-मत नहीं है यह। संत-मत अलग है। भाई, पहले योग था। संत शब्द नहीं था। अब जो सगुण भक्ति कर रहा है, वो भी संत कह रहा है। संत-मत में 'सहजे सहज पाइये' वाली बात है। वो कह रहे हैं कि गुरु पार कर देगा। वो कह रहे हैं कि पल में पार कर देगा। क्या किसी ऋषि, मुनि ने कहा ऐसा? नहीं कहा। संतत्व गुरु के इर्द-गिर्द घूम रहा है। वो यह नहीं कह रहा कि रास्ता बताएगा वो तो कह रहा है कि एक मिनट में पार कर देगा। निर्गुण तो कमाई की बात करेगा। यहाँ मतभेद खड़े हो जायेंगे। साहिब कह रहे हैं—कोटि जन्म का पथ था,

गुरु पल में दिया पहुँचाय ॥ जो कमाई कह रहे हैं, भ्रमित हैं। हम दो चीज़ कह रहे हैं—गुरु का दर्शन और सेवा। इसलिए दो चीज़ों के इर्द-गिर्द घूम रही है संतों की धारा।

हरि सेवा युग चार है, गुरु सेवा पल एक।

तिसका पटतर ना तुला, संतन किया विवेक ॥

तो साहिब ने खण्डन तो किया नहीं। वो कह रहे हैं कि जिन साधनों से पार होने की सोच रहे हैं, वो नाकाफ़ी हैं।

बिन सतगुरु बांचे नहीं, कोई कोटिन करे उपाय ॥

तब ही काल के जाल से निकल सकोगे। वो ताक़तवर है। तो जो कह रहा है कि कमाई करो, तब परम-तत्त्व की प्राप्ति होगी तो शंका आ जाती है। गोस्वामी जी भी कह रहे हैं—

यह सब साधन से न होई। तुम्हरी कृपा पाय कोई कोई ॥

साहिब भी कह रहे हैं—

अदाकर खुद खज़ाने से, छुड़ा ले अपने बंदे को ॥

तुम अदा करो, अपने खज़ाने से। यह जीव अपनी ताक़त से छूटने में सक्षम नहीं है। क्योंकि बेगाने देश में आकर उसका हंस बहुत बंधनों से बँधा है। और नाम-कमाई से या अपनी ताक़त से जीव कभी भी इन बंधनों से छूटकर उस अमर-लोक में नहीं पहुँच पायेगा।

सगुण-निर्गुण दोनों भक्तियों में कमाई की बात है, गुरु का ज़्यादा महत्व नहीं है। इनमें गुरु केवल रास्ता बता देता है। अब साधक जितनी कमाई करता है, उतना ही ऊपर उठ पाता है। क्योंकि यह तीन लोक की बात है, जहाँ कर्म और कमाई का फल मिलता है। जो बेचारे साधन नहीं कर पाते, उनका जीवन बेकार चला जाता है। पर सत्य-भक्ति में कमाई का कोई महत्व नहीं है। यह उस अमर लोक की बात है, जहाँ कर्म है ही नहीं। अपनी कमाई से जीव केवल तीन-लोक तक ही घूम सकता है। उससे आगे नहीं जा सकता। महाशून्य में बड़े-बड़े चुंबकीय आकर्षण हैं।

जीव वहाँ अपने को भूल जाता है। ऐसे में सद्गुरु उसे होश में लाकर अपने में समाता है और अमर-लोक ले जाता है। अन्यथा करोड़ों जन्म तपस्या करते रहने पर भी वहाँ से पार नहीं हुआ जा सकता है।

धीरे-धीरे दूषित होती गयी संतत्व की धारा। विहंगम चाल लोप होती गयी। मीन और पपील ही रह गयीं। पपील चींटी को कहते हैं और मीन मछली को। पपील मार्ग यानी चींटी की चाल से ब्रह्माण्ड की यात्रा करनी और मीन मार्ग यानी मछली की चाल से तीव्रता से ऊपर की ओर बढ़ना। पंच मुद्राएँ हैं। पहली दो मुद्राएँ पपील चाल कहलाती हैं जबकि बाकी तीन मीन चाल। पर विहंगम चाल केवल संत चलते हैं।

कहैं कबीर विहंगम चाल हमारी॥

ब्रह्माण्डों की यात्रा में भी साधक शरीर से निकलता है। उसे आभास होता है कि चल रहा हूँ। सपना नहीं होता है। पर गति ज्यादा नहीं होती है। 14 लोकों को भी देखता है। ये साधारण नहीं है यात्रा। पर अमर-लोक की यात्रा अपने बल पर नहीं होती है। लगता है कि कोई साथ चल रहा है। मुहम्मद साहिब कह रहे हैं—

चला जब लोक को, शोक सब त्यागिया।

हंस का रूप सतगुरु बनाई।

कीट ज्यों भृंग को, पलट भृंगी करे।

आप संग रंग ले, ले उड़ाई॥

यानी यह जीव अपने बल पर नहीं जा सकता है। जब ऐसा होता है तो दसों दिशाओं में एक-साथ दिखता है।

जिस भी जगह ध्यान लगाएँ, वहाँ का आकर्षण खींचता है। चुंबकीय ताकतों से वो खिंचता है। पर साधक की गुरु से बात नहीं होती है। जबकि विहंगम चाल में गुरु साथ होता है, उससे पूरी-पूरी बात होती है, सब स्थानों को बताते चलते हैं। इच्छा की तीव्र गति से चलता है तो गति तेज़ हो जाती है। इच्छा से ही बल मिलता है। जैसी इच्छा की, वैसे

ही होता है। यदि रुकना चाहो तो वो भी हो जायेगा। जितनी गति चाहो, हो जायेगी। यह स्पीड लाजबाव होती है। इसकी कल्पना नहीं की जा सकती है। दसों मुकामों की यात्रा करता हुआ साधक चलता है। ब्रह्माण्ड के अंत में पहुँचता है तो वहीं सुधि खो बैठता है। उससे आगे अपनी ताकत से किसी कीमत पर नहीं जा सकता है। यहाँ तक भी अपने योग और, परिश्रम से जाया जा सकता है। इसी से कहा—

रंकार खेचरी मुद्रा, दसवां द्वार ठिकाना।

ब्रह्मा विष्णु महेशादि ले, रंकार को जाना ॥

रंकार तक अपनी ताकत से जाया जा सकता है, आगे नहीं। जो विवरण मैंने दिये हैं, कोई भी नहीं दे सकता है। आप जब भी चाहें, शरीर से निकल सकते हैं। पर—

कोई कोई पहुँचा ब्रह्म लोक में, धर माया ले आई ॥

....तो विहंगम में साधक बड़ी तीव्र गति से चलता है। जब निरंजन स्थान पर पहुँचता है तो वहाँ 4 करोड़ सूर्य का प्रकाश है, जिससे वो अपनी सुधि भूल जाता है। जैसे स्वप्न में मन अवस्था बदल देता है, ऐसे ही अवस्था बदल देता है। तब भूल जाता है। तभी सबने कहा—**बेअंतबेअंत.....बेअंत**। वहाँ इतना आनन्द है कि सुधि नहीं रह पाती है। इतने गहन प्रकाश का स्रोत है, इसलिए ज्योति-स्वरूप कहा। इसी का वर्णन सब जगह है। यहाँ पर साधक की आत्मा को सद्गुरु अपने में समाविष्ट कर ले चलता है। वो पारदर्शी शरीर है, साधक सब देखता चलता है। जब शून्य पार हो जाता है तो फिर सद्गुरु उसे अपने वजूद से अलग करते हैं। वहाँ आत्मा प्रश्न पूछती है कि एक बात बताओ कि इतनी देर हम साथ-साथ चले, फिर आपने मुझे अपने में क्यों समाया था? सद्गुरु कहते हैं कि वहाँ निरंजन का जोर इतना है कि मेरे साथ होते हुए भी वो खींच लेता। वो प्रभावित कर लेता, इसलिए मैंने अपने में समा लिया था।

.....तो कोई, जो यह यात्रा किया हो और कोई कहे कि अपनी कमाई से गया तो उसे थोथा झूठ नहीं लगेगा क्या! साहिब कह रहे हैं—

कितने तपसी तप कर डारे, काया डारी गारा।

गृह छोड़ भये सन्यासी, कोऊ न पावत पारा॥

यानी उन्हें अमर-लोक का कोई भेद नहीं है, जो कह रहे हैं कि अपनी कमाई से जाया जा सकता है। वहाँ तो कोई कृत ही नहीं है। साहिब कह रहे हैं—

अदाकर खुद खजाने से, छुड़ा ले अपने बंदे को.....॥

न कुछ किया न कर सका, न करने योग शरीर।

जो कुछ किया सो साहिब किया, भया कबीर कबीर॥

...तो आगे सुरति का सागर आता है। जो ध्यान आपके शरीर में काम कर रहा है, उसी का सागर है वहाँ। आप सोचें कि पूरी दुनिया का काम ध्यान से हो रहा है और वहाँ इसका सागर है। इस आत्मा को वहाँ स्नान करवाया जाता है। वहीं मन छूटता है। कोई पानी में डुबकी नहीं लगानी है। अत्यन्त प्रकाश का स्रोत है और पल में अरबों बार घूमकर बाहर आए तो कैसा है! ऐसी क्रिया से मन छूट जाता है और जब वो आत्मा परम-पुरुष के सम्मुख होती है तो उसमें 16 सूर्यों का प्रकाश आ जाता है। फिर वो परम चेतन हो जाती है।

.....तो बाद में जब-कभी भी वहाँ जाना होता है तो इस तरह से नहीं जाता है। बीच के रास्ते लोप हो जाते हैं। गुरु की ऐसी कृपा! सोचो, यह अपनी कमाई से हो सकता है! कभी नहीं।



3) प्रश्न : आप गुरु भक्ति के लिए बोल रहे हैं। यह तो इंसान की भक्ति हुई न? हम सीधा परम पुरुष की भक्ति क्यों न करें?

उत्तर : शिष्य को गुरु को अखंड ब्रह्म करके मानना है। ऋग्वेद तो कह रहा है—

गुरुब्रह्मा, गुरुर्विष्णु, गुरुर्देवो महेश्वरः।

गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः॥

चलो, मान लेते हैं कि आप वेदों को भी नहीं मान रहे और यदि आप शिष्य नहीं हैं तो आपमें यह सोच आ सकती है कि एक इंसान की भक्ति क्यों? यदि आप संतों की वाणी की ओर चिंतन करें तो आप पायेंगे कि उन्होंने गुरु को परमात्मा के बराबर नहीं बोला है। बराबर कहते तो भी आपकी बात में वजन नहीं था। यदि छोटा कहते तो आप कुछ विचार करते। पर वो गुरु को बड़ा बोल रहे हैं। कुछ बात तो होगी न!

वो परम-पुरुष निर्द्वन्द्व है। उसे संसार से कुछ मतलब नहीं है। उसने निरंजन को इस संसार का राज्य दिया हुआ है। वो आपको यहाँ से छुड़ाने में सक्षम नहीं है। वो नहीं छुड़ा सकता है आपको। इसलिए उसने संत सद्गुरु को इस काम के लिए रखा। यह बहुत कठिन काम है। यह काम संत सद्गुरु करता है। आप सीधा उसकी भक्ति नहीं कर सकते हैं। भक्ति उसी की कर सकते हैं, ध्यान उसी का कर सकते हैं, जिसे कभी देखा हो। आपने उसे नहीं देखा तो नहीं कर पाओगे। उसकी भक्ति करना चाँद पर पत्थर मारने वाली बात है। इसलिए बेकार है। फिर मुक्ति कैसे मिलेगी? यह काम सद्गुरु करेगा। सद्गुरु उसमें समाया हुआ है। वो उसी का रूप है। इसलिए उसे कम नहीं समझना है। सहजोबाई बड़ा प्यारा बोल रही है।

हरि को तजूँ, गुरु को न बिसारूँ। गुरु के सम, हरि को न निहारूँ॥
हरि ने जन्म दियो जग माहीं, गुरु ने आवागमन छुड़ाहीं॥
हरि ने पाँच चोर दिये साथ। गुरु ने छुड़ाय लिए सनाथा॥
हरि ने कुटुंब जाल में घेरी। गुरु ने काटी ममता बेरी॥
हरि ने मोसे आप छिपायो। गुरु दीपक दे ताहि लखायो॥
गुरु न तजूँ, हरि को तज डारूँ। गुरु के सम हरि को न निहारूँ॥

वाह, क्या बात है! सहजोबाई कह रही है कि परमात्मा को छोड़ सकती हूँ, पर गुरु को नहीं। तर्क तो देखो न! प्रभु ने तो संसार में फेंक

दिया था। पर गुरु ने आवागमन छुड़ाया। परमात्मा ने पाँच चोर साथ में दे दिये थे, पर गुरु ने उनसे भी बचा लिया। परमात्मा ने तो माया में फँका हुआ था, पर गुरु ने सारा माया जाल काट दिया। फिर परमात्मा तो मुझसे छुपकर बैठा हुआ था, पर गुरु ने ज्ञान रूपी दीपक से उन्हें दिखा दिया।

आप विचार तो करें। परमात्मा के बराबर भी नहीं बोला है। परमात्मा से भी बड़ा बोल दिया। साहिब तो कह रहे हैं—

गुरु गोविंद दोऊ खड़े , काके लागूँ पाय।

बलिहारी गुरु आपने , गोविंद दिखो लखाय॥

चलो, मूल प्रश्न की तरफ चलते हैं। गुरु भक्ति क्यों? कहीं यह एक इंसान की भक्ति तो नहीं? नहीं। गुरु को इंसान करके नहीं मानना। वो परम-पुरुष का ही रूप है। तनिक भी भेद नहीं है। शरीर का तो एक पर्दा है। अन्दर में बैठा वो उसी का रूप है। आओ, यह रहस्य बताता हूँ।

जब सद्गुरु हंस को साथ लेकर चलता है, तो पहले सिद्ध पुरियाँ आती हैं। वहाँ शक्तियाँ दिखाते हैं। अष्ट सिद्धियाँ। कैसे किसी को खत्म कर सकते हो, कैसे क्या कर सकते हो, यह सिखाते हैं। जैसे कंगाल को बहुत बड़ा धन मिल जाए, खुश होता है न! वहाँ आत्मा उनकी तरफ खिंचती है। गुरु संभाल कर ले जाता है, कहता है कि बच। इस तरह जब ब्रह्मादि लोकों से होते-होते जाते हैं, महाशून्य में पहुँचते हैं। यहाँ तक सफर यूँ था कि गुरु शिष्य एक साथ चल रहे होते हैं। एक सैकेंड में अरबों मील की स्पीड होती है। पूरा हाल बयान करते-करते चलते हैं। महाशून्य में पहुँचने के बाद गुरु शिष्य को अपने में समाहित कर सुरक्षित करके चलता है। उस महाशून्य में ऐसे अनन्त ब्रह्माण्ड समा जायेंगे। 70 प्रलय हैं वहाँ। सत्लोक कोई मज़ाक नहीं समझ बैठना। फिर बाहर निकालता है। अभी भी यहाँ आत्मरूप नहीं है। अभी भी हंस नहीं हुआ है। यहाँ जीव पूछता है कि मुझे अपने में क्यों समाया था? वहाँ गुरु बोलता है कि काल पुरुष का खिंचाव इतना है कि मेरे अलावा सबको खींचेगा; केवल मुझे नहीं खींच पाता है। मेरे साथ होते तब भी खींच लेना था

उसने। इसलिए मैंने तुम्हें अपने में समाया। मेरे भाइयो, जो बातें आपको बोल रहा हूँ, यथार्थ बोल रहा हूँ। अब, अगर कोई कहे कि अपनी कमाई से सतलोक गया, तो मैं कितना मानूँगा! मैं आपको गपोड़ी ही तो मानूँगा न! मैं जो आपको बातें बोल रहा हूँ, कहीं भी ये बातें आपको नहीं मिलेंगी। आप मेरे प्रवचन को सुनना। सभी कथा कहानियाँ सुनाकर बहला रहे हैं। हम आपके सामने बड़ी पीवर (Pure) चीज़ रख रहे हैं। उसके आगे एक बिंदु है, जहाँ सुरति का सागर आता है। जैसे मंदिर में आदमी जाता है तो पहले हाथ-पाँव धोते हैं। मस्जिद में भी जाता है, हाथ-पाँव धोते हैं। वहाँ सुरति का सागर है। गुरु शिष्य की आत्मा को सुरति के सागर में छोड़ देता है। एक सैकेंड में अरबों बार घूमता है। वहाँ से जब बाहर निकलता है, मन वहाँ रह जाता है। इस मन को कोई मामूली नहीं समझना। यहाँ तक मन साथ होता है। कोई भी आदमी अपने को मन से आज्ञा नहीं कर सकता है। कोई भी नहीं कर सकता है।

फिर वहाँ से आगे चलते हैं तो एक बिंदु आता है, जहाँ गुरु शिष्य जुड़वा हो जाते हैं, लगता है कि जितनी ताकत उसकी है, उतनी मेरी भी है। परम पुरुष के पास पहुँचते हैं। परम पुरुष पूछता है कि गुरु चाहिए या मैं चाहिए। वहाँ गुरु और परम पुरुष का अंतर ऐसा लगता है, जैसे दीपक और सूर्य। आत्मा सीधा परम पुरुष के पास खिंचती है। अगर वहाँ परम पुरुष कहा तो सीधा वहाँ सत्लोक में ही रह जायेगा। अपने में नहीं समाने देता है। अगर वहाँ कहेगा कि सद्गुरु चाहिए तो बात और होगी। यह तब होगा, जब उसने यहाँ पर भी यही धारणा रखी कि सद्गुरु ही परम पुरुष है। तब परम पुरुष अत्यंत प्रसन्न होकर अपने में समाता है। तब अपने में समाता है। इस पर साहिब ने कहा—

करूँ निज सम ओहें ॥

मैं आपसे जो यह रहस्य बोल रहा हूँ, यह बहुत बड़ा रहस्य है। जब आत्मा परम पुरुष को देखती है, तभी 16 सूर्यों का उसका प्रकाश हो जाता है। लेकिन जब समाती है तो उसी की तरह हो जाती है। अब वो

धरती पर आते हैं। अब उनके पास पारस सुरति है। यह अत्यंत रहस्यमयी बात बोल रहा हूँ। उसे कहते हैं कि जाओ, तुम्हें निरंजन कभी भी नहीं छू सकेगा। अपनी सुरति से तुम जीवों को चेतन कर दोगे। जब जीव चेतन हो जायेंगे तो उन पर माया नहीं लगेगी। तब वो फिर सद्गुरु कहलाता है। ठीक है।

फिर क्या करेगा गुरु! जिस दिन नाम देगा, पूरा मन का सिस्टम खत्म कर देगा। उसके पास पारस सुरति है।

अब फैसला आपके हाथ में है। स्वयं विचार कर लो न कि गुरु-भक्ति मनुष्य की भक्ति कहें या उन्हें परम-पुरुष करके मानें।



4) प्रश्न : आप कमाई का विरोध करते हैं, पर आप स्वयं कहते हैं कि ध्यान भजन करना। कमाई वाले भी यही कह रहे हैं। अन्तर क्या हुआ?

उत्तर : मैंने कभी नहीं कहा कि खूब कर्म करना, खूब कमाई करना, खूब सेवा करना, तब पार होवोगे। मेरे पास पाँच मोबाइल हैं। बहुत फोन आते हैं। रात को भी नहीं छोड़ते हैं लोग। मैं रात को मोबाइल बंद करके सोता हूँ। एक दिन एक मोबाइल का स्विच ऑफ नहीं किया। इतने में रात के डेढ़ बजे फोन बजा। पहले तो मुझे आया कि उठाऊँ ही नहीं। फिर विचार आया कि हो सकता है कोई बहुत ज़रूरी हो। उठाया तो उसने साहिब बंदगी की, कहा कि मैं लखविंदर हूँ। मैंने कहा कि यह कौन-सा समय है? कहा कि बड़े समय से ट्राइ कर रहा हूँ, मिलता ही नहीं है। मैंने कहा कि अच्छा बताओ, क्या बात है? कहा कि ध्यान-भजन में नहीं बैठ होता है। फैक्टरी में नौकरी है, थककर घर आता हूँ तो ध्यान नहीं कर पाता हूँ। मैंने कहा कि चलते-फिरते कर लिया करो। कहा कि वो भी याद नहीं रहता है। 15-16 घंटे काम करना होता है, नहीं हो पाता है। वो बोला कि मैं यह जानना चाहता हूँ कि हम भी कहीं पार लगेंगे या ऐसे

ही रुड़ जायेंगे। मैंने कहा कि नियम का पालन करते हो? कहा कि वो तो पूरा करता हूँ। मैंने कहा कि फिर तू तो पार है। कहा कि आप कहते हो कि ध्यान-भजन करना। वो क्यों कहते हो? फिर ध्यान-भजन वाले भी पार और हम जैसे भी तो अन्तर क्या रहा? मैंने कहा कि तू डूबते-डूबते पार होगा और जो ध्यान-भजन कर रहा है, वो सीधा पार हो जाएगा। अब तेरे हाथ में है कि तू कैसे पार होना चाहता है। मत करो न भजन। पर साहिब सुमिरन पर बोल रहे हैं-

सुमिरन से सुख होत है, सुमिरन से दुख जाय।

कहैं कबीर सुमिरन किये, साईं माहिं समाय॥

मैंने अपना काम करवाने के लिए आपको सुमिरन करने को कहा है। आपका मामला तो सेट हो चुका है। साहिब आगे क्या बोल रहे हैं-

नाम न लिया तो क्या भया, जो अन्दर है हेत।

पतिव्रता पति को भजे, कबहुँ नाम न लेत॥

सच तो यह है-

मेरे हरि मौको भजे, मैं सोऊँ पांव पसार॥

आप क्या याद करोगे! मैं याद आऊँगा। गुरु ने पार कर दिया है। सिर्फ जो चीज़ दी है, वो संभालना। बाकी कह रहे हैं कि कमाई करनी है। वो कह रहे हैं कि इसी से पार होगे। हम कह रहे हैं कि हो सके तो करना, नहीं तो कोई बात ही नहीं है। सुमिरन न करोगे तो मन दुनिया में रमाना चाहेगा।

सत्यनाम निज औषधि, सतगुरु देई बताय।

औषधि खाय अरु पथ गहे, ताकी वेदन जाय॥

इसलिए अन्तर है। मत करो सुमिरन, पर फिर मन के दायरे में मत आना।

सुमिरन मन की रीत है, सो मन है तुझ माहिं॥

सुमिरन नहीं करोगे तो मन के संकल्प-विकल्प शुरू हो जायेंगे

और अन्तर पड़ेगा। जिस दिन नाम दिया तो सब प्रकाशित कर दिया। जो कई दिन गुफाओं और कंदराओं में बैठकर तप करने से होना था, वो पल में कर दिया।

कोटि जन्म का पथ था, गुरु पल में दिया पहुँचाय॥

तुम्हारा काम बन चुका है। जो पूंजी दी है, इसे लुटाना मत। वो कह रहे हैं कि पूंजी कमाना। हम कह रहे हैं कि जो पूंजी दी है, लुटाना नहीं।

दिन दिन बढ़त सवायो॥

मन चुपचाप कोई-न-कोई संकल्प-विकल्प करेगा। उससे बचने को कहा। वो कुंद करना चाहेगा। ध्यान करने के लिए तो अपने काम के लिए कहा ताकि दूसरों को भी समझा सको। मैं एक-एक के घर तो नहीं जा सकता न! आपके साथ खुद-ब-खुद सब काम होता जा रहा है। ममता छूट रही है, मोह छूट रहा है। मन तो आपको सलाम करता होगा। मन को जहाँ चाहो, लगाओ। सब चीजें नियंत्रण में हैं। सब चीजें कंट्रोल में होती जा रही हैं। गृहस्थ आश्रम में रहते हुए भी आप महात्मा वाला जीवन जी रहे हैं।

जो कोई कहे कि मैं किया तो धनी सहेगा मार॥

आपसे कुछ भी नहीं होने वाला है।

न कुछ किया न कर सका, न करने योग शरीर।

जो कुछ किया सो साहिब किया, भया कबीर कबीर॥



5) प्रश्न : गुरु और सतगुरु में क्या अंतर है?

उत्तर : गुरु ज्यादा-से-ज्यादा तीन लोक तक का ज्ञान रखता है जबकि सतगुरु चौथे लोक का ज्ञाता है। गुरु सगुण या निर्गुण भक्ति का दान देता है जबकि सतगुरु सगुण निर्गुण से परे परम पुरुष की सत्य भक्ति का दान देता है। गुरु केवल रास्ता बताता है, खुद कुछ नहीं कर सकता है, शिष्य

को कमाई करनी पड़ती है जबकि सतगुरु केवल रास्ता न बताकर खुद वहाँ पहुँचा देता है। गुरु परम पुरुष को नहीं जानता है जबकि सतगुरु परम पुरुष का भेद जानता है और उसी में मिलकर उसी का रूप होकर तब धरती पर अवतरित होता है। गुरु अधिक-से-अधिक दसवें द्वार तक का भेद जानता है जबकि सतगुरु 11वें द्वार का भेद जानता है। गुरु जो नाम देता है, वो सांसारिक नाम है, लिखने, पढ़ने, बोलने में आ जाता है, और काया से संबंध रखता है जबकि सद्गुरु जो नाम देता है, वो आत्मा से संबंध रखता है और संसार की वस्तु नहीं है इसलिए लिखने, पढ़ने, बोलने में नहीं आता। गुरु आत्मा का शुद्ध ज्ञान नहीं दे सकता जबकि सद्गुरु शुद्ध आत्मा का ज्ञान देने की सामर्थ्य रखता है। गुरु तीन लोक की मुक्ति का रास्ता भर बताता है, सच्ची मुक्ति का भेद नहीं जानता जबकि सद्गुरु महानिर्वाण यानी सच्ची मुक्ति (जिसमें दोबारा कभी संसार में नहीं आना होता, सदा के लिए परम पुरुष के अमर लोक में आनन्दसागर में खो जाना होता है) का दाता है। यह सब सद्गुरु की कृपा मात्र से हो सकता है, गुरु से नहीं। गुरु जाने-अनजाने में निरंजन की राह ही बताएगा और चाहे कुछ देर के लिए मुक्ति मिल भी जाएगी, पर फिर आ जाकर एक ही बात होगी यानी फिर कभी-न-कभी निरंजन के द्वारा दिये जाने वाले कष्ट ही सहने पड़ेंगे।

सतगुरु के उपदेश का, सुनिया एक विचार।
जो सतगुरु मिलता नहीं, जाता यम के द्वार॥
जम द्वारे में दूत सब, करते ऐं चातानि।
उनते कबहुँ न छूटता, फिरता चारों खानि॥
चार खानि में भरमता, कबहुँ न लगता पार।
सो फेरा सब मिट गया, सतगुरु के उपकार॥



6) प्रश्न : आपके पंथ के नियम क्या हैं?

उत्तर : हमारे पंथ के सात नियम हैं, जिनका पालन हरेक नामी को करना-ही-करना है। नाम-दान देने से पहले ये नियम बताए जाते हैं और इन पर चलना अनिवार्य बताया जाता है। ये नियम हैं—

1. सत्य बोलना।
2. माँस न खाना।
3. शराब न पीना।
4. चोरी न करना।
5. परस्त्रीगमन न करना।
6. जुआ न खेलना।
7. हक की कमाई खाना।



7) प्रश्न : यदि कोई इन नियमों का पालन नाम पाने के बाद न कर पाए या न करे तो क्या होगा?

उत्तर : यदि कोई नामी इनमें से किसी भी नियम का उल्लंघन करता है तो उसे सज़ा मिलेगी। यह मत सोचना कि मुझे जब पता चलेगा तब सज़ा मिलेगी। यह काम ऑटोमेटिक होगा। जहाँ भूल हुई, उसकी सज़ा बराबर मिलेगी। पर अन्तर केवल यह रहेगा कि मान लो, 10 तमाचे की सज़ा है तो साहिब पहले 1 तमाचा देगा। फिर कुछ दिन बाद 2 देगा। फिर कुछ दिन बाद 2 और देगा। पूरे 10 तमाचे पड़ेंगे। पर एक साथ नहीं देगा। थोड़ी यह छूट मिलेगी। यदि अपराध बड़ा हो तो फिर सज़ा भी बड़ी होगी। अपने जीवन में मैंने दो लोगों को बड़ी सज़ा दी है। उनको कहा कि मेरे पास फिर कभी नहीं आना। सुरति से गिरा देता हूँ। वो फिर मेरा ध्यान भी नहीं कर पाते हैं। यह सज़ा एक महापुरुष अंतिम विकल्प के लिए रखता है, जब माफी वाली बात ही नहीं हो। यह आखिरी सज़ा है। जैसे सजाए मौत आखिरी सज़ा है, इस तरह यह आखिरी सजा है।



8) प्रश्न : ये नियम तो बड़े कठिन है। इन पर चलना तो साधारण इंसान के बस की बात नहीं है। फिर इनका पालन कैसे करें?

उत्तर : जब नाम दिया जाएगा तो इन पर चलने की ताकत भी दी जाएगी। जब तक आपने नाम नहीं लिया है, मन के अन्दर समाए हो। मन जो चाहता है, करवा लेता है। पर जब नाम मिल जाएगा तो उसी पल आपकी आत्मा को मन से अलग कर दिया जाएगा। फिर दोबारा चाहकर भी मन में समा नहीं सकोगे। मन पूरा मरेगा नहीं, पर मन पर आपका होल्ड हो जाएगा। ऐसे में आप कुछ भी ग़लत नहीं कर पाओगे। फिर यदि कुछ ग़लत करने की सोचोगे तो वो नाम रूपी ताकत अन्दर से बताएगी कि यह ग़लत है। फिर भी यदि जिद्द करके करोगे तो सज़ा है। पर आप गफलत में नहीं होंगे। आपको पता चलेगा कि यह काम ग़लत है। नाम नहीं होगा तो आपको पता नहीं चलेगा। मन चालाकी से सब करवा लेता है। पर नाम के बाद नहीं करवा पाएगा। यदि आपने फिर भी जिद्द करके गलत करने का प्रयास किया तो नाम की ताकत सुधारकर छोड़ेगी, आपको नियमों पर चलाएगी। ढीठ हो जाओगे तो सज़ा है। पर सच यह होगा कि यदि आपने सुरति गुरु में रखी तो आपके लिए इन नियमों पर चलना बहुत आसान हो जाएगा, क्योंकि आपके ऊपर मन-माया का नशा चढ़ेगा ही नहीं, पाप कर्मों में मन लगेगा ही नहीं।



9) प्रश्न : इसका क्या प्रूफ है कि नाम की ताकत से इन नियमों पर चलना आसान हो जाएगा?

उत्तर : आप हमारे लोगों को चेक करें। उनका पहले का जीवन और नाम के बाद का जीवन देखें। ऐसे लोग आपको कहीं ओर ढूँढ़ने से भी नहीं मिलेंगे। यह नहीं कि अब कोई एक, जो नाम पाकर भी इन नियमों पर नहीं चल रहा होगा, उसको देखो। वो 100 में से कोई 1 ही होगा और वो ढीठ होगा और सज़ा मिल रही होगी। आप ईमानदारी से चेक करना, आपको प्रूफ मिल जाएगा।



10) प्रश्न : आपका नाम कैसा है?

उत्तर : यह सार नाम वाणी का विषय नहीं है। यह 52 अक्षर से परे सजीव नाम है। नाम दान के समय संत सद्गुरु एक क्रिया करता है। वो आपके अन्दर जो ईश्वरीय सत्ता है, उसे जाग्रत करके एकाग्र कर देता है। आपकी आत्मा को मन से निकालकर अपने में समाता है और फिर वापिस शरीर में प्रविष्ट करता है। इस क्रिया से मन और आत्मा अलग हो जाते हैं। इस क्रिया को नाम-दान कहते हैं। वो नाम स्वयं परम पुरुष है, जो आपकी सुरक्षा में, आपको हंस बनाने के लिए, आपको काल पुरुष से बचाने के लिए, आपको मन-माया की मार से बचाने के लिए, आपको इस संसार सागर से पार अमर लोक ले जाने के लिए 24 घंटे आपके साथ में रहता है। संक्षेप में संत सद्गुरु उस परम पुरुष को ही सार नाम के रूप में आपके साथ दे देता है। अन्यथा कोई भी ताकत ऐसी नहीं है, जो काल पुरुष से छुड़ाकर जीव को भवसागर के पार ले जाए।



11) प्रश्न : आप ध्यान कहाँ पर एकाग्र करने को बोल रहे हैं और क्यों?

उत्तर : हम ध्यान अष्टम चक्र पर एकाग्र करने के लिए बोल रहे हैं। योगी लोग सप्तम चक्र तक जाते हैं। ये सात चक्र शरीर के अन्दर ही हैं, पर यह आठवाँ चक्र शीश से सवा हाथ ऊपर है। यहां ध्यान करना इसलिए बोला ताकि आपको यह आभास हो कि आप शरीर के बिना भी हैं।



12) प्रश्न : आप किसकी भक्ति दे रहे हैं?

उत्तर : हम परम पुरुष की भक्ति दे रहे हैं। वो परम पुरुष, जिसकी ये सारी आत्माएँ हैं; वो परम पुरुष, जो काल पुरुष के इस तीन लोक से परे अमर लोक में रहता है; वो परम पुरुष, जिनका ध्यान करके काल पुरुष ने यह तीन लोक का राज्य और अनन्त आत्माओं को माँग लिया था, वो परम पुरुष जो अपनी आत्माओं की पुकार सुनकर उन्हें काल पुरुष के चंगुल से छुड़ाने के लिए कबीर साहिब (उन्हीं के तद्रूप) को संत वेश

में संसार में अवतरित होने के लिए कहता है और अपने ही द्वारा काल पुरुष को दिये गये वचन को निभाने के लिए बलपूर्वक सबको छुड़ाकर नहीं ले जाता। बल्कि युक्ति-युक्ति से समझाकर थोड़े-थोड़े जीव ले जाता है।



13) प्रश्न : आप साकार और निराकार की भक्ति क्यों नहीं करते?

उत्तर : साकार और निराकार दोनों नाशवान् हैं, दोनों एक हैं। पंच तत्वों से बनी सब चीजें साकार या सगुण कहलाती हैं। पाँचों तत्व नाशवान् हैं। यह तो सब जानते हैं, पर इस बात पर कोई गहराई से चिंतन नहीं करता है कि पाँच तत्वों में आकाश तत्व भी आता है, जो कि निराकार है। दो हाथों के बीच जो खाली जगह है, वो आकाश है। आकाश पाँच तत्वों में आता है। जो निराकार उपासना है, वो आकाश तत्व की उपासना है।



14) प्रश्न : क्या आप कबीर पंथी हैं?

उत्तर : नहीं। हम कबीर पंथी नहीं हैं। कबीर पंथी दुनिया को कबीर के गिर्द घुमाते हैं, मैं अपने गिर्द घुमाता हूँ। कबीर पंथ एक तेल है और साहिब बंदगी एक रिफाइंड तेल है। वो एक मक्खन है तो साहिब बंदगी घी है। वो गुरु को नहीं मान रहे हैं, कबीर साहिब को पकड़े हुए हैं। पर वो यह नहीं जान रहे हैं कि कबीर साहिब अपने लिए नहीं बल्कि गुरु के लिए बोल गये हैं। इसलिए हम कबीर पंथी नहीं हैं। पर कबीर साहिब की वाणी को हम एक प्रमाण के लिए ले रहे हैं। अन्यथा संत को उसकी भी जरूरत नहीं है। पर यदि मैं उनकी वाणी के प्रमाण नहीं दूँ, केवल अपनी आँखों देखी बात करूँ तो लोगों को जल्दी विश्वास नहीं हो पाएगा। इसलिए कबीर साहिब की वाणी के उदाहरण लेना मजबूरी है।



15) प्रश्न : क्या आपका मत संत-मत है?

उत्तर : नहीं, हमारा मत संत मत नहीं है। हमारा मत है-भृंग मता।



16) प्रश्न : यह भृंग मता क्या है?

उत्तर : 27 लाख कीट हैं। भृंगा उन सबमें निराला है। वो केवल पुरुष ही है। उसकी मादा नहीं है। उसका वंश कैसे चलता है? वो किसी भी कीड़े को पकड़ लाता है। मिट्टी का घर बनाता है वो। उड़ता भी बड़ी स्पीड में है। उसकी आवाज़ में एक जादू है। वो कीड़े को मिट्टी के घर में रख कर अपनी आवाज़ सुनाता है। बड़ी रोमांचित करने वाली है उसकी आवाज़। उस आवाज़ से उसे वो अपने जैसा कर देता है। पर यदि कीड़ा उसकी आवाज़ सुने ही न तो नहीं हो पाता है वो उसकी तरह। तो भृंगा उसे छोड़कर इधर-उधर चक्कर काट कर आता है और फिर आकर अपना शब्द सुनाने लगता है। यदि वो फिर भी न सुने तो भृंगा फिर उड़कर चला जाता है और फिर एक चक्कर काटकर आता है और अपनी आवाज़ सुनाने लगता है। यदि वो सुन ले तो उसकी तरह हो जाए, पर यदि तीसरी बार भी न सुने तो भृंगा उसे छोड़ देता है। वो कीड़ा ही रह जाता है, भृंगा नहीं बन पाता है। अब वो दूसरे कीड़े को पकड़कर लाता है और यही खेल उसके साथ भी शुरू करता है।

यही काम सद्गुरु का है। सद्गुरु भी शिष्य को अपनी सुरति से अपने समान कर देता है। कीड़े को कुछ नहीं करना है। पकड़कर भी उसे भृंगा ही लाता है, नीचे गिराकर शब्द भी उसे खुद ही सुनाता है। उस कीड़े को तो केवल सहमति जतानी है, शब्द सुनना है। पर वो सुने ही नहीं तो कैसे होगा!

इसी पर साहिब कह रहे हैं—

भृंगी शब्द कीट जो माना।

वरण फेर आपन कर जाना ॥

जो कीड़ा भृंगे का शब्द सुन लेता है, वो अपना वर्ण भूलकर उसकी तरह हो जाता है। यानी गुब्रैला होगा तो वो अपनी आदतें भूलकर भृंगा हो जायेगा, ततैया होगा तो वो ततैया वाली आदतें, ततैया वाले गुण छोड़कर भृंगे के गुण अपना लेगा, उसकी तरह ही हो जायेगा।

कोई कोई कीट परम सुखदाई।

प्रथम आवाज़ गहे चित्तलाई ॥

पर साहिब कह रहे हैं कि कोई-कोई कीट बड़ा सुखदाई होता है, जो पहली आवाज़ में ही शब्द को ग्रहण कर लेता है और उसी की तरह हो जाता है।

कोई दूजे कोई तीजे मानै।

तन मन रहित शब्द हित जानै॥

कोई दूसरे और कोई तीसरे शब्द में ग्रहण करता है। कुछ-कुछ कीट कठिन हैं, जो पहली में परिवर्तित नहीं होते हैं, दूसरी या तीसरी आवाज़ में परिवर्तित हो जाते हैं।

भृंगी शब्द कीट ना गहई।

तौ पुनि कीट आसरे रहई॥

पर जो कीड़ा उसका शब्द सुनता ही नहीं, तीसरी बार भी डर जाता है या सुनना नहीं चाहता, वो फिर कीड़ा ही रह जाता है।

गुरुशब्द निश्चय सत्य माने, भृंगि मत तब पावई।

तजि सकल आसा शब्द बासा, कागा हंस कहावई॥

ऐसे ही गुरु शब्द सुखदाई है। भृंगे की भू-भू की प्रक्रिया में स्पन्दन है। कुछ कीट पहली आवाज़ में नहीं हो पाते हैं परिवर्तित। क्यों नहीं हुए? क्योंकि समर्पित नहीं होते। जब तक समर्पित होकर नहीं सुनता, उसका परिवर्तन नहीं हो पाता। फिर तीन बार में भी न हो तो भृंगा उसे छोड़ देता है, दूसरे को ढूँढ़ता है।

तो पुनि कीट आसरे रहई.....॥

फिर नहीं बन पाता है वो भृंगा। कीट ही रह जाता है। उसने सहमति नहीं दी। यह सहमति साधारण नहीं है।

पहले दाता शिष्य भया, जिन तन मन अरपा शीश।

पीछे दाता सतगुरु भया, जिन नाम दिया बखशीश॥

सभी सहज-मार्ग, सहज-मार्ग कहे जा रहे हैं, पर कमाई-कमाई कहे जा रहे हैं। ये दो पहलू हैं। साहिब कह रहे हैं कि तुम्हें कुछ भी नहीं करना है, सद्गुरु सभी चीज़ें उत्पन्न कर देगा। ये चीज़ें अपने-आप आपमें आती जायेंगी। ज्ञान भी खुद ही आ जायेगा, भक्ति भी खुद ही आ जायेगी, मन पर कण्ट्रोल भी खुद ही आ जायेगा, रूहानियत भी खुद ही आ

जायेगी, शक्तियाँ भी खुद ही आती जायेंगी। आप कहेंगे कि हम नहीं करेंगे तो कैसे होगा! यह जो 'हम' है, इसे संचालित कौन कर रहा है नाम के बाद! गुरु की ताक़त ही इसका संचालन कर रही है, इसलिए अपनी 'मैं' नहीं लाना बीच में, केवल सहमति रखना।

एक ने कहा कि यदि गुरु की कृपा से ही सब होता है तो जो हम ठगी कर रहे हैं, वो भी उसकी ही इच्छा से होता होगा। मैंने कहा—सुन, पूरा-पूरा जबाब दूँगा। यह तब होता है जब हम पूर्ण रूप से समर्पित हो जाते हैं। तब चाहकर भी ग़लत नहीं कर पायेंगे। अभी आप प्रभु के भरोसे चल रहे हैं, प्रारब्ध आपका संचालन कर रहा है, कर्मानुसार आपको फल मिलेगा। मान लो कि कुँए में गिरना होगा तो पक्का गिरोगे। पर जब सद्गुरु पर आश्रित होते हैं तो सद्गुरु कर्म को एक तरफ़ कर देते हैं। वो घटना टल जाती है।

कोटि कर्म पल में कटे, जो आवे गुरु ओट ॥

जो भी काम करेंगे, जो भी नुक़सान या अहित होने वाला होगा, वहाँ गुरु की ताक़त रक्षा करेगी। जो भी होगा वो हित में ही होगा। इसलिए हित-अनहित सबमें उसी की रज़ा मानना। ...तो कहने का भाव है कि सब कुछ वही करेगा, तुम्हें कुछ नहीं करना है।

सुरति करौ मम साईया, हम हैं भवजल माहिं।

आप ही हम बह जायेंगे, जो न गहोगे बाहिं ॥

अर्थात् साहिब ने इंगित किया कि वो अविलंब बदल देगा। कैसा बना देगा? स्वयंमय बना देगा। यही कह रहे हैं कि परिश्रम करने की ज़रूरत नहीं है।

दुनिया में अनेक गुरु हैं जो कहते हैं कि आपको पार कर देंगे, पर जब उनके लोगों को देखते हैं तो पता चलता है कि उनमें कोई बदलाव नहीं है। यानी वे सच्चे गुरु नहीं हैं। इसलिए साहिब ने सतर्क करते हुए कहा—

भृंग मता होय जिहि पासा। सोई गुरु सत्य धर्मदासा ॥

जैसे भृंगा कीट के बिना प्रयास के उसे बदल देता है, ऐसे ही शिष्य की चेष्टा बिना ही यह काम गुरु कर देता है।



17) प्रश्न : योगमत और संतमत में क्या अंतर है?

उत्तर : योग भोग की तरह है। जिस प्रकार भोगी पाँच इंद्रियों का आनन्द लेता है, इस तरह योगी पाँच जगह ध्यान लगाकर सूक्ष्म कोषिकाओं का आनन्द प्राप्त करता है, जो भोग से हजार गुणा बढ़कर होता है। जिस प्रकार भोग की प्रक्रिया में विषय इंद्रि का आनन्द सबसे बढ़कर होता है, इसी प्रकार योग का प्रक्रिया में दसवें द्वार का आनन्द सबसे बढ़कर होता है।

योगमत और संत मत में एक बहुत बड़ा अन्तर यही है कि योगी दसवें द्वार से निकलकर निरंजन के देश में घूमता है, उसी की सीमा में रहता है, उसी को सत्लोक मानता है जबकि संत 11वें द्वार से निरंजन का घेरा तोड़कर सही में अमर लोक जाता है, जिसका रास्ता 11वां द्वार ही है, जो कि सुरति के अन्दर से है।

नौ द्वार संसार सब, दसवें योगी साध।

एकादश खिड़की बनी, जानत संत सुजान॥

दसवें द्वार से जीव जब जाई। स्वर्ग लोक में वासा पाई।

ग्यारहवें द्वार से प्राण निकास। अमर लोक में पाए वासा॥

योग मत में जो नाम-शब्द दिया जाता है, वो कायिक अर्थात् शारीरिक नाम होता है यानी वो शरीर को दिया जाता है। इस नाशवान् शरीर से शिष्य के नाशवान् शरीर को दिया जाता है। दूसरी ओर संतमत में विदेह नाम होता है यानी वो सद्गुरु पारस सुरति से शिष्य की सुरति को देते हैं। इसलिए शिष्य के शीश पर हाथ रखकर उसकी सुरति को पहले पकड़ते हैं और फिर उसे मन से निकालकर अपनी सुरति से वो नाम प्रदान करते हैं। योगमत में बोलकर भी नाम दिया जा सकता है, क्योंकि उसका संबंध सुरति से नहीं रहता। भौतिक कानों से सुनकर शिष्य उस नाम को ग्रहण कर लेता है और उसे जपने या सुमिरन करने लगता है। यह पढ़ने-लिखने में भी आ जाता है। पर संतमत में जो नाम दिया, वो वाणी का विषय नहीं, इसलिए सुरति से दिया जाता है और पढ़ने-लिखने में भी नहीं आता।

ध्यान की दृष्टि से योग-मत में योगी चाचरी, भूचरी, अगोचरी, उनमुनि और खेचरी इन पाँच मुद्राओं से ध्यान लगाता है, जो शरीर से

संबंधित हैं जबकि संतमत में पाँच मुद्राओं से हटकर शीश से सवा हाथ ऊपर ध्यान लगाया जाता है।

योगमत में अनहद धुनों को परमात्मा माना जाता है, शब्द ब्रह्म की बात की जाती है जबकि संतमत में इन धुनों को नाशवान् बताया गया है।

जाप मरे अजपा मरे, अनहद भी मर जाय।

सुरति समानी शब्द में, वाको काल न खाय॥

संतमत में जिस शब्द (सार नाम) की बात की गयी है, वो निःशब्द शब्द है, जिसमें आवाज़ नहीं हैं, धुनें नहीं हैं। वो काया में नहीं होता है।

योगमत कमाई वाला मार्ग है जबकि संतमत सहज मार्ग है, जिसमें गुरु कृपा से सहज ही सब कुछ हो जाता है।

योगमत में सुरति शब्द अभ्यास किया जाता है जबकि संत मत में सुरति को चेतन किया जाता है।

योगमत में गुरु का इतना अधिक महत्व नहीं है। वो केवल रास्ता बताता है, बाकी शिष्य की कमाई है। संतमत में सद्गुरु सर्वेसर्वा है।

योगमत में मीन और पपील मार्ग से साधक साधना करता है जबकि संतमत में विहंगम मार्ग से साधना की जाती है।

कहैं कबीर विहंगम चाल हमारी॥

योग साधना के द्वारा रिद्धियाँ, सिद्धियाँ, दिव्य शक्तियाँ बहुत मिल जाती हैं, पर आत्मा का यथार्थ ज्ञान नहीं मिल पाता है और इन शक्तियों को पाकर फिर योगियों में अहंकार भी देखा गया है जबकि संतमत में आत्मज्ञान हो जाने से अहंकार नहीं रहता। योग में निराकार निरंजन को परम सत्ता माना गया है जबकि संतमत में उसके आगे अमर लोक की बात कही गयी है। आओ योगमत और सन्तमत को थोड़ा अलग करके देखें।

योगमत	संतमत
1. योगमत में काया का नाम है।	1. संतमत में विदेह नाम है।
2. योग मत चाचरी, भूचरी, अगोचरी मुद्राओं के इर्द-गिर्द घूमता है, जो शरीर में हैं।	2. संतमत में पाँच मुद्राओं से आगे शीश से सवा हाथ ऊपर ध्यान रखने को कहा है।
3. यह नाम लिखने-पढ़ने में आता है। इनसे काल-पुरुष ने पाँच तत्व पैदा किये और शरीरों की रचना की।	3. यह अकह नाम है जो लिखने-पढ़ने में नहीं आता है और पाँच तत्वों से बाहर है।
4. योगमत में अनहद धुनों को ही परमात्मा माना जाता है।	4. संतमत में आत्मा किसी शब्द की मोहताज नहीं, क्योंकि आत्मा अपने आप में परिपूर्ण है।
5. योगमत करनी अथवा कमाई का मार्ग है।	5. यह सहज मार्ग है, गुरु कृपा का मार्ग है और भृंग-मता है।
6. योगमत में सुरति शब्द का अभ्यास किया जाता है।	6. संतमत सुरति को चेतन करने का मार्ग है।
7. योगमत में काल का नाम लिया जाता है। यह नाम शरीर को दिया जाता है।	7. संतमत जिंदा नाम प्रदान करता है जो कि शरीर को छोड़ आत्मा को दिया जाता है।
8. योगमत में गुरु की भूमिका न के बराबर होती है।	8. संतमत में भक्ति का सार ही संत सद्गुरु है।
9. योगमत सीमाबद्ध है, जिसमें साधक दसवें द्वार तक ही जाता है।	9. संतमत असीम है जो कि ग्यारहवें द्वार की बात करता है, जो सुरति में है।
10. योगमत निराकार निरंजन की ही सत्ता को सर्वश्रेष्ठ मानता है।	10. संतमत में निराकार सत्ता से आगे चौथे लोक अर्थात् अमर लोक की बात की जाती है।

योगमत	संतमत
11. योगमत में कमाई का फल खत्म होने पर वापिस माता के पेट में आना पड़ता है।	11. संतमत में जीव सदा के लिए आवागमन से मुक्त हो जाता है और अपने निजधाम सत्य लोक को चला जाता है।
12. योगमत बैशाखियों के सहारे चलता है जो कि शास्त्रों की साक्षी देकर अपने आप को स्थापित करता है।	12. संतमत में संत सद्गुरु अपने अनुभव से बोलता है जो किसी का मोहताज नहीं होता है।
13. इसमें रिद्धि-सिद्धि और दिव्य शक्तियाँ प्राप्त होती हैं, मगर आत्मा का ज्ञान नहीं होता है।	13. संतमत में जीव को आत्मज्ञान होने से आध्यात्मिकशक्तियाँ मिलती हैं।
14. योगमत मीन और पपील मार्ग है।	14. जबकि संतमत विहंगम मार्ग है।
15. योग मत के पाँच पड़ाव हैं जो काल पुरुष के अधीन हैं।	15. सन्तमत सतगुरु की सीधी भक्ति है।
16. निरगुण भक्ति शरीर के अन्दर की भक्ति है जो काल पुरुष के अधीन है।	16. विदेह नाम की भक्ति अमर लोक की परम पुरुष की भक्ति है।
17. योग मत अथवा काया के नाम में गुरु का स्थान ही नहीं होता।	17. सन्तमत में गुरु का स्थान अष्टम चक्र में शीश से सवा हाथ ऊपर होता है।

- पाँच शब्द औ पाँचों मुद्रा, सोई निश्चय माना।
आगे पूरण पुरुष पुरातन, उसकी खबर न जाना॥
- नौ नाथ चौरासी सिद्ध लों, पाँच शब्द में अटके।
मुद्रा साध रहे घट भीतर, फिर औंधे मुँह लटके॥



18) किसी की भी भक्ति करो, क्या यह एक ही बात नहीं है?

उत्तर : नहीं, यह एक ही बात नहीं है। पर जो लोग एक ही बात कह रहे हैं, उनकी बात में कुछ हद तक वजन है, क्योंकि एक सीमा तक यह एक ही बात है। साहिब की भक्ति के अलावा आप किसी की भी भक्ति कर रहे हैं, वो एक ही बात है, क्योंकि बाकी सब भक्तियाँ निरंजन की हैं। यदि आप सगुण भक्ति कर रहे हैं, वो भी निरंजन की है और अगर आप निर्गुण भक्ति कर रहे हैं, वो भी निरंजन की है। दोनों भक्तियाँ एक जैसी हैं। दोनों निरंजन के ही रूप हैं। निरंजन के तीन पुत्र उत्पन्न हुए—ब्रह्मा, विष्णु, महेश। फिर शाखाएँ, प्रतिशाखाएँ हुई, पूरा ब्रह्माण्ड हुआ। जो निरंजन की, निराकार की, निर्गुण भक्ति कर रहे हैं, वो भी निरंजन की भक्ति है और जो बाहरी उपासना कर रहे हैं, निरंजन से नीचे की भक्तियाँ कर रहे हैं, वो भी निरंजन की भक्ति है। पूरी दुनिया में काल निरंजन की भक्ति चल रही है। क्योंकि उसी की दुनिया है। उसने सब जगह अपनी ही बात कही है। परम पुरुष का भेद किसी धर्म शास्त्र में नहीं दिया है।

जो जिसकी भक्ति करता है, वो वहीं जाता है, उसी में समाता है। उदाहरण के लिए यदि कोई शिवजी की भक्ति कर रहा है तो वो शिवलोक में जाएगा, जो पित्तों की भक्ति करेगा, वो पितर लोक में जाएगा। जो जिस इष्ट की भक्ति कर रहा है, वो अंत में उसी के समीप जाएगा।

चाहे जो जिसकी भक्ति करेगा, उसी में समाएगा। पर जब महाप्रलय होगी तो सगुण और निर्गुण दोनों भक्तियों वाले सब निरंजन में जाकर समा जायेंगे। क्योंकि तब निरंजन से नीचे वाले सब निरंजन में समा जायेंगे। पर जो साहिब की भक्ति करेगा, वो चाहे जीते-जी और चाहे अंत में निरंजन का घेरा तोड़कर परम पुरुष में ही समाएगा। यदि किसी कारण से भक्ति से हट भी जाएगा तो भी यह भक्ति कभी खत्म नहीं होगी।

जन्म एक नहीं जन्म अनेका। छूटे नहीं भक्ति को लेखा।।

यहाँ पर यह अंतर होगा।



19) प्रश्न : क्या आप सुरति शब्द अभ्यास के खिलाफ हैं?

उत्तर : नहीं, हम किसी के भी खिलाफ नहीं हैं। हम केवल यह बोल रहे हैं कि ये धुनें परमात्मा नहीं है। जब भी हम बोल रहे हैं तो उसमें दो चीजों का समावेश हो रहा है—वायु और पृथ्वी। आप दाँतों और हाथों को भीच कर देखें, आपके कानों में शब्द की गूँज उत्पन्न होगी। ये नाड़ियों के संसर्ग से होता है। ये हमारे शरीर की मूवमेंट की प्रक्रिया है। जब शरीर नष्ट हो जाएगा तो यह सत्य नहीं हो सकता है।

इसलिए हम सुरति शब्द अभ्यास नहीं बोल रहे। हम तो सुरति योग बोल रहे हैं।



20) प्रश्न : आप किस शब्द की बात कर रहे हैं?

उत्तर : पहले यह समझें कि हम जिस शब्द की बात कर रहे हैं, वो वर्णनात्मक भी नहीं, धुनात्मक शब्द भी नहीं भाव वो अनहद शब्द नहीं है। वो अन्दर में होने वाले 70 किस्म के शब्दों से परे है। वो निःशब्द शब्द है यानी मुकात्मक शब्द है (Sound Less Sound) आवाज़ रहित आवाज। उसमें धुनें नहीं हैं। वो इस दुनिया में होने वाले या समझे जा सकने वाले हर शब्द से परे है।



21) प्रश्न : यह सार नाम क्या चीज़ है और कहाँ से आया?

उत्तर : यह सार नाम कोई मामूली चीज़ नहीं है। नाम-नाम तो दुनिया चिल्ला रही है, पर इस सार नाम का भेद कोई नहीं जानता है। साहिब इस नाम के विषय में समझाते हुए कह रहे हैं—

सत्य शब्द सतपुरुषहि जानो। नाम बिना सब झूठ बखानो॥

यह सार नाम स्वयं सत्य पुरुष है।

सत्य-पुरुष से बिछुड़ने के बाद जब आत्माएँ निरंजन की कैद में

आ गयीं तो निरंजन ने एक को भी अमर लोक वापिस नहीं जाने दिया। निरंजन ने पाप और पुण्य में जीवों को बाँध दिया। नरक और स्वर्ग में अपने पाप और पुण्य का फल भोगकर जीव मृत्युलोक में चौरासी की यातना भोगने लगे। चौरासी की महाकष्टकारक यातना के बाद उन्हें मानव-तन दिया गया, जो ज्ञानमय था, पर उसमें भी उन्हें अपार कष्ट दिया गया। मानव-तन जीव को मुक्ति की प्राप्ति के लिए एक अवसर के रूप में मिला। पर जीव निरंजन तक ही पहुँच पाए, क्योंकि अमर लोक का ज्ञान देने वाला कोई न था। इस तरह एक भी जीव अमर लोक नहीं पहुँच पाया।

निरंजन सब जीवों को तप्त शिला पर भून-भून कर खाने लगा, उन्हें कष्ट देने लगा। एक बार जब निरंजन जीवों को भून-भून कर खा रहा था तो सब जीव त्राहि-त्राहि कर उठे। उन्होंने एक साथ पुकार की-कहा कि यदि कोई परमात्मा है तो हमें बचाओ, काल पुरुष का कष्ट हमसे सहा नहीं जा रहा है।

जीवों की वो पुकार सातवें आकाश को चीरती हुई चौथे लोक में परम पुरुष के पास पहुँची। परम पुरुष जान गये कि जीव असहनीय कष्ट में हैं। तब उन्होंने ज्ञानी पुरुष (कबीर साहिब) को बुलाया, कहा कि जाओ, शून्य में निरंजन जीवों को बड़ा कष्ट दे रहा है, काल के दण्ड से जीवों को आजाद करके यहाँ ले आओ।

कर परनाम ज्ञानी चले, करन हंस के काज।

जोपै काल न मानि हैं, तुम्हीं पुरुष को लाज।।

ऐसे में साहिब हर युग में निरंजन के लोक में आते हैं और जीवों को काल के कष्ट से छुड़ाकर अमर-लोक ले जाते हैं। पहली बार जब साहिब धरती पर आए तो 100 साल रहकर वापिस गये। पर एक भी जीव को नहीं ले जा सके। परम-पुरुष ने पूछा कि कोई भी जीव नहीं लाए। कहा-नहीं। परम-पुरुष ने पूछा-क्यों? कहा कि जिसे सुबह

समझाता हूँ, शाम को भुला देता है। जिसे शाम को समझाता हूँ, वो सुबह भुला देता है। तब परम-पुरुष ने कहा कि यह लो गुप्त वस्तु (नाम)। जिस घट में यह वस्तु दे दोगे, उसपर काल का जोर नहीं चलेगा।



22) प्रश्न : क्या एक गुरु को छोड़कर दूसरा गुरु करने में कोई पाप है?

उत्तर : नहीं। अगर आपको लगे कि आपका गुरु संत सद्गुरु नहीं है, पूरा गुरु नहीं है तो उसे त्यागकर निश्चित होकर पूरे गुरु की खोज में चलो। इस खोज में चाहे कितने भी गुरु कर लो तो भी कोई बात नहीं है।

जब तक गुरु मिले नहीं साँचा। तब तक गुरु करो दस पाँचा।।

पहले किये हुए गुरु का त्याग करने के बाद उसकी निंदा करना पाप है। पर उसे त्यागकर सत्य गुरु की तरफ बढ़ना आत्मा के कल्याण का बहुत ही पुण्यात्मक कार्य है।



23) प्रश्न : नाम लेने आना हो तो क्या-क्या लेकर आना है?

उत्तर : परम पुरुष की प्राप्ति के लिए सद्गुरु की शरण में आ रहे हो तो दुनिया में ऐसा कुछ भी नहीं है जो तुम भेंट कर सको। तुम बस श्रद्धा रखना और विश्वास पूरा रखना ताकि अपने को सद्गुरु को समर्पित कर सको।

बस तुम भरोसे के साथ पहुँचने वाली बात करना। तुम कुछ नहीं दे सकते हो। देने वाला तो वो सद्गुरु है।

गुरु समान दाता नहीं, याचक शिष्य समान।

तीन लोक की संपदा, सो गुरु दीन्हें दान।।



24) प्रश्न : साहिब का नाम ले लेने के बाद देवी देवताओं की भक्ति छोड़ देने से क्या वो हमारा अहित नहीं करते?

उत्तर : कोई कुछ नहीं कर सकता है। लाखों लोगों को नाम दिया है।

अभी तक किसी ने आकर यह नहीं बोला है कि पहले हनुमान जी की भक्ति करते थे, अब आपकी भक्ति में आए हैं तो वो गुर्ज लेकर हमें मार रहे हैं या पहले माता की भक्ति करते थे तो वो तलवार लेकर हमें मार रही हैं। सद्गुरु की भक्ति उत्तम है, सर्वमान्य है।

देवी देवल जगत में, कोटिक पूजे कोय।

सतगुरु की पूजा किये, सबकी पूजा होय॥

द्रौपदी के घर में एक चावल का दाना था, जो उसने कृष्ण जी को खिला दिया। सब ऋषियों के पेट एक साथ भर गये अन्यथा उन सबको तृप्त कर पाने जितना भोजन उसके घर में नहीं था। क्योंकि वो गुरु थे। जीवन की अवधि ही कितनी है और सब देवी देवताओं को मनाते-मनाते कई जीवन भी कम पड़ जायेंगे और मुक्ति के लिए कब प्रयास करोगे। सद्गुरु की भक्ति से पूरे ब्रह्माण्ड की भक्ति एक साथ हो जाती है। कोई आपको कुछ नहीं कहेगा। इसके विपरीत जो सद्गुरु का भक्त होता है, सब देवी-देवता भी उसे नमन करते हैं। आपने पढ़ा, सुना और टी.वी. पर देखा भी होगा कि सच्चे महान भक्तों को नमन करते हुए देवतागण पुष्पवर्षा करते हैं। फिर सद्गुरु की भक्ति तो सबसे ऊँची भक्ति है। इसलिए नाराज होकर अहित करना तो बड़ी विपरीत बात हो गयी। देवताओं का नाम लेकर यह डराना धमकाना तो स्वार्थ के कारण केवल इंसानों के द्वारा ही होता है।

किसी जंगल में बकरी गुम हो गयी। उसके बड़े शिकारी हैं। वो सीधा शेर के पास पहुँची, कहा कि तुम्हारी शरण में हूँ। शेर ने कहा कि ठीक है, चिंता मत करना, तेरा कोई बाल भी बाँका नहीं कर सकता है। शेर ने भालू आदि मंत्रियों को बुलाया और कहा कि जंगल में ऐलान कर दो कि यह बकरी हमारी है, इसे कोई हाथ न लगाए। अब बकरी मजे से जंगल में चरने लगी। वो मस्त घूमती थी। तो एक परम-पुरुष की भक्ति करने से बाकी कोई कुछ नहीं कर सकता है। इसलिए यत्नीन करना पहले। हम कोई शास्त्रों के खिलाफ नहीं हैं। हम कह रहे हैं—

देवी देवल जगत में, कोटिक पूजे कोय।

सतगुरु की पूजा किये, सबकी पूजा होय॥

एक सद्गुरु की उपासना से सबकी भक्ति हो जाती है। कुछ कहते हैं कि आदमी को पूज रहे हैं, देवी-देवते छोड़ दिये। आप सोचें कि शास्त्र किसका ध्यान कह रहे हैं। हमने किसी की निंदा नहीं की। हमने इतना कहा है कि ये निरंजन का संदेश दे रहे हैं। आखिर किसकी पूजा के लिए कहा। वेद भी कह रहा है—

ध्यान मूलम् गुरु रूपम्, पूजा मूलम् गुरु पादकम्।

मंत्र मूलम् गुरु वाक्यम्, मोक्ष मूलम् गुरु कृपा॥



25) प्रश्न : सद्गुरु की भक्ति में आने से निरंजन का तो नुकसान होता है न! फिर वो तो अहित कर सकता है न?

उत्तर : अनन्त युगों से आत्मा निरंजन की कैद में पड़ी हुई है। धोखे से भ्रम का जाल डालकर निरंजन ने इसे फँसाया हुआ है अन्यथा न निरंजन में और न माया में इतनी ताकत है कि आत्मा को पकड़ सके। यह स्वयं माया को पकड़े हुए है। अनन्त युगों से यह आत्मा का कुछ बिगाड़ नहीं सका है। वो ज्यों-की-त्यों है। फिर नाम के बाद तो सद्गुरु की ताकत भी साथ में आ जाती है। वो सुरक्षा करती है। जिस शरीर में हो, उसकी भी सुरक्षा करती है। फिर तो उलटा हो जाता है। निरंजन डरने लगता है, क्योंकि वो जानता है कि अब वो उसका कुछ बिगाड़ नहीं सकता है। वो प्रयास करता है कि जीव सद्गुरु की भक्ति को छोड़कर उसकी भक्ति करे। इसलिए किसी भी स्थिति में घबराना नहीं है। जो उसके बंदे हैं, वो उनमें बैठकर सद्गुरु के भक्त का विरोध करेगा, तंग करने की कोशिश करेगा। इसलिए निरंजन से ही तो लड़ाई है। अंत में जीत सद्गुरु के भक्त की होती है चाहे यहाँ वाला मामला हो चाहे वहाँ वाला और वहाँ तो वो निरंजन के शीश पर पाँव रखकर अमर लोक प्रस्थान करता है।



26) प्रश्न : नाम का सुमिरन माला से क्यों न करें? स्वाँसा से क्यों करना है?

उत्तर : यदि माला से सुमिरन किया तो ध्यान माला की तरफ जाएगा। जब अंतिम मनका आएगा तो वहाँ ध्यान रहेगा। जीभ नाम का जाप करती रहेगी, पर मन को भागने का मौका मिल जाएगा।

माला तो कर में फिरे, जीभ फिरे मुख माहीं।

मनवा तो चहुँ दिशि फिरे, यह तो सुमिरन नाहीं॥

माला मन की है। नाम स्वाँसा से हो। जब स्वाँसा से सुमिरन होगा तो रोम-रोम से सुमिरन हो जाएगा। स्वाँसा में हमारी आत्मा रमी हुई है। स्वाँसा पूरे शरीर के रोम-रोम में फैल रही है। जब स्वाँसा से सुमिरन होगा तो वो रोम-रोम से सुमिरन हो जाएगा, आत्मा से सुमिरन हो जाएगा। तभी तो महापुरुषों ने स्वाँसा में सुमिरन के लिए कहा-

स्वाँस स्वाँस प्रभु सुमिर ले, बृथा स्वाँस न खोय।

न जाने किस स्वाँस में, आवन होय न होय॥

गुरु नानकदेव जी कह रहे हैं-

स्वाँसा दी माला नाल सुमिरां तेरा नाम॥

कोई नहीं बोला है कि-

चंदन की माला नाल सुमिरां तेरा नाम॥

या

लकड़ी की माला नाल सुमिरां तेरा नाम॥

यदि माला से सुमिरन किया तो ध्यान माला की तरफ रहेगा और मन निकल भागेगा। मन निकला तो सुरति भी निकली और भजन भंग हो जाएगा।

स्वाँसा के सुमिरन से एक लाभ और है। इससे आपकी सुषुम्ना नाड़ी खुल जाएगी, कपाट चेतन हो जाएगा, आप अंतर्मुखी हो जाओगे।



27) प्रश्न : सच्चे संतों ने क्या संदेश दिया?

उत्तर : सच्चे संतों ने तीन लोक से परे अमर लोक का संदेश संसार को दिया। संतों ने बताया कि यह तीन लोक का स्वामी काल पुरुष (काल निरंजन) है, जिसने अमर लोक के स्वामी परम पुरुष की अंश जीवात्माओं को उनकी इच्छा के विरुद्ध माया के शरीर में कैद करके रखा हुआ है। उन्होंने वेद शास्त्रों से परे परम पुरुष की भक्ति का संदेश आकर संसार को दिया। उन्होंने कहा कि हे जीवात्मा, यदि काल के कष्ट से बचना चाहता है तो सद्गुरु की शरण में आकर उनसे सार नाम को ग्रहण कर और उस देश में वापिस चल, जहाँ से तू आया है।

चल हंसा तू देश हमारे, सतगुरु देत पुकारा है।

सत्य तो केवल अमर लोक है, झूठा यह संसारा है॥



28) प्रश्न : क्या जीवों के कल्याण के लिए बहुत सारे संत एक साथ धरती पर अवतरित होते हैं?

उत्तर : नहीं। इसकी कोई ज़रूरत नहीं होती है। निरंजन को परम पुरुष ने इस संसार का राज्य दिया है। 17 असंख्य चौकड़ी युग का राज्य उसे मिला है। इसलिए सारे जीव एक साथ मुक्त नहीं करने हैं। बहुत सारे संतों का कोई मतलब नहीं है। संतों के झुंड संसार में जीवों के कल्याण के लिए नहीं आते। संसार खाली नहीं करना है। सिंह जंगल में अकेला ही काफी होता है। इस तरह एक संत ही सब जीवों को संसार-सागर से ले जाने के लिए काफी होता है। पर वो युक्ति-युक्ति से समझाकर अंकुरी जीवों को वहाँ ले जाता है। यह परख भक्त को करनी है। कई जन्मों के भक्त जीव उसकी कृपा के पात्र बन जाते हैं और संत सद्गुरु को पहचान जाते हैं या फिर संतजन स्वयं किसी पर प्रसन्न होकर कृपा कर देते हैं।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, कोई कोई जीव हमारा है॥



29) प्रश्न : संसार में कई पंथ, मत-मतान्तर हैं, जो संतों की शिक्षा पर चलते हैं। क्या वहाँ भी संत नहीं हैं?

उत्तर : आम आदमी भी कबीर साहिब की वाणियों को पढ़कर बोल सकता है और उनकी शिक्षा को प्रसारित कर सकता है। इसमें कोई बुरी बात भी नहीं है। पर देखना यह है कि क्या वो स्वयं वहाँ तक पहुँचा है या नहीं। वास्तव में निरंजन ने साहिब से विनती करके 12 पंथ उनके नाम पर चलाने के लिए कहा है। इसलिए चाहे कुछ कबीर साहिब की बात करते हैं, पर वो अन्दर से भक्ति जाने-अनजाने निरंजन की ही करते हैं, क्योंकि उनको पता नहीं है। यह सब निरंजन ने जीवों को भ्रमित करने के लिए माँगा ताकि कम-से-कम जीव अमर लोक जा पाएँ। जो सत्य भक्ति में आने का प्रयास करें, उनमें भी अधिकतर भ्रमित रहें।

साहिब या संत सद्गुरु चाहें तो सब जीवों को एक-साथ मुक्त करके ले चलें, पर इसमें से उन्हें नहीं ले जाना है, जो दुनिया को पसंद कर रहे हैं। निरंजन भी तो आखिर साहिब का ही बेटा है। निरंजन ने प्रश्न किया, कहा कि जो भी आपकी भक्ति में आ जाएगा, वो पार हो जाएगा। तो यह संसार खाली हो जाएगा। ले चलो फिर मुझे भी, खाली करो संसार और या फिर जीवों को उलझन में रखो। आपके 12 पंथ मैं भी चलाऊँ। साहिब ने उसकी बात मंजूर कर ली। इसलिए यह उलझाव है।

द्वादश पंथ काल परमाना। भूले जीव न पाय ठिकाना॥

निरंजन ने साहिब से कहा था कि आपके नाम से 12 पंथ चलाएगा पर अन्दर से नाम अपने वाला दूँगा। इसलिए आप देखें कि नाम कैसा है। काया वाला नाम है या सार नाम है। वाणी में आने वाला नाम है या विदेह नाम है।



30) प्रश्न : संतों की भीड़ में सच्चे संत सद्गुरु को कैसे पहचानें?

उत्तर : संतों के लक्षण साहिब ने कहे हैं। आप वो चेक करें। प्रथम, वो माया में रमा हुआ न हो। शादी विवाह से परे हो। हो सके तो बालब्रह्मचारी हो। पर यदि पहले गलती से गृहस्थ कर लिया हो तो बाद में ज्ञान हो जाने के बाद त्याग कर संसार के कल्याण के लिए लगा हुआ हो। यदि आप इन लक्षणों पर ध्यान देंगे तो आप सच्चे संत को पहचानने में भूल नहीं कर पायेंगे, क्योंकि इनमें से एक-एक लक्षण आपकी संत सद्गुरु के प्रति सोच को बहुत ऊपर ले जाएगा। खुद विचार करके देख लेना। जो परम पुरुष में समा चुका हो, जो परम पुरुष का रूप हो चुका हो, उसके लिए तो सब बच्चे ही हुए न! फिर शादी का सवाल ही खड़ा नहीं होता है। यदि फिर भी लगा है तो समझ लो कि माया में रमा हुआ है, वहाँ नहीं पहुँच पाया है। जो वहाँ पहुँचा, वो चाहकर भी माया में नहीं रमेगा। इसलिए आप शास्त्रों में पढ़ते भी हैं कि फलाने ऋषि ने बड़ा तप किया और बाद में काम के वशीभूत हो गया, क्रोध के वशीभूत हो गया। यह सब क्या था! यानी उसकी सीमा निरंजन तक थी। वो माया के घेरे को पार नहीं कर पाया था, परम पुरुष के पास नहीं पहुँच पाया था। जो वहाँ पहुँचा, उसे माया फिर लगती नहीं है। वो फिर जो नाम देगा, आपको भी माया से परे कर देगा। तो इस तरह दूसरा लक्षण है—सारग्राही। आप देखें कि क्या वो अपनी कमाई से खा रहा है या नहीं। यदि माँग कर खा रहा है या शिष्यों के पैसे से खा रहा है तो संत नहीं हो सकता है। फिर देखें कि ज्ञान है या नहीं। आपकी शंकाओं का निराकरण कर सकता है या नहीं। फिर देखें कि कहीं सांसारिक बंधनों में तो नहीं बँधा हुआ है। रिश्ते-नातों में जकड़ा तो नहीं है। नहीं तो उन्हीं के लिए कार्य करेगा और जाते समय गद्दी भी उन्हीं को देकर जाएगा, चाहे कुछ पता नहीं हो और आने वाले लोग उसको भी संत बनाकर पूजना शुरू कर देंगे। फिर देखें कि सत्य पर चल रहा है या नहीं। संतों के लिए सत्य से बढ़कर कुछ नहीं है। फिर कहीं पक्षपात तो नहीं कर रहा है। फिर देखें कि सही में परम-पुरुष में

मिला हुआ है या ऐसे ही पढ़-सुनकर परम-पुरुष की बात कर रहा है। क्योंकि वाणियाँ पढ़कर तो आप भी अपने बच्चों को बता सकते हैं कि एक परम-पुरुष है, जो अमर लोक में रहता है, जिसकी सब आत्माएँ संसार में निरंजन के जाल में फँसी हुई हैं।



31) प्रश्न : आप कहते हैं कि देवी-देवताओं को नहीं मानना है, उनकी भक्ति नहीं करनी है। यह तो उनकी निंदा हुई। ऐसा क्यों?

उत्तर : सबसे पहली बात यह है कि लोगों ने यहाँ देवताओं का अर्थ ही ग़लत लगाया हुआ है। जब मैं शुरू-शुरू में यहाँ आया तो देवताओं के मंदिर आदि कम थे। मैंने अपने लोगों से पूछा कि यहाँ तो देवताओं के मंदिर आदि भी कम हैं। ब्रह्मा, विष्णु और महेश देवता कहे जाते हैं। उनके मंदिर तो नहीं दिख रहे। फिर लोग ऐसा क्यों कहते हैं कि हम देवताओं की भक्ति मना कर रहे हैं। मेरे लोगों ने मुझे बताया कि यहाँ जो मर जाता है, कुछ देर तक उसकी हत्या मनाई जाती है और फिर बाद में वही देवता बन जाता है। मैंने कहा कि देवता तो ब्रह्मा, विष्णु, महेश को कहा जाता है। यानी लोग देवताओं की भक्ति भी नहीं कर रहे हैं।

चलो, कोई बात नहीं है। हम मूल प्रश्न की तरफ चलते हैं। चलो, सबसे पहले धर्म शास्त्रों को ही देख लेते हैं। ऋग्वेद को तो प्राचीनतम ग्रंथ माना जाता है और लोग मानते भी हैं। उसे देखें तो कह रहा है 'एको ब्रह्म दुतिया नास्ति'। यानी वो एकेश्वरवाद का संदेश दे रहा है। फिर गीता को भी लोग बहुत मानते हैं। वहाँ तो वासुदेव कृष्ण अर्जुन से साफ कह रहे हैं, हे अर्जुन, जो पितरों की भक्ति करता है, वो पितर लोक में चला जाता है, जो देवताओं की भक्ति करता है, वो देवलोक में चला जाता है और जो भूत-प्रेतों की भक्ति करता है, वो प्रेत योनि में चला जाता है। इसलिए तू ये सब भक्तियाँ न करके केवल मुझमें समा, केवल मेरी भक्ति कर। क्योंकि वासुदेव कृष्ण जी अर्जुन के गुरु थे। देखो,

वो तो साफ मना कर रहे हैं। फिर क्या वो निंदा कर रहे हैं? नहीं। आप किसी की भी भक्ति करें, ख़राब बात नहीं है। भक्ति कोई भी ख़राब नहीं है। हम किसी भी भक्ति को ख़राब नहीं बोल रहे हैं। किसी भी भक्ति की निंदा नहीं कर रहे हैं। जो भी जिसकी भी भक्ति करता है, उसमें उसके गुण आ जाते हैं, उसमें उसकी शक्तियाँ आ जाती हैं। पर भक्ति का मूल लक्ष्य आत्मा की मुक्ति है। आत्मा की मुक्ति की बात आती है तो सब एकमत से सहमत हैं—

गुरु बिन ज्ञान न उपजे, गुरु बिन मिटे न दोष।

गुरु बिन लखे न सत्य को, गुरु बिन मिले न मोक्ष॥

इसलिए तो वासुदेव अर्जुन को गुरुभक्ति के लिए कह रहे हैं। देखो, बाकी भक्तियाँ मना कर दीं। साफ मना कर दीं। निंदा नहीं की। यही बात हम बोल रहे हैं। निंदा कर ही नहीं रहे। अब बाकी भक्ति के लिए क्यों नहीं बोला? भक्ति में प्रेम और विश्वास दो चीज़ों की ज़रूरत है। जब भी प्रेम दो भागों में बँट जाएगा तो वो दूषित हो जाएगा। फिर उसमें विश्वास नहीं रह जाएगा। विश्वास के बिना प्रेम नहीं हो सकता है। जब विश्वास समाप्त हो गया तो प्रेम भी समाप्त हो गया। जब प्रेम समाप्त हो गया तो भक्ति खत्म हो गयी।

जैसे एक पत्नी कभी यह नहीं चाहती है कि उसका पति किसी दूसरी स्त्री के साथ प्रेम करे और कोई पति भी यह नहीं चाहता है कि उसकी पत्नी किसी दूसरे पुरुष के साथ प्रेम करे। इसी तरह परमात्मा भी यह नहीं चाहता है कि उसका भक्त उसे छोड़कर किसी अन्य की भक्ति करे। जब तक भक्त को अपने गुरु या ईश्वर पर पूर्ण विश्वास नहीं होगा, वह भक्त की कोटि में नहीं आ सकता है। उदाहरण के लिए यदि कोई भक्त कष्ट निवारण के लिए अपने गुरु या परमात्मा का भरोसा छोड़कर किसी अन्य इष्ट की उपासना करने लगता है तो वो अपने गुरु या परमात्मा (जिसकी भी वो भक्ति करता है) का अपमान ही करता है, क्योंकि ऐसा वो इसलिए करता है कि उसे अपने गुरु या परमात्मा पर पूर्ण

विश्वास नहीं है। उसके मन में गुरु या ईश्वर के प्रति कोई शंका है। वह अन्य किसी ईष्ट को अपने गुरु या परमात्मा से अधिक बलशाली समझता है। इसी तरह मोक्ष प्राप्ति के मार्ग में भी जब शिष्य अपने गुरु को छोड़कर दूसरे के पास जाता है तो वो ऐसा इसलिए करता है कि वो समझता है कि उसका गुरु उसे मुक्ति नहीं दिला सकता है। यदि उसका गुरु सच में उसे मुक्ति नहीं दिला सकता है, फिर तो ठीक है, पर यदि वो सर्वसमर्थ है तो फिर वो अपने गुरु का अपमान ही करता है।

...तो सवाल अन्यान्य भक्तियों का था। इस पर पलटू साहिब बड़ा अच्छा बोल रहे हैं—

बड़ा होय तेहि पूजिये संतन किया बिचार ॥
 संतन किया बिचार ज्ञान का दीपक लीन्हा।
 देवता तैंतीस कोट नज़र में सब को चीन्हा ॥
 सब का खण्डन किया खोजि के तीनि निकारा।
 तीनों में दुइ सही मुक्ति का एकै द्वारा ॥
 हरि को लिया निकारि बहुत तिन मंत्र बिचारा।
 हरि हैं गुन के बीच संत हैं गुन से न्यार।
 बड़ा होय तेहि पूजिये संतन किया विचार ॥

पलटू साहिब कह रहे हैं कि संतों ने विचार किया कि जो सबसे बड़ा है उसी की पूजा की जाए। ज्ञान रूपी दीपक साथ में लेकर वे सब जगह ढूँढ़ने लगे। उन्होंने 33 करोड़ देवताओं को देखा और उनमें से तीन (ब्रह्मा, विष्णु और महेश) को खोज कर निकाला। फिर तीन में भी विष्णु और शंकर जी सही लगे, पर मुक्ति का एक ही द्वार मिला, जिसमें हरि (विष्णु जी) को चुना। फिर उन्होंने ज्ञान रूपी दीपक से देखा कि हरि तो गुण (सतगुण, रजगुण और तमगुण) के बीच हैं, पर संत इन गुणों से भी परे हैं। अब फैसला भक्त करे कि पूजा किसकी की जाए! पलटू साहिब समझा रहे हैं कि पूजा तो उसी की होनी चाहिए, जो सबसे बड़ा है। यानी संतों से बड़ा इस ब्रह्माण्ड में कोई भी नहीं है।

तो कहने का भाव है कि गुरु भक्ति के लिए कहा जा रहा है, किसी की निंदा नहीं कर रहे हैं। अन्यान्य भक्तियों से क्या प्राप्त होगा, यह बता रहा हूँ। मोक्ष प्राप्ति के लिए परम पुरुष की भक्ति करनी होगी और उसका माध्यम सद्गुरु है। परम पुरुष को आपने नहीं देखा, इसलिए उसकी भक्ति नहीं कर सकोगे। देवी-देवताओं की भक्ति से देवी-देवताओं की भक्ति होगी, परम पुरुष की नहीं। पर सद्गुरु में वो प्रगट है। उसकी भक्ति से परम पुरुष की भक्ति हो जाएगी।

सत्पुरुष की आरसी, संतन की ही देह।

लखा जो चाहे अलख को, इन्हीं में लख लेह॥

यदि आप सद्गुरु को छोड़कर अन्यान्य भक्तियों में लगे हुए हैं तो यह आपकी भूल है।



32) प्रश्न : क्या मुक्ति ज़रूरी है?

उत्तर : आवश्यकता ही खोज की जननी है। यह संसार दुखों का घर है। यहाँ सब कैद में हैं। जो भी पराधीन है, वो सुखी नहीं हो सकता है। जन्म से ही यहाँ पर कष्ट हैं। 9 माह माँ के पेट में अत्यंत कष्ट बालक भोगता है। जठराग्नि है। फिर मल-मूत्र की थैलियों की गंदगी है। फिर संकरे मार्ग में फँसा है। यह 9 महीने कुंभी नरकों से भी अधिक कष्ट है। बाहर निकलने के लिए तड़पता रहता है। फिर जन्म लेने के साथ कष्टों की नयी कहानी शुरू हो जाती है। कभी कोई मार रहा है, कभी कोई। कभी शरीर के किसी अंग में कष्ट तो कभी किसी, कभी बीमार तो कभी उदासी, कभी चाहने वाली चीज़ न मिलने का दुख तो कभी पाई हुई वस्तु खो जाने का दुख। दुख-ही-दुख। अत्यंत दुख।

जोगी दुखिया जंगम दुखिया, तपसी को दुख दूना।

आशा तृष्णा सब घट व्यापत, कोई महल न सूना॥

फिर मौत का दुख। अत्यंत दुख। जीवन में जो-जो पाया, जिन-

जिन से प्रेम किया, सब एक-साथ मौत छुड़ा ले जाती है। असहनीय दुख। फिर कर्मानुसार नाना योनियों में जाने का दुख। कुत्ता बनना, चींटी बनना, प्रेत बनना, कौवा बनना, गंदी-गंदी योनियों में जाना। इनको सुख कौन समझ रहा है! ये दुख परमात्मा अपने अंश को थोड़ा दे सकता है। मतलब ही नहीं है। वो तो अपनी आत्माओं को छुड़ाने के लिए तत्पर है, पर जब संतजन आकर उसका संदेश देते हैं तो दुनिया समझती नहीं है, इसी संसार को सुखमय समझने लगती है।

मैं खींचत हूँ सतलोक को, यह बाँधा यमपुर जाय॥

यहाँ पर काल के बहुत कष्ट हैं। और इन कष्टों से आज्ञादी के लिए मुक्ति जरूरी है।



33) प्रश्न : मुक्ति कितने प्रकार की है? संतों ने किस मुक्ति की बात की है?

उत्तर : धर्म-ग्रंथों में चार प्रकार की मुक्ति अथवा स्वर्ग कहे गये हैं-सालोक्य, सामीप्य, सारूप्य और सायुज्य। सालोक्य यानी पितर लोक की प्राप्ति। सामीप्य यानी प्रभु के समीप वास यानी स्वर्ग-लोक की प्राप्ति। सारूप्य यानी प्रभु का रूप हो जाना यानी ब्रह्म लोक की प्राप्ति। सायुज्य यानी प्रभु में समा जाना यानी निराकार की प्राप्ति।

मुक्ति मुक्ति सब जगत बखाना। मुक्ति भेद न कोउ जाना॥

अब जो साकार भक्ति कर रहे हैं, वो पितर लोक और स्वर्ग लोक की प्राप्ति कर रहे हैं और कह रहे हैं कि मुक्ति मिल गयी। जो निराकार की भक्ति कर रहे हैं, वो ब्रह्म लोक और निराकार लोक की प्राप्ति करके कह रहे हैं कि मुक्ति मिल गयी। पर मुक्ति का भेद कोई नहीं समझा। मुक्ति का भेद संतों की वाणी में समझिए।

इनमें से किसी में भी मुक्ति नहीं मिली। यह तो बस थोड़ी देर के लिए संसार से निकलकर इन स्थानों पर जाना है और फिर कर्मों की

समाप्ति पर वापिस मृत्यु लोक में लौटना है। पर आत्मा की सही मुक्ति तब होगी, जब वो निरंजन के तीन लोको से छूटकर अमर लोक चली जाएगी, सदा-सदा के लिए निरंजन के दुखों से आजाद हो जाएगी और वापिस फिर कभी संसार-सागर में लौटना न होगा।

सगुण-भक्ति का मुद्दा सीमित है। यदि अमेरिका जाना है तो मेटाडोर या बस द्वारा नहीं जाया जा सकेगा। ठीक इसी तरह इस भक्ति से महानिर्वाण नहीं मिलता। जीव अपने कर्मों के अनुसार ही स्वर्ग आदि में जाते हैं और कर्मों के क्षीण होने पर पुनः मृत्यु-लोक में आ जाते हैं। फिर शुभ कर्मों के कारण अच्छे कुल में जन्म होता है। जैसे शुभ कर्म करके कोई स्वर्ग में गया, आनन्द में रहा, लेकिन फिर कर्मों के क्षीण होने पर मृत्यु-लोक में ऊँचे कुल में आया। इसके विपरीत यदि उसने पुनः खोटे कर्म कर दिये तो फिर चौरासी में जाएगा। जो रोगी, पीड़ित आदि हैं, वे चौरासी की धारा से मानव-तन में आए हैं जबकि जो ऊँचे कुल में अच्छे लोग हैं वे स्वर्ग से मानव-तन में आए हैं। लेकिन इतना तो तय है कि चाहे अच्छे कर्म करो, चाहे बुरे, इस भक्ति से अगर सोचो कि सच्ची मुक्ति मिल जाएगी तो यह नहीं हो पाएगा। थोड़ी देर के लिए ही छुट्टी मिलेगी।

जो अपने को भक्ति में ज़्यादा नहीं रमाना चाहते, वे सगुण-भक्ति ही करते हैं, लेकिन कुछ लोग थोड़ी गहराई में जाते हैं, वे निर्गुण-भक्ति अर्थात् योग, ध्यान आदि पर विशेष बल देते हैं। इनका स्तर थोड़ा ऊँचा है। वे पँच मुद्राओं को महत्व देते हैं, पर ये भी निराकार तक जाते हैं।

योगी, यति, जंगम, सेवड़ा, संन्यासी, वैरागी-ये षट्दर्शन कहलाते हैं। योगी वे हैं, जिनकी जटाएँ और दाढ़ी खुली होगी, हाथ में त्रिशूल होगा। जंगम मयूर मुकुट धारण किये रहते हैं, संन्यासी गेरुए वस्त्र धारण किये रहते हैं, दाढ़ी साफ़ होती है। वैरागी गले में माला डाले रखते हैं, दाढ़ी बढ़ी हुई होती है, बाल भी बढ़े हुए होते

हैं और हाथ में कमण्डल होता है। सेवड़े रुद्राक्ष की माला पहनते हैं और भभूत रमाते हैं।

निर्गुण-भक्ति में सारूप्य और सायुज्य दो मुक्तियाँ मिल जाती हैं। लाखों, करोड़ों साल तक जीव का पुनर्जन्म नहीं होता है, पर प्रलय के बाद जब सृष्टि बनती है तो निर्गुण भक्तों को भी बार-बार जन्म लेना पड़ जाता है। तभी तो साहिब ने सगुण और निर्गुण से परे, ऐसी सत्य-भक्ति की बात की, जिसमें जीव का पुनर्जन्म नहीं होता है। ये तीन लोक खत्म हो जायेंगे। कबीर साहिब ने तथा संतों ने एक ऐसे लोक की बात कही है, एक ऐसे अमर-लोक की, जहाँ प्रलय नहीं है। वह एक अनोखा देश है। यदि वास्तव में हमारे शास्त्र, हमारे बड़े-बड़े महात्मा, संत-पुरुष यह मानकर चल रहे हैं कि आत्मा अमर है तो इस आत्मा का देश भी ऐसा होना चाहिए, जहाँ प्रलय का निशान न हो। वो भी अमर होना चाहिए। तभी तो वह सत्य कहा जायेगा, क्योंकि 'सत्य सोही जो विनशे नाही।'।



34) प्रश्न : मन क्या है?

उत्तर : मन परम पुरुष का शब्द पुत्र है, जो बुरा बेटा निकला और उन्हीं की अंश आत्माओं को दुख देने वाला हुआ।



35) प्रश्न : माया क्या है?

उत्तर : माया ही आद्य-शक्ति है, जो परम पुरुष की शब्द पुत्री है। नाते से तो यह निरंजन की बहन है, पर निरंजन के डर से उसकी पत्नी बनकर उसके साथ रहती है। जीवों को उलझाने के लिए, अमर-लोक जाने से रोकने के लिए निरंजन की सहायता करती है, शरीर का रूप धारण करके उन्हें अपने में उलझाए हुए है।



36) प्रश्न : आत्मा क्या है?

उत्तर : आत्मा परम पुरुष की अंश है। उसी का तद्रूप है। उसे उत्पन्न नहीं किया गया है। जो भी उत्पन्न हुए, वो एक दिन समाप्त हो जायेंगे। पर आत्मा परम पुरुष की तरह कभी उत्पन्न नहीं हुई और न कभी खत्म होगी।



37) प्रश्न : क्या एक दिन सब समाप्त हो जाएगा? अगर कोई बचेगा तो कौन?

उत्तर : हाँ, एक दिन सब समाप्त हो जाएगा। ये सूर्य, ये चाँद, ये तारे भी एक दिन नहीं रहेंगे। ये स्वर्ग आदि लोक भी एक दिन नहीं रहेगा, ये ब्रह्मादि लोक भी एक दिन नहीं रहेगा, ये पारब्रह्म आदि निरंजन लोक भी एक दिन नहीं रहेगा। ये माया भी एक दिन नहीं रहेगी। ये निरंजन भी एक दिन नहीं रहेगा। पर वो एक रहेगा। वो न कभी बना है, न कभी मिटेगा। आदि सच युगादि सच है भी सच नानक हौंसी भी सच॥

वो कभी उत्पन्न नहीं हुआ। केवल वो रहेगा और ये आत्माएँ रहेंगी, जो उसी का रूप हैं।

कोई न रहे एक पुरुष लोक रहेगा।
 आवे जो वहाँ से सो खबर उसकी कहेगा॥
 ... जहाँ रात न दिन है व नहीं सूरज चन्दा।
 इस मंजिल नज़दीक नहीं काल का फंदा॥
 ... जिस लोक हमेशा को परमहंस पधारे।
 चल हंस अचल मोलियो मावाय हमारे॥



38) प्रश्न : परमात्मा को सबका मालिक कहते हैं, सब ब्रह्माण्डों का भी मालिक कहते हैं तो जिस दुनिया में हम रह रहे हैं, क्या वो परमात्मा के हाथ में नहीं है? यदि इसका मालिक परमात्मा नहीं है तो कौन है?

उत्तर : जिस दुनिया में हम रह रहे हैं, यही वो स्थान है, जो परम पुरुष

ने सेवा के वश होकर काल निरंजन को दिया है। यह राज्य उसे दे देने से अब परम पुरुष यहाँ हस्तक्षेप नहीं करते हैं। इसलिए यहाँ केवल काल पुरुष का हुकम चलता है।



39) प्रश्न : क्या हम सबका संचालन परमात्मा नहीं कर रहा है?

उत्तर : नहीं। हम सब निरंजन के हाथ में हैं, जिसने 204 युग तक कठिन तप करके परम पुरुष से 17 असंख्य चौकड़ी युग तक के लिए तीन लोक का राज्य पाया है। है तो वो परम पुरुष का ही पुत्र, पर कुपुत्र हो गया। जैसे आपका कोई पुत्र बहुत गलत हो जाए तो धरसे बे-दखल भी कर देते हो। इस तरह निरंजन को परम पुरुष ने उसके पाप कर्मों के कारण से अपने अमर लोक से निकाल दिया। पर तीन लोक के राज्य का वरदान वो पा चुका था और आत्माएँ भी। अब वो परम पुरुष की आत्माओं को कैद में रखकर कष्ट दे रहा है। जो पूरी दुनिया मुक्ति-मुक्ति की बात कर रही है, वो इसी निरंजन की कैद से मुक्त होने की बात है, पर अनजाने में इसी की भक्ति कर रही है। थोड़ा-सा विचार करने पर आप जान सकते हैं कि आप सच्चे परमात्मा के हाथ में नहीं हैं। यदि ऐसा होता तो इतने कष्ट क्यों मिलते! कोई अपने बच्चे को इतना कष्ट नहीं दे सकता है, जितना कि संसार के सब जीव भोग रहे हैं।



40) प्रश्न : क्या मरने के बाद सब एक जगह जाकर समाते हैं? यदि नहीं तो कौन कहाँ गया, कैसे पता चले?

उत्तर : नहीं, जो जिसकी भक्ति करता है, वो वहीं जाकर समाता है। मरने के बाद कौन कहाँ गया, यह हम दो तरह से जान सकते हैं। यह तो हम उसके क्रिया कलापों से जान सकते हैं कि कहाँ गया। यदि शुभ कर्म कर रहा था, किसी को कष्ट नहीं दे रहा था, किसी देवी या देवता की उपासना कर रहा था तो सीधा स्वर्ग में गया। यदि पितरों की भक्ति कर रहा था, उन्हें मना रहा था, शुभ कर्म कर रहा था तो पितर लोक में गया।

यदि गंदे काम कर रहा था, पाप कर्म कर रहा था तो सीधा नरक में गया। यदि योग कर रहा था, साधना कर रहा था, शुभ कर्म कर रहा था तो जिस मुद्रा से साधना कर रहा था, उसी के अनुरूप सीधा ब्रह्म लोक या निरंजन लोक में गया। यदि सद्गुरु से नाम की प्राप्ति किया था, सद्गुरु की भक्ति कर रहा था तो सीधा अमर लोक में गया।

फिर हरेक जाने वाला निशानी छोड़कर जाता है कि फलानी जगह जा रहा हूँ। इस पर साहिब कह रहे हैं—

मल द्वार से जीव निकासा। नरक खानि में पाए वासा॥

यदि मरने के समय प्राण गुदा स्थान से निकले तो जीवात्मा नरक में चली जाती है। यह है ही नरक का द्वार। उसकी पहचान होगी कि मृतक का मल बाहर आ जाएगा। फिर—

नाभि द्वार से जीव जब जाई। जलचर योनि में प्रगटाई॥

यदि मूत्र द्वार से प्राण निकले तो जीवात्मा जलचर योनि में जन्म लेती है। जैसे मछली, मेंढक, कछुआ आदि जल के जीव हैं, उनमें जाती है। ऐसे में मरने वाले का मूत्र बाहर आ जाता है। फिर—

मुख द्वार से जीव जब जाई। अन्न खानि में वासा पाई॥

यदि मुँह से प्राण निकल गये तो जीवात्मा अंडज खानि में चली जाती है। अनाज के कीड़े आदि बनती है। इसमें मरने वाले का मुख बहुत खुला रह जाता है। आगे—

स्वांस द्वार से जीव जब जाई। अंडज खानि में वासा पाई॥

स्वांस द्वार से प्राण निकलने पर जीवात्मा अंडज खानि में जन्म लेती है, पक्षी आदि बनती है। इसमें नासिका बाहर आ जाती है। आगे कह रहे हैं—

नेत्र द्वार से जीव कोई जाई। मक्खी आदि तन सो पाई॥

यदि नेत्र द्वार से प्राण निकले तो मक्खी, मच्छर आदि योनियों में जन्म लेती है। ऐसे में आँखें खुली रह जाती हैं। फिर—

श्रवण द्वार से जीव जब चाला। प्रेत देह पाय ततकाला॥

यदि कानों से प्राण चले गये तो प्रेत योनि में चला जाता है। ऐसे मृतक शरीर को देखकर भय लगेगा। फिर—

दशम द्वार से जीव जब जाई। स्वर्ग लोक में वासा पाई॥

यदि दसवें द्वार से प्राण निकल गये तो स्वर्ग में चला जाएगा। ऐसे मरने वाले का मुँह प्रसन्न चित्त दिखाई देता है। फिर साहिब कह रहे हैं—

रंभ द्वार से जीव जब जाई। अमर लोक में वासा पाई॥

रंभ कहते हैं 11वें को। यदि ग्यारहवें द्वार से प्राण निकल गये तो सदा-सदा के लिए भवसागर से छूटकर परम पुरुष के देश अमरलोक में चली जाती है और फिर जन्म नहीं होता। ऐसे मृतक शरीर को देखकर लगेगा कि मानो सोया हुआ है और अभी उठ पड़ेगा। शांत लगेगा।



41) प्रश्न : 10वाँ द्वार कहाँ पर है और कैसे खुलता है?

उत्तर : 10वाँ द्वार किसी स्थान पर स्थित नहीं है। यह एक अवस्था है। यदि यह किसी एक खास स्थान पर स्थित होता तो वैज्ञानिक कभी का बता देते और अपने छोटे-छोटे यंत्रों की सहायता से खोल भी देते। पर ऐसा है नहीं। सुषुप्ति, स्वप्न और जाग्रत तीनों अवस्थाओं को सीज करके वो अवस्था बनती है। जाग्रत में कर्मज्ञानेन्द्रियाँ काम कर रही हैं, स्थूल काम कर रहा है। पवन के द्वारा सब काम हो रहा है।

पवन के द्वारा सब काम हो रहा है। यह पवन नाभि में आ रही है। वायु कहाँ से ले रहे हैं? वायुमंडल में वायु है। इस चेतन अवस्था का आधार भी स्वांस है। सोए हैं, तो भी स्वांस ले रहे हैं। इसका मतलब है कि स्वांसा से निकलना होगा। जो भी स्वांसा ले रहे हैं, नाभि में आ रही है। इड़ा-पिंगला के द्वारा आदमी स्वांसा ले रहा है। यह स्वांसा नाभि में आती है। जब भी इड़ा-पिंगला से स्वांसा लेंगे तो खुद-ब-खुद नाभि में आयेगी। पानी स्वाभाविक ढलान की तरफ जायेगा। इसी तरह स्वांसा नाभिदल में आयेगी। यहाँ से फिर 10 रूपों में बदलती है। यही इंद्रियों

को चेतन करती है। स्वांसा से जाग्रत अवस्था है। यह विभिन्न स्थानों में फैलकर अलग-अलग कार्य कर रही है। सारे काम इसी से हो रहे हैं। सुनना है, वायु का कमाल है। चलना है, वायु से हो रहा है। बल लगाना है, वायु से ही है।

वायुमंडल से वायु ले रहे हैं। इसी से शरीर चेतन हो रहा है। वायु की सप्लाई बंद करने के लिए इड़ा-पिंगला को बंद करके सुषुम्ना को खोल देते हैं, तब पूरा सिस्टम सीज हो जाता है, शरीर काम नहीं करता है। पूरे शरीर से वायुओं को उठा लेते हैं। ये दसों वायुएँ समेट लेते हैं और फिर अंग-प्रतिअंग जो काम कर रहे हैं, वो पूरे रुक जाते हैं। इसे शून्य-समाधि भी कहते हैं। इस अवस्था में साधक जाता है। पर यह मामूली बात नहीं है। इसके लिए इस जाग्रत अवस्था के होश से बाहर निकलना पड़ेगा। जब तक यह होश है, तुरीया नहीं बन सकती है। इसमें इड़ा को पिंगला में लय कर देते हैं।

वायु नीचे न पहुँचे, सीधा ऊपर की तरफ चले।

उलटा जाप जपा जब जाना। बाल्मीकि भये ब्रह्म समाना॥

यह उलटा जाप है। नाभि के बदले ऊपर की तरफ स्वांस को उर्द्धमुखी करना है। इसमें एकाग्रता की ज़रूरत पड़ेगी। इस तरह इड़ा को पिंगला में लय करना है। मन वहाँ पर पूरी रुकावट देगा। एकाग्रता रखनी होगी। क्योंकि सुरति से ही स्वांसा को पलटना है।

गुरु के बताए तरीके से स्वांसा, वायु एक करता रहे। यह आसान नहीं है। शरीर एकदम खाली नहीं होता है। आदत बन चुकी है स्वांसा की नाभि में आने की। खा-पी रहे हैं तो भी स्वांसा चल रही है। पर एकाग्रता से ध्यान करेंगे तो स्वांसा ऊपर की ओर चलने लगेगी। मन चलाकी से आपकी एकाग्रता को भंग करता है। तब स्वांसा खुद-ब-खुद नाभि में दुबारा आ जाती है। वो ध्यान को हटा देता है। याद दिला देगा कि फ़लाने ने कुछ कहा था। वो जाग्रत से बाहर नहीं जाने देता है। इस तरह से उसने

10वां द्वार मूँदा हुआ है।

सुष्मन मध्ये बसे निरंजन, मूँदा दसवां द्वारा।

उसके ऊपर मकरतार है, चढ़ो सम्हार सम्हारा॥

इस अवस्था में पहुँचना है।

गफलत नहीं तहाँ सदा होशियार देखना॥

ऐसा हो कि—

टकटकी चंद और चकोर की लागी रहे॥

ध्यान हट गया तो शरीर चेतन हो जायेगा। आपने 10-15 मिनट कार्यवाही की, एक मिनट के लिए ध्यान हटा तो सब बेकार हो जायेगा।

तहाँ सिलहली गैल, चढ़ूँ तो गिर गिर पड़ूँ॥

मीराबाई कह रही है—

सूली ऊपर सेज पिया की, किस विधि मिलना होय॥

मन बड़ा होशियार है। वही बातें याद दिलायेगा, जिनसे आपको टैंशन हो। मन की कार्यवाही चलती रहती है। इतनी चालाकी से वो खींचकर ले जाता है। वहाँ मन को साधक समझने लगता है। बड़ा शातिर है। जैसे आगे जायेंगे तो आत्मा का अनुभव होने लगेगा। वो आपको आत्मा का ज्ञान नहीं होने देना चाहता है। इस तरह तुरीया में मन नहीं जाने देगा। वो सावधान है। अन्तर-जगत में घुसने नहीं देना चाहता है। इसलिए कोई-न-कोई चीज़ याद दिलाकर घुमायेगा। पूरी दुनिया अज्ञान के नशे में घूम रही है।

मन चीहने कोई बिरला जोगी॥

स्वांसा का स्वाभाविक फ्लू नाभि में है। सुरति से घुमाना होता है। और मन का वास भी सुषुम्ना में है। जैसे गेट पर ही संतरी रहता है, ऐसे ही 24 घंटे मन वहाँ बैठा है। निकलने नहीं दे रहा है। स्वांसा से ही आत्मा शरीर बनी है, स्वांसा से ही निकलना होगा।

मरते मरते जग मुआ, मरन न जाना कोय।

ऐसी मरना न मुआ, बहुरि न मरना होय॥

गुरु नानक देव भी कह रहे हैं—

जीवत मरिए, भवजल तरिए॥

पलटू साहिब भी कह रहे हैं—

पलटू पहले मर रहा, पाछे मुआ जगत॥

इस तरह साधक निकलना चाहता है तो मन कहता है कि इसी में रहो। यह अवस्था एक नशा है। इसलिए इसी में भटकाना चाहता है ताकि जीवात्मा भ्रमित रहे।

...आप एकाग्र रहे तो सप्लाइ बंद हो जायेगी। तब शून्य हो जायेगा। इसमें एकाग्रता चाहिए। एकाग्रता से कुछ भी मुश्किल नहीं है। साधक धीरे-धीरे एकाग्र होता जाता है तो स्वांसा सिमटती जाती है। पूरा शरीर खाली हो जायेगा। शरीर स्वांसा से ही चेतन है। स्वांसा में तापमान है। इसलिए जब प्राण निकल गये तो शरीर भी ठंडा हो जाता है।

मन वहाँ होशियार बैठा है। वो आन्तरिक दुनिया में नहीं जाने देता। आप चेतन हों, यह मन नहीं चाहता है। इसी ने तो उलझाया है।

वो बड़ा होशियार है। बड़ी सावधानी से निकाल ले जायेगा। पता न चलने देगा। स्वांसा फिर नाभि में लाना चाहता है। फिर कुछ नहीं मिलना है। उस अवस्था में ही नहीं गये तो मिलना क्या है! वहाँ तो इस अवस्था से बाहर निकलना है।

स्वांसा और सुरति एक जगह हो जाएँ। पूरा शरीर सीज होता जायेगा। बड़ा भय लगेगा। पहली अवस्था में लगेगा कि हाथ नहीं हिल रहे हैं। लगेगा कि मर रहा हूँ। मन चालाकी से कहेगा कि मर रहे हो। बंदा सोचता है कि सही में मर रहा हूँ, रहने दो, कल देख लेंगे।

यह सहज नहीं है।

शीश उतारे भुईं धरे, तापर राखे पाँव।

कहैं कबीर धर्मदास से, ऐसा होय तो आव॥

एक मौत की अवस्था से निकलना पड़ता है।

मृतक होय के पावे संता ॥
आदि पवन इक जीव है भाई ॥

अब आदि पवन में हो जाता है। यह पवन ऐसी नहीं है। तब शून्य में पहुँच जाता है। इस एकाग्रता की पूर्ण पलटी हो जाती है। तो 10वां द्वार खुलता है।

42) प्रश्न : 11वाँ द्वार कहाँ पर है और कैसे खुलता है?

उत्तर : 11वां द्वार सुरति के अन्दर है और यह किसी योग, यज्ञ, तप आदि से नहीं खुल सकता है, क्योंकि योग आदि से हमारे शरीर की कोशिकाएँ जाग सकती हैं, खुद आत्मा नहीं। इसलिए यह काम केवल पूर्ण सद्गुरु करता है। नाम दान के समय सुरति को मन से निकालकर जगा देता है। वहीं कार्य सरल कर देता है।



43) प्रश्न : यदि योग, यज्ञ, तप, साधना आदि से अमर लोक में नहीं जा सकते हैं तो जो हमारे ऋषि मुनि आदि जो हजारों-हजारों साल योग, तप, साधना आदि किए, वो कहाँ गये? क्या उनकी मुक्ति नहीं हुई?

उत्तर : अमर लोक का दाता केवल सद्गुरु है। जो हमारे ऋषि, मुनि आदि हुए, वो निरंजन की सीमा तक ही जा सके, क्योंकि इन सब चीजों की पहुँच ही निरंजन तक की है।

जाय निरंजन माहिं समावे । आगे का कोई भेद न पावे ॥



44) प्रश्न : आपके लोग आपको कबीर साहिब जी का अवतार मानते हैं? प्रूफ करो?

उत्तर : शिष्य को चाहिए कि वो अपने गुरु को परमात्मा का रूप माने। मैंने कभी नहीं कहा कि मैं ही साहिब हूँ या मैं ही सब कुछ कर रहा हूँ। मैंने अपने लिए कभी नहीं कहा। मैंने तो साहिब के लिए ही कहा। जब-जब कोई अपनी समस्या लेकर आता है तो मैं यही कहता हूँ कि साहिब पर विश्वास रखो। मैंने कभी नहीं कहा कि मुझपर विश्वास रखो, तुम्हारा

काम कर दूँगा। अगर मेरे शिष्य विश्वास कर रहे हैं तो यह उनकी श्रद्धा है, उनका अधिकार है। कबीर साहिब ने भविष्य के लिए अपनी वाणी में कहा है कि वे कलयुग में पुनः अवतरित होंगे और पंथ चलाकर बहुत जीवों को तारेंगे।

**जम्बू द्वीप थान बैठाई। देही पान तब पंथ चलाई॥
कोटि वाणी तिन्ह हम कह दीन्हा। जगत जीव कहँ निर्मल कीन्हा॥**

कबीर साहिब की शिक्षा को पूर्ण रूप से यहाँ कोई जानता नहीं है, कोई समझता नहीं है। एक संत ही संत की बात समझ सकता है। मेरी वाणी में आप प्रमाण के तौर पर कबीर साहिब के उदाहरण ही अधिकतर पायेंगे। मैंने कबीर साहिब की शिक्षा, उनके संदेश को बेहतरीन तरीके से समझाया। तो मेरे शिष्य इस आधार पर यह विश्वास बनाए हुए हैं। न तो मुझे अपने मुख से अपनी बढ़ाई करनी है और न शिष्यों का विश्वास तोड़ना है। यह आप पर है कि आप क्या सोचते हैं।



45) प्रश्न : सबसे बड़ा कार्य दुनिया में क्या है?

उत्तर : दुनिया में सबसे बड़ा कार्य आत्म-साक्षात्कार है।



46) प्रश्न : आत्म-साक्षात्कार क्या है?

उत्तर : मन से आत्मा को अलग देखना ही आत्म-साक्षात्कार है। मन से पूरे रिश्ते-नाते हैं, मन से पूरी दुनिया है। दुनिया में जो कुछ मनुष्य कर रहा है, सब झूठ है, क्योंकि सबकी प्रेरणा मन दे रहा है। मन ने अपनी शक्ति से अपना गुण आत्मा पर लगा दिया है। मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार मन के रूप हैं। इन्हीं में आत्मा को उलझा रहा है। मन से पल-पल इच्छाएँ हो रही हैं, बुद्धि से पल-पल फैसले हो रहे हैं, चित्त से पल-पल अनचाहे अगली-पिछली घटनाएँ, बातें याद आ रही हैं, अहंकार से मनुष्य पल-पल क्रियाएँ कर रहा है। मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार से परे होकर शुद्ध चेतन सत्ता को जानना आत्म-साक्षात्कार है।



47) प्रश्न : निरंजन में इतनी ताकत कहाँ से आई कि परम पुरुष की अंश इतनी शक्तिशाली आत्मा को कैद करके रखा है?

उत्तर : निरंजन ने 204 युग तक परम पुरुष का ध्यान किया है। इससे बड़ा तपस्वी कोई भी नहीं है। यह बहुत ताकतवर है। यदि परम पुरुष ने इसे ध्यान न कर पाने का शाप न दिया होता तो यह और प्रबल हो जाता और आत्माओं को और अधिक कष्ट देता।

लेकिन यह परम पुरुष का शब्द पुत्र है और आत्मा परम पुरुष की अंश है। आत्मा को पकड़ पाने की ताकत किसी में भी नहीं है। आत्मा को कोई कैद नहीं कर सकता है। न मन में, न माया में इतनी ताकत है कि इसे कैद कर सके। इस आत्मा को कोई नहीं पकड़ सकता है। यह खुद माया को पकड़े हुए है। मन ने इसे चालाकी से माया में उलझा रखा है। इसी की ताकत से इसी को बंधन में डाले हुए है।



48) प्रश्न : क्या प्रलय भी निरंजन करता है?

उत्तर : हाँ, यह सब काम निरंजन के हैं। परम पुरुष के नहीं हैं। बार-बार झूठे संसार की उत्पत्ति करने फिर-फिर उसका नाश करना निरंजन का काम है। संसार में जितनी भी प्रलय होती हैं, लघु प्रलय से लेकर महाप्रलय तक सब काम निरंजन के हैं। कई-कई लोग एक साथ मारे जाते हैं। कुछ लोग सोचते हैं कि भगवान ने मुक्ति दे दी। नहीं, जो सबको मारे जा रहा है, वो किसी को मुक्ति नहीं देना चाहता है। वो तो बस बार-बार मारकर जीवों को नित्यप्रति खा रहा है और बार-बार उन्हें उत्पन्न कर रहा है।



49) प्रश्न : महाप्रलय कैसे होती है?

उत्तर : धरती का नष्ट होना प्रलय कहलाती है, पर सूर्य, चन्द्रमा, तारे

आदि नष्ट नहीं होते हैं। जल-ही-जल रहता है। पर जब महाप्रलय आती है तो केवल धरती नष्ट नहीं होती। ऐसे में सब ग्रह-नक्षत्र एक दूसरे के आस-पास आ जायेंगे, कभी-कभी रात के 12 बजे सूर्य निकल आयेगा, ग्रह-नक्षत्र उल्टे घूमना शुरू हो जायेंगे, सब ग्रह नियन्त्रण से बाहर हो जायेंगे। नियन्त्रण खो बैठने के कारण बड़े-बड़े ग्रह आपस में टकराना शुरू हो जायेंगे। लाखों किलोमीटर की स्पीड से घूम रहे ग्रह जब आपस में टकरायेंगे तो सौरमण्डल में बड़े जबरदस्त धमाके होंगे। पृथ्वी बड़े झटके खायेगी, जिससे 100 कि०मी० ऊपर तक पानी की लहरें उठेंगी; जल-ही-जल हो जायेगा। पृथ्वी को जल खत्म कर देगा। यह जल से ही बनी है, जल में ही लय हो जायेगी। फिर जल को सूर्य खत्म कर देगा। सूर्य को हवा बुझा देगी। दीया फूँक मारने से बुझ जाता है। इसी सिद्धांत से सूर्य नष्ट होगा। इसके बाद हवा को आकाश अपने में विलोम कर लेगा। मकान नष्ट हो तो मलवा रह जाता है, पर दुनिया नष्ट होती है तो एक सूई भी बाकी नहीं रहती। अब निराकार रह जाता है, वो दुबारा सृजन कर सकता है। यही है निराकार भगवान। वेद भी इसी की बात कर रहा है।



50) प्रश्न : महाप्रलय के बाद क्या होता है?

उत्तर : जब-जब निरंजन महाप्रलय करता है, तब-तब पूरे ब्रह्माण्ड का नाश होता है, तब-तब सब ग्रह नक्षत्र आदि को अपने में समा लेता है। स्वर्ग लोक, पितर लोक आदि कुछ भी नहीं रह जाता है। तब सारी आत्माओं को भी अपने साथ लेता है और उन्हें लेकर अमर लोक के पास जाता है। अन्दर नहीं जा सकता है, इसलिए बाहर से ही पुकार करता है कि सारी आत्माएँ वापिस लो, मुझे नहीं बनानी है सृष्टि। वहाँ से आवाज़ आती है कि हे निरंजन, जाओ, दोबारा सृष्टि करो। तुमने वरदान पाया है, अब फिर बनाओ। इस तरह वो महाप्रलय करने के बाद फिर-फिर सृष्टि उत्पन्न करता है। जब दुबारा सृजन होता है तो निराकार से पवन

पैदा होती है। पवन से अग्नि, अग्नि से जल और फिर जल से पृथ्वी का सृजन होता है। जिस तरह विनाश होता है, उसी तरह फिर उत्पत्ति होती है।



51) प्रश्न : अगर परम पुरुष की सब आत्माएँ निष्पाप हैं तो फिर दुखों की नगरी में दुखदायी शरीर में किस अपराध से फेंका गया है?

उत्तर : सेवा के वश होकर काल निरंजन के माँगने पर परम पुरुष ने आत्माएँ दी तो हैं, पर बहुत सुरक्षित करके दिया है। काल पुरुष आत्मा को कुछ नुकसान नहीं पहुँचा सकता है। शरीर में डालने की आज्ञा परम पुरुष ने नहीं दी थी। यह निरंजन ने परम पुरुष का शब्द काटकर अपराध किया है, जिसका फल निरंजन भोग रहा है। जो कष्ट और दुख होता है, वो निरंजन को मिलता है, आत्मा को नहीं।



52) प्रश्न : यदि परम पुरुष के उस अमर लोक में शरीर भी नहीं हैं, पाँच तत्व भी नहीं हैं तो गुरु या सद्गुरु भी तो नहीं होना न? फिर वो सत्य कैसे है? फिर उसका ध्यान करना कहाँ तक उचित है?

उत्तर : यह सच है कि उस अमर लोक में पाँच तत्व नहीं हैं और इसी कारण पाँच तत्वों का शरीर भी नहीं है, गुरु भी नहीं है, शिष्य भी नहीं है। पर यहाँ यह बात नहीं बोलनी है। जज के सामने अपराधी जाता है तो निम्न होकर जाता है कि कहीं सजा न ठोक दे। सद्गुरु के आगे निम्न रहना है, क्योंकि निरंजन की जेल से सतगुरु ही बाहर लेकर जाएगा। सद्गुरु का यह शारीरिक रूप वहाँ नहीं होगा पर परम पुरुष में मिलकर उसी का रूप होकर वो इसी शरीर में बैठकर हमें समझा रहा है, इसलिए परम पुरुष से भी बड़ा मानकर उसे पूजना है। जहाँ तक ध्यान करने का प्रश्न है, वो आँखों का ध्यान करने को कहा है। ध्यान करते करते आँखों का ध्यान करना है। जाग्रत में उस तत्व का वास आँखों में है। इसलिए यह ध्यान भौतिक नहीं है। यह परम तत्व का ध्यान हुआ। इसलिए तो बंदगी भी आँखों की कही गयी। दर्शन तभी हुए, जब नज़र मिली।

परम पुरुष की इच्छा से परम पुरुष का रूप होकर वो आत्माओं को परम पुरुष के पास ले जाने के लिए आया है। आप उसके सत्य रूप से परिचित नहीं हैं, शरीर रूप ही सामने है, इसलिए यह रहस्य समझ नहीं पाते हैं।



53) प्रश्न : सद्गुरु सपने में आएँ तो क्या वह सच होता है या सपना?

उत्तर : सद्गुरु साहिब सपने में नहीं आते। यदि वह सपने में दिखें तो समझना कि वो सच था।



54) प्रश्न : जो अकस्मात् मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं, क्या वो दुष्टात्माओं का रूप धारण कर लेते हैं?

उत्तर : नहीं, जो अकस्मात् मृत्यु को प्राप्त होते हैं, वो दुष्टात्माएँ नहीं बनतीं। वो मरने के बाद भी वैसे ही रहते हैं, जैसे जीते-जी थे। अगर जीते जी शैतान थे तो वहाँ भी वैसे ही होंगे। जो महान थे, वो वैसे ही रहेंगे। उस समय शरीर नहीं मिलता है तो वो उसी तरह रहते हैं, जैसे जीते जी थे।



55) प्रश्न : मानव तन कब मिलता है? और क्यों?

उत्तर : 84 लाख योनियों को काटने के बाद मानव तन मिलता है। 84 लाख योनियों में यह आत्मा घूम रही है। 84 लाख योनियों को 4 खानि में बाँटा है। कुछ जीव पानी के अन्दर रहते हैं। वो जलचर जीव हैं। कुछ ज़मीन के अन्दर रहते हैं। वो उकमज जीव हैं। हर खानि को काटने में 75 लाख साल लगते हैं। 84 लाख को पूरा करने में 3 करोड़ साल लगते हैं। यानी इतने लंबे समय के बाद तब जाकर कहीं मानव तन मिलता है। यह एक अवसर मिलता है छूटने का। 84 लाख में किसी भी योनि में आत्मा को, मुक्ति नहीं मिल सकती है। मानव तन में यह अवसर है।



56) प्रश्न : चार खानियों में आत्मा को क्यों फेंका गया?

उत्तर : मानव तन में पाँच तत्व हैं। इसमें चेतनता सबसे अधिक है। इंसान

बड़ी लंबी बातें भी याद रख लेता है। यह ज्ञान का शरीर है। यदि लगातार मानव तन मिलता तो इसे पिछले जन्म याद रहते और फिर संसार को दुखमय समझकर मुक्ति की प्राप्ति के लिए लग जाता। चार खानियों में घूमने से यह याद भूल जाती है। अन्यान्य योनियों में ज्ञान नहीं है। इसलिए वहाँ फेंका गया।



57) प्रश्न : आत्मा का देश सतलोक कैसा है?

उत्तर : वो सतलोक चूकि स्वयं परम पुरुष है, इसलिए कहने-सुनने से परे है वो देश।

मरहमी होय सो जाने संतो, ऐसा देश हमारा है।

अवधू बेगम देश हमारा है ॥

वेद कितेब पार नहीं पावत, कहन सुनन से न्यारा है ॥

उसका वर्णन वाणी का विषय नहीं है। वो तीन लोक से बहुत न्यारा देश है।

संतो, सो निज देश हमारा।

जहाँ जाय फिर हंस न आवै, भवसागर की धारा ॥

सूर्य चंद्र तहाँ नहीं प्रकाशत, नहीं नभ मंडल तारा।

उदय न अस्त दिवस न रजनी, बिना ज्योति उजियारा ॥

पाँच तत्व गुण तीन तहाँ नहिं, नहीं तहाँ सृष्टि पसारा।

तहाँ न माया कृत प्रपंच यह, लोग कुटुम परिवारा ॥

क्षुधा तृषा नहिं शीत उष्ण तहाँ, सुख दुख को संचारा।

आधिन व्याधि उपाधि न कछु तहाँ, पाप पुण्य विस्तारा ॥

ऊँच नीच कुल की मर्यादा, आश्रम वरण विचारा।

धर्म अधर्म तहाँ कछु नाहीं, संयम नियम अचारा ॥

अति अभिराम धाम सर्वोपरि, शोभा अगम अपारा।

कहहिं कबीर सुनो भाई साधो, तीन लोक से न्यारा ॥

चाँद और सूर्य का प्रकाश भी वहाँ नहीं है। तारे भी नहीं हैं, दिन और रात का खेल भी वहाँ पर नहीं है। पाँच तत्व भी वहाँ पर नहीं है। ये सब नहीं हैं वहाँ। कुटुम्ब-परिवार आदि का झमेला भी नहीं है। फिर भूख-प्यास, सर्दी-गर्मी, सुख-दुख आदि भी नहीं है। वहाँ कष्ट और बीमारियाँ भी नहीं हैं। यह सब तो शरीर से संबंधित है। वहाँ शरीर ही नहीं है तो बीमारियाँ कैसी! फिर ऊँच-नीच, आश्रम, वरण आदि का झमेला भी नहीं है। धर्म-अधर्म भी नहीं है। वो धाम सबसे सुंदर है। उसकी शोभा का वर्णन नहीं किया जा सकता है। वो इस नीरस लोक से बहुत न्यारा है।

पिंड ब्रह्माण्ड को तहाँ न लेखा। लोकालोक तहँवा नहीं देखा॥
आदि पुरुष तहँवा अस्थाना। यह चरित्र एको नहीं जाना॥

उस देश में हमारा परम पुरुष (सच्चा परमात्मा) रहता है। उस परम पुरुष को संसार के लोग नहीं जानते हैं।



58) प्रश्न : वो परम पुरुष कैसा है, क्या इसका कोई इशारा मिल सकता है?

उत्तर : उसका वर्णन वाणी से परे है। जिसने उसके दर्शन किये, वो भी उसका वर्णन नहीं कर सकता है। वो प्रकाश में समाहित होकर परम पुरुष कहलाता है। तब जाकर वो जाना जाता है। फिर भी साहिब ने स्वयं दुनिया को समझाने मात्र के लिए एक इशारा दिया है। वो कह रहे हैं—
प्रथम पुरुष को रूप बखानो। सो तुम रूप हृदय में आनो॥
पुर्ष अंग छवि वर्ण सुनाई। गुप्त भेद मैं तोहि लखाई॥
पुरुष शोभा अगम अपारा। ताको मैं अब बरणो पारा॥
कोटि अनन्त योजन लौ काया। कहाँ लग कहों तासु की छाया॥

चूँकि वर्णन नहीं किया जा सकता है, इसलिए केवल सांसारिक भाव में समझाने के लिए कह रहे हैं ऐसा मान लो कि अनन्त कोटि योजन

तक उसकी काया है। अनन्त करोड़ योजन। अनन्त यानी जिसकी कोई गिनती नहीं है। किसी सीमा में बँधा नहीं है।

कछु संक्षेप मैं देऊँ बताई। कहाँ कहीं कछु वर्ण न जाई॥
कोटि कल्प युग जाय सिराई। मुख अनन्त से वर्णि न जाई॥

कह रहे हैं कि अनन्त मुखों से करोड़ों कल्पों तक बोलते रहने पर भी उसका वर्णन नहीं कर सकूँगा, इसलिए केवल संक्षेप में बताता हूँ।
ये कछू सूक्ष्म रूप लखाऊँ। कछु कछु शोभा वर्णि सुनाऊँ॥
अब मस्तक को वर्णों भेषा। मानो अनन्त भानु शशि लेखा॥
जगर मगर मस्तक उजियारा। वर्णत बने न रूप अपारा॥

सांसारिक भाव में समझाते हुए कह रहे हैं कि मान लो कि उसका सूक्ष्म मस्तक है। वो ऐसा है कि मानो अनन्त सूर्य और चंद्रमा हों। वो इतना प्रकाशित है कि वर्णन करके भी वर्णन नहीं किया जा सकता है। सूर्य से बढ़कर संसार में कोई उपमा नहीं है, इसलिए ऐसा मानकर चलो।

अब नेत्रन को कहीं प्रमाना। मानो अनन्त भान शशि जाना॥
जिमि कोटिन दामिन लपटानी। जोत अनन्त की जिमि खानी॥
वर्णत बने न ताको रंगा। कहाँ लग कहीं तासु प्रसंगा॥

मान लो कि उसके नेत्र हैं और वो ऐसे हैं जैसे अनन्त सूर्य और चंद्रमा हों। मानो करोड़ों बिजलियाँ लिपट गयी हों। यह सब वर्णन संभव नहीं है।

नासारूप कहीं प्रचंडा। मानो अज्र अनन्त ब्रह्मंडा॥
पोहप बास तहाँ ते प्रकटाई। घ्राण अनन्त योजन लग जाई॥

फिर मानो नासिका है और वो मानो अनन्त ब्रह्माण्ड हों और वहाँ से निकल रही महक योजन तक फैल रही है।

श्रवण रूप मैं कहैं बखानी। अनन्त सिंध मानो समानी॥
ता मह कमल अनन्तन फूला। साखा पत्र डार नहिं मूला॥
ताको शोभा वर्णि न जाई। कमल रूप तहाँ अधिक सुहाई॥

मानो उसके सूक्ष्म कान हैं जो मानो अनन्त समुद्र समाए हुए हों और उसमें अनन्त कमल बिना शाखा, पत्र, डाल और जड़ के खिले हुए हैं। उनकी शोभा वर्णन से परे है। यह सब मानकर चलना है अन्यथा न समझाया जा सकता है और न बताने का प्रयास ही किया जा सकता है। अब मुख शोभा कहों बखानी। पिंड ब्रह्माण्ड तेहि माहि समानी॥ नौ शून्य जहाँ लग बासा। सो मुख भीतर कीन्ह निवासा॥ लोक अनन्त देखिये ताही। सर्वाकार रूप है जाही॥

अब मान लो कि सूक्ष्म मुख है। नौ शून्य का जहाँ तक वास है, वो सब उसके मुख में दिख रहे हैं।

पुरुष रूप का वर्णों भाई। वर्णत बने न होय दिठाई॥ पुरुष शोभा अगम अपारा। मुख अनन्त नहीं पावे पारा॥

परम पुरुष के रूप का वर्णन करते नहीं बनता। यह तो एक ढिठाई ही है। उसकी शोभा अथाह है, वाणी से परे है, अनन्त मुखों से भी नहीं कही जा सकती है।

चिकुर शोभा कहों बुझाई। कोटि रवि शशि रोम लजाई॥ कोटिन चंदा सूर प्रकाशा। एक एक रोम अनन्तन भासा॥

इस तरह उसके बाल मानो तो उसके बालों की शोभा का क्या कहना। एक रोम करोड़ों सूर्य और चंद्रमा को लजा देने वाला है।

पुरुष अंग का करो बखाना। रचना कोटि तासु मों जाना॥ श्वेत अकार पुरुष को अंगा। फटकवर्ण देही को रंगा॥ शब्द स्वरूप पुरुष है भाई। वर्णों कहा वर्ण नहिं जाई॥

करोड़ों रचनाएँ उसकी काया में समायी हुई जानो। उसकी देही श्वेत और पारदर्शी है। वहाँ संसार वाली कोई बात नहीं है। सांसारिक भाव में वो साहिब शब्द और प्रकाश रूप है। वास्तव में न संसार वाला शब्द है और न प्रकाश। उसका वर्णन नहीं किया जा सकता है।

जहाँ लग जीव बुंद है भाई। ताको भेद कहों समुझाई॥ जीव अनन्त बुंद सम जानो। अमी सिंधु पुरुष पहिचानो॥

अनन्त आत्माओं को बिंदुओं के समान जानो और उस परम पुरुष को अमृत के विशाल समुद्र के समान। यही उसका भेद है।

वास्तव में यह वर्णन मानो पर आधारित है। क्योंकि वो गुप्त प्रभु अद्भुत है और सांसारिकता से परे अद्भुत श्वेत प्रकाश के माध्यम से प्रगट हुआ है।



59) प्रश्न : संत सद्गुरु की शरण में कौन पहुँच पाता है?

उत्तर : कई जन्मों तक पुण्य कर्म करने के फलस्वरूप ऐसा होता है। तब जीव का मुक्ति का समय आता है, उसका नम्बर लगता है और वो सद्गुरु की शरण में पहुँचता है। या फिर ऐसा भी हो जाता है कि संतजन स्वयं कृपा कर देते हैं। संत जन साहिब के दरबार में कर्ता पुरुष हैं। स्वयं साहिब भी उनके हुकुम में चलते हैं। संतजन जो चाहें कर सकते हैं, जिसपर चाहें, कृपा करके आपने देश ले जा सकते हैं।



60) प्रश्न : गुरु दर्शन का क्या महात्म है?

उत्तर : संत सद्गुरु के पास आध्यात्मिक शक्तियों का खजाना है, जिसकी हमारी आत्मा को नितान्तर आवश्यकता है। संत-सद्गुरु की कृपा के बिना इस खजाने को प्राप्त नहीं किया जा सकता।

जब हम संत-सद्गुरुओं के पास जाते हैं तो तीन तरह से यह आध्यात्मिक ऊर्जा हमें प्राप्त होती है। सबसे पहले जब गुरुजनों की दृष्टि हम पर पड़ती है तो वह आध्यात्मिक ऊर्जा हमारे अन्दर आती है। इसलिए हम गुरुजनों के पास जाकर कहते हैं कि कृपा की दृष्टि रखना। फिर दूसरे वाणी द्वारा ये शक्तियाँ हम तक पहुँचती हैं। इसलिए सत्संग का बड़ा महत्व है। 'धन्य घड़ी जब हो सत्संगा'। इसी तरह तीसरे यह उर्जा हमें स्पर्श द्वारा भी मिलती है। कहीं भी स्पर्श करके यह उर्जा ली जा सकती है, पर अदब के लिए केवल पाँव छूना ही नियम बना दिया गया।

इसी कारण से गुरु-दर्शन का इतना महत्त्व है। जब भी गुरु-जन हमारे निकट हों तो हमें उनका दर्शन करते रहना चाहिए। इसलिए साहिब कह रहे हैं-

कई बार न होइ सके, दोय वक्त कर लेइ।

सद्गुरु दर्शन के किये, काल दगा नहि देइ॥

कह रहे हैं कि दिन में ज्यादा बार नहीं हो सके तो दो बार ही कर लो। इससे काल का जोर नहीं चल सकेगा। लेकिन यदि इतना भी सम्भव न हो सके तो इस पर साहिब कह रहे हैं-

दोय वक्त न हो सके, दिन में करै इक बार।

सद्गुरु दर्शन के किये, उतरे भवजल पार॥

कह रहे हैं कि फिर दिन में एक बार ही कर लो, संसार-सागर से पार हो जाओगे। जैसे हम एक दिन खाना नहीं खाएँ तो हमारा शरीर कमजोर होने लगता है, शरीर की क्षमता थोड़ी कम हो जाती है, क्योंकि रोटी से ही तो शरीर को उर्जा मिलती है, पर यदि दूसरे दिन भी भोजन मिल जाए तो वो कमी पूरी हो जाती है। तभी तो साहिब आगे कह रहे हैं-

एक दिना न करि सके, दूजे दिन करि लेहि।

सद्गुरु दर्शन के किये, पावे उत्तम देही॥

पर यदि ऐसा भी सम्भव न हो सके यानी यदि गुरुजन बहुत दूर हैं, तो फिर साहिब उसका भी विकल्प दे रहे हैं-

दूजे दिन न कर सके, चौथे दिन कर जाय।

सद्गुरु दर्शन के किये, मोक्ष मुक्ति फल पाय॥

कह रहे हैं कि फिर चौथे दिन ही करो, मोक्ष के अधिकारी बन जाओगे। यदि तीन दिन रोटी नहीं मिली, कमजोरी तो आ गयी, पर चौथे दिन भी मिल गयी तो वो कमी पूरी हो सकती है। इसी तरह मन तो मोटा होता जाएगा, पर फिर उर्जा मिलते ही वापिस

अपनी जगह आ जाएगा। आत्मा के ऊपर मन-माया का जो आवरण पड़ा हुआ है, उसे हटाने के लिए हमें आध्यात्मिक उर्जा की सख्त ज़रूरत है, इसलिए हमें समय-समय पर गुरु-दर्शन करके यह उर्जा लेते रहनी चाहिए। लेकिन यदि कहीं गुरुजन और दूर हों, इतना भी सम्भव न हो सके, तो फिर! साहिब इसका भी विकल्प दे रहे हैं—

चौथे दिन नहिं कर सके, वार-वार करु जाय।

यामें विलम्ब न कीजिये, कहैं कबीर समुझाय ॥

अब यहाँ साहिब सतर्क कर रहे हैं। कह रहे हैं कि यदि चौथे दिन भी सम्भव न हो सके तो सप्ताह में, हफ्ते में एक बार गुरु-दर्शन अवश्य करो। इसमें विलम्ब न हो, देरी न हो। नहीं तो आत्मा कुंद होती जाएगी और मन का जोर बढ़ता जाएगा, मन आत्मा पर हावी होता जाएगा। आध्यात्मिक उर्जा से ही आत्मा के ऊपर से मन-माया का आवरण हटता है, इसलिए हमें जल्दी-2 गुरु-दर्शन करने चाहिए। जितनी वार हो सके, उतनी बार करने चाहिए। गुरु-दर्शन में बहुत सारी बाधाएँ भी आयेंगी, पर हमें उन बाधाओं के होते हुए भी रुकना नहीं है। साहिब कह रहे हैं—

माता पिता सुत स्त्री, बन्धु कुटुम्ब को जान।

गुरु दर्शन को जब चले, ये अटकावे आन ॥

उनका अटका ना रहे, गुरु दर्शन को जाय।

कहै कबीर सो सन्त जन, मोक्ष मुक्ति फल पाय ॥

ये सब गुरु-दर्शन में रुकावट डालेंगे, पर तुम नहीं रुकना, क्योंकि तुम्हें वो उर्जा लेनी ही लेनी है।

जैसे वृक्ष अपनी उर्जा ज़मीन से लेते हैं; पूरी शक्ति ज़मीन से लेने के बाद भी एक उर्जा की ज़रूरत उन्हें पड़ती है और वो है सूर्य की। उसके बिना वृक्ष पोषित नहीं हो सकता। इसी तरह अपनी शक्ति से योगिक क्रियाओं द्वारा मनुष्य कितनी ही शक्तियाँ

क्यों न प्राप्त कर ले, इस भवसागर से पार नहीं हो सकता। इसके लिए सद्गुरु के द्वारा प्राप्त होने वाली आध्यात्मिक उर्जा की नितान्त जरूरत है।

संत गुरु ने जो 'नाम' दिया, वो मूल आध्यात्मिक उर्जा थी। उसके बिना जीव संसार-सागर से पार नहीं हो सकता। गुरु के दर्शन से यह उर्जा बढ़ती जाती है। ध्यान करने पर भी यह उर्जा हमें मिल सकती है, पर यदि गुरुजन साक्षात् सामने हों तो यह उर्जा अधिक प्राप्त होती है। ध्यान तो दर्शन न कर पाने के विकल्प के रूप में किया जाता है। ध्यान में भी तो हम गुरुजनों की मूर्त को चित्त में बिठाने का प्रयास करते हैं और यह उर्जा प्राप्त करते हैं। पर यदि गुरुजन सामने हों तो सीधे यह उर्जा हमें मिल जाती है। इसलिए शास्त्रानुसार यदि गुरुजन सामने हों तो हमें उनके समक्ष आँखें बंद नहीं करनी चाहिए, क्योंकि तब हमें सीधे-सीधे यह उर्जा मिल रही होती है, उस समय ध्यान की कोई आवश्यकता नहीं।

..... इसलिए गुरु-दर्शन के महत्त्व को समझाते हुए साहिब आगे कह रहे हैं—

वार-वार न करि सके , पक्षे पक्ष करे सोय।

कहै कबीर ता दास का, जन्म सुफल ही होय॥

कह रहे हैं कि यदि हफ्ते में एक बार भी सम्भव न हो सके तो फिर 15-15 दिन में ही कर लो, जीवन सफल हो जायेगा। पर किसी कारणवश इतना भी सम्भव नहीं हो पाता है। कई परेशानियों, दुनिया के झंझटों में मनुष्य उलझा रहता है। तो फिर.....! फिर उसके लिए भी साहिब आगे बोल रहे हैं।

पक्षे पक्ष न करि सके , मास-मास करु जाय।

यामें देर न लाइये, कहैं कबीर समुझाय॥

कह रहे हैं कि फिर महीने में एक बार जरूर कर लो।

साहिब सतर्क करते हुए समझा रहे हैं कि महीने में एक दिन तो गुरु के दर्शन को पहुँचना ही पहुँचना है। कमी तो आ जाएगी, मन का जोर भी बढ़ जायेगा, पर फिर भी यदि महीने में एक बार भी गुरु का दर्शन कर लिया तो वो उर्जा मिलते ही कमी पूरी होनी शुरू हो जायेगी।

जिन परिस्थितियों में हम गुरु का दर्शन नहीं कर पाते हैं, उन परिस्थितियों में हमें गुरु का ध्यान करना चाहिए। सम्भव हो सके तो गुरु का दर्शन करना चाहिए, पर यदि ऐसा सम्भव न हो सके तो फिर उसका विकल्प है—‘ध्यान’। पर दर्शन तो फिर भी करने ही करने हैं। अगर कुछ भक्त-जन, जो गुरु से बहुत दूर हों, किराये के पैसे भी न जुटा पाते हों तो उनकी मजबूरी को समझते हुए साहिब कह रहे हैं—

मास-मास ना करि सके , छठे मास अलबत्त।

या में ढील न कीजिये , कहै कबीर अविगत्त ॥

फिर छह महीने में एक बार कर लो, पर इसमें ढील न बरतना। क्योंकि यदि इसमें ढील बरती तो वो उर्जा कम हो जायेगी, जिससे आत्मा कुंद हो जायेगी। फिर गलतियाँ भी होने लग जायेंगी। लेकिन कुछ भक्त-जन, जो गुरु से इतनी ज्यादा दूर हों कि छठे महीने में पहुँचना भी जिनके लिए सम्भव न हो सके तो केवल उनके लिए अंतिम विकल्प देते हुए साहिब कह रहे हैं—

छठे मास न करि सके , बरस दिना करि लेहि।

कहै कबीर सो सन्त जन , यमहिं चुनौती देहि ॥

कह रहे हैं कि ऐसे भक्त-जन, जो छठे मास में भी गुरु-दर्शन को न पहुँच सकें, वे बरस में एक बार जरूर गुरु का दर्शन करें। ऐसे भक्त-जन भी यम को चुनौती दे सकते हैं अर्थात् उनका आवागमन भी मिट सकता है।

लेकिन यदि कोई ऐसा भी न कर सके यानी वर्ष में एक बार भी गुरु-दर्शन को न पहुँचे तो उस अभागे के लिए साहिब के पास भी कोई विकल्प नहीं है—

बरस बरस न करि सके, ताको लागे दोष।

कहै कबीर वा जीव सो, कबहुँ न पावे मोक्ष॥



61) प्रश्न : क्या जीवों को कष्ट देने वाले निरंजन का भी कभी नाश होगा और सारे जीव सदा के लिए मुक्त हो पायेंगे?

उत्तर : हाँ, निरंजन का भी एक दिन नाश हो जाएगा। पर इसमें बहुत समय लगेगा। क्योंकि परम पुरुष ने निरंजन को 17 असंख्य चौकड़ी युगों का राज्य दिया है। जब तक यह समय पूरा नहीं हो जाता, तब तक निरंजन रहेगा।

47 लाख साल के 4 युग होते हैं। 4 युग हो गये तो एक चौकड़ी युग हुआ। 100 बार चार युग हुए तो 100 चौकड़ी युग हुए। 100 के बाद हजार, फिर दस हजार, फिर लाख, फिर दस लाख, फिर करोड़, फिर दस करोड़, अरब, 10 अरब, फिर खरब, फिर नील, दस नील, पदम, दस पदम, संख्य, 10 संख्य, असंख्य, 10 असंख्य, फिर अनन्त।

4 असंख्य चौकड़ी युग हो चुके हैं। यानी अरबों बार सृष्टि का नाश हो चुका है और अरबों बार होना बाकी है। तब जाकर निरंजन का नम्बर लगेगा।



62) प्रश्न : क्या परम पुरुष निरंजन को अपने लोक में स्थान देकर स्थूल सृष्टि की रचना को नहीं रोक सकते?

उत्तर : नहीं, निरंजन को यह शाप है कि अमर लोक कभी नहीं आ

सकता है और 17 असंख्य चौकड़ी युग तक राज्य करेगा ही करेगा। परम पुरुष का शब्द है, कट नहीं सकता है।

यह प्रयास तो निरंजन स्वयं करता है। पूरे ब्रह्माण्ड का नाश करके सब जीवों को लेकर अमर लोक के पास जाता है, परम पुरुष को पुकार करता है कि अपनी आत्माएँ वापिस लो, मैं ऊब चुका हूँ। ये सभी आत्माएँ ले लो, मुझे सृष्टि नहीं करनी है। साहिब कहते हैं कि नहीं, तुमने 17 चौकड़ी असंख्य युग का राज्य माँगा है और मैंने स्वीकृति दी है, शब्द दिया है। जाओ, फिर सृष्टि की रचना करो। इतना राज्य करना ही है।



63) प्रश्न : जब निरंजन के राज्य करने की अवधि समाप्त हो जाएगी, जीवों को कष्ट देने वाले निरंजन का अंत हो जाएगा, तब क्या परम पुरुष दोबारा किसी निरंजन को उत्पन्न करेंगे?

उत्तर : नहीं, ऐसा नहीं होगा। जो बना है, वो अवश्य मिटेगा। करोड़ों बार महाप्रलय हो चुकी है, जिसमें सबकुछ मिटाकर फिर बनाया जा चुका है, पर निरंजन महाप्रलय में भी रहता है। यही पुनः सृष्टि करता है। पर एक समय ऐसा आएगा जब अनन्त प्रलय होगी और तब निरंजन भी मिट जाएगा। फिर परम पुरुष दोबारा जीवों को कष्ट देने वाले निरंजन को उत्पन्न नहीं करेंगे।



64) प्रश्न : परम पुरुष ने माया क्यों बनाई?

उत्तर : पहले परम पुरुष अकेले थे। जब उनका सकल पसार किया, मन को उत्पन्न किया तो मनसा घट में आई। सांसारिक भाव में जैसे कुछ गंदगी पड़ जाए तो उसे साफ करते हैं, पर फिर भी थोड़ा अंश रह जाता है। ऐसे ही परम पुरुष ने उस मनसा रूपी अंश को अपने अंदर से निकाला। वो ही स्त्री रूप में प्रगट हुई। उसी माया ने सारे संसार को जन्म दिया।



65) प्रश्न : क्या परम पुरुष को नहीं पता था कि निरंजन ऐसा निकलेगा? यदि पता था तो क्यों बनाया उसे?

उत्तर : जैसे एक माता-पिता के 4-5 बच्चे हों तो सब एक जैसे नहीं निकलते, ऐसा ही हुआ। परम पुरुष ने अपने अमर लोक की शोभा बढ़ाने के लिए शब्दों से पुत्र उत्पन्न किए। पर निरंजन बुरा बेटा निकला और आत्माओं के लिए दुखदायी साबित हुआ। परम पुरुष जब शब्दों से पुत्र उत्पन्न कर रहे थे तो उन्होंने अपने जैसा एक उत्पन्न करने की इच्छा से तीव्रता से शब्द पुकारा। उनके जैसा संभव नहीं था। वो कभी बने नहीं हैं। जो बनाया गया, वो नष्ट होगा। आत्मा के अलावा सब बनाया गया है और सब नष्ट हो जाएगा। जब वो पुत्र उत्पन्न हुआ परम पुरुष यह जानने के लिए कि यह मेरे जैसा है या नहीं, उसके भीतर समाए। एक क्षण के लिए उन्हें शंका आई कि यह तो मेरा शरीर नहीं है और उसी पल वहाँ से निकलकर अपने में आए। यहीं सारी गड़बड़ हो गयी। यदि उन्हें मालूम होता कि निरंजन ऐसा निकलेगा तो नहीं बनाते।



66) प्रश्न : परम पुरुष ने अपनी अंश आत्माएँ निरंजन को क्यों दीं? क्या इसका यह मतलब है कि उन्होंने ही हमें जानबूझकर कष्ट भरे संसार में फेंका?

उत्तर : 204 युग तक निरंजन ने परम पुरुष का ध्यान किया तो सेवा से प्रसन्न होकर उसे वर माँगने को कहा। निरंजन ने वर के रूप में अमर लोक देने को कहा या अलग एक राज्य देने को कहा। तब परम पुरुष ने उसे शून्य में तीन लोक का राज्य दिया। पर राज्य किस पर करता, इसलिए उसने परम पुरुष से उनकी अंश आत्माओं को माँग लिया। सेवा से अधीन परम पुरुष ने उसकी बात मान ली और आद्य शक्ति को उत्पन्न करके उसे अनन्त आत्माएँ देते हुए हिदायत दी कि निरंजन के साथ मिलकर सत्य सृष्टि करना। आत्माओं को माया के पिंजरे में कैद करने के लिए हरगिज्ञ नहीं कहा। पर निरंजन ने छल किया। माया के साथ मिलकर आत्माओं को माया के पिंजरे में डाल दिया और परम पुरुष की

स्मृति भुला दी और किसी भी जीव को अमर लोक वापिस नहीं जाने दिया। यदि निरंजन आत्माओं को माया के पिंजरे में नहीं डालता तो आत्माएँ जब चाहे अमर लोक में चली जातीं और उन्हें कोई कष्ट नहीं होता। माया के पिंजरे में आ जाने से ही सारे कष्ट शुरू हुए, जिसमें परम पुरुष का कोई हाथ नहीं था। यह निरंजन का छल था। बुरा बेटा होने से उसने सारे काम बुरे ही किए।



67) प्रश्न : क्या परम-पुरुष को नहीं पता था कि जीवों को निरंजन तंग करेगा। फिर आत्माएँ क्यों दीं?

उत्तर : परम पुरुष ने आत्माओं को इतना सुरक्षित करके दिया है कि निरंजन इसका कुछ नहीं बिगाड़ सकता है।



68) प्रश्न : निरंजन को एक लाख जीव निगलने का शाप देना आत्मा को सज़ा नहीं हुई क्या?

उत्तर : नहीं, यह तो मन को सज़ा है। आत्मा का कुछ नहीं होता है। वो सुरक्षित है।



69) निरंजन और आद्य शक्ति की शरीर संरचना क्या वीर्य सृष्टि के लिए ही थी?

उत्तर : नहीं, ऐसा बिलकुल नहीं था। निरंजन की शरीर संरचना परम पुरुष ने इस विचार से नहीं की थी। और आद्य शक्ति को गर्भ द्वार था ही नहीं। निरंजन ने नख से छिद्र करके यह कार्य किया और परम पुरुष की आज्ञा का उल्लंघन करते हुए रति क्रिया करके पहले त्रिदेव की उत्पत्ति की और फिर सबने मिलकर माया सृष्टि की रचना कर डाली।



70) प्रश्न : निरंजन तो बुरा बेटा था, पर आद्य शक्ति ने परम पुरुष की अंश आत्माओं को माया जाल में फँसाने के लिए निरंजन की सहायता क्यों की?

उत्तर : आद्य शक्ति की ज़्यादा ग़लती नहीं थी, क्योंकि वो ऐसा नहीं करना चाह रही थी, पर निरंजन ने उसे भयभीत करके ऐसा करने के लिए विवश किया। वो निरंजन की कैद में आ चुकी थी। निरंजन ने बलपूर्वक उसे अपने पास रख लिया और कहा कि तुम भी अब अमर लोक नहीं जा सकती हो, इसलिए अच्छा यही है कि मेरे साथ मिलकर माया सृष्टि की रचना करो, जीवों को भ्रम में डालो ताकि वो भी अमर लोक नहीं जा सकें और मैं उनपर राज्य कर सकूँ। आद्य शक्ति राज़ी हो गयी। उसने ऐसा ही काम किया जैसे लड़की जब तक माता पिता के घर होती है, तब तक उनकी बड़ी सेवा करती है, पर जब पति के घर चली जाती है तो वहीं जाकर रम जाती है, पिता के घर को भूल जाती है। ऐसे ही आद्य शक्ति ने परम पुरुष को भुलाकर, उनकी आज्ञा को मेटकर मायावी शरीरों का सृजन कर डाला।



71) प्रश्न : प्रेतात्मा आत्मा में प्रवेश ले लेती है तो आत्मा विस्मृत हो जाती है। इसका मतलब है कि आत्मा में कुछ डाला जा सकता है, कुछ निकाला जा सकता है। यदि ऐसा नहीं है तो प्रेतात्मा कैसे आती हैं?

उत्तर : आत्मा के अन्दर कुछ भी प्रविष्ट नहीं किया जा सकता है। न्यूनाधिक नहीं होती। न ही इसमें से कुछ निकाल सकते हैं। आत्मा में प्रेतात्मा अन्दर प्रवेश ही नहीं ले सकती है। जैसे आदमी शराब पीता है तो उसका नशा उसके दिमाग पर आता है। दिमाग पर पड़ा तो पैर डगमगाने लगते हैं। आत्मा नहीं डगमगाई। देही डगमगाई। इस तरह प्रेतात्माओं की बाधा का प्रभाव हमारी आत्मा पर न पड़कर के हमारे अंतःकरण पर, हमारे व्यक्तित्व पर पड़ता है। हमारी आत्मा प्रेतात्माओं

के प्रभाव से कतई दूर है। प्रेतात्माएँ तो क्या, मृत्यु भी इसे कुछ नहीं कर सकती है।



72) प्रश्न : यदि इंसान देही मुक्ति का एक अवसर दिया गया तो निरंजन ने यह अवसर दिया ही क्यों?

उत्तर : यह निरंजन की मजबूरी थी। इंसानी तौर पर सोचें कि यदि आपको राजा बना दिया जाए तो किस पर राज्य करना चाहेंगे? जानवरों पर, पक्षियों पर या इंसानों पर। आप अपने जैसे इंसानों पर राज्य करना चाहेंगे और अपने आगे काम करने के लिए पहले बड़े-बड़े बुद्धिमान लोगों को चुनेंगे। बस, निरंजन ने भी ऐसा ही किया है। उसने इंसान को अपनी शक्ल का बनाया। इसलिए मनुष्य तन को नारायणी चोला कहा गया है। यदि इंसान नहीं बनाता तो क्या कुत्ते, बिल्लियों पर राज्य करता! बाकी योनियों के मुकाबले इसमें चेतना अधिक है। फिर जैसे आपके अधूरे कार्य को आपके बच्चे पूरा करते हैं, निरंजन ने अपने कार्य के लिए मनुष्य को बनाया। संसार को किसी ने सजाया तो मनुष्य ने। कहीं बाग-बगीचे लगाए, कहीं सुंदर-सुंदर भुवन बनाए, बाँध बनाए, महल बनाए, पहाड़ों को काट-काट कर सड़के बनाई, उन्हें सुंदर रूप दिया। यह काम शेर, कुत्ते, गधे नहीं कर सकते थे। इसलिए मनुष्य को बनाना पड़ा, जो यह काम करने के काबिल था। इंसान में पाँचों तत्व दिये, जो उसके पास थे और इतनी चेतना दी कि उसके कार्य को अंजाम दे सके। यह स्वयं सबके अन्दर बैठकर जहाँ चाहे घुमाता है। है तो यह सबके अन्दर, पर पशु-पक्षियों से यह वो काम नहीं करवा सकता, जो इंसान से करवा सकता है।



73) प्रश्न : निरंजन ने सिर्फ इंसान देही ही क्यों नहीं बनाई? बाकी जीव क्यों बनाए?

उत्तर : अब सिर्फ इंसान को ही क्यों नहीं बनाया? यदि ऐसा करता तो

फिर गड़बड़ हो जानी थी। ऐसे में बार-बार इंसान का जन्म ही मिलना था और चेतना अधिक होने से पिछले जन्म याद रहने थे। इसलिए बाकी योनियों में घुमा घुमाकर भुला दिया जाता है कि पहले भी कभी इंसान थे और जीवन बेकार में गँवा दिया था, सच्चे लक्ष्य मुक्ति को प्राप्त नहीं कर सके थे। ऐसे में मनुष्य ने शुरू से ही मुक्ति की प्राप्ति के लिए लग जाना था और निरंजन का काम अधूरा रह जाना था। इंसान जीवन के अंतिम क्षणों में पहुँचकर बहुत ज्ञानवान हो जाता है। उसे जीवन के बड़े अनुभव मिल जाते हैं, उसे यह भी ज्ञान हो जाता है कि मुक्ति कितनी जरूरी है। बार-बार मनुष्य जन्म होने से कई जन्मों का अनुभव हो जाता और फिर सब उदासीन होकर अपने कल्याण के लिए लग जाते।



74) प्रश्न : मनुष्य जो इतने भगवानों की भक्ति कर रहा है, क्या सच में इतने भगवान हैं?

उत्तर : नहीं, यह मनुष्य के स्वार्थ से बने हैं। अपने स्वार्थ के लिए मनुष्य ने कई भगवान बनाए हैं और आगे कई और बनाएगा।



75) प्रश्न : बुद्धि क्या है? क्या इससे परमात्मा की प्राप्ति कर सकते हैं?

उत्तर : नहीं, यह मन का रूप है। जितने भी संकल्प हैं, उनका संचालन बुद्धि करती है? मन की उर्जा बुद्धि में समा जाती है। मन ही बुद्धि रूप में आपको भ्रमित करता है। जैसे ब्रेन की कोशिकाएँ मूवमेंट करती है। यदि बाईं तरफ डाइवर्ट हुई तो लेफ्ट हैंडर हो जाता है और यदि दाईं तरफ हुई तो राइट हैंडर हो जाता है। जिसके मस्तिष्क की कोशिकाएँ गर्दन से चलकर बाईं तरफ मुड़ जाती हैं, वो स्वाभाविक लेफ्ट हैंडर हो जाता है। उसकी पूरी उर्जा उस तरफ आ जाती है। यह स्वाभाविक हो जाता है। इस तरह जब मन संकल्प करता है तो उसकी उर्जा मन रूप में होती है।

जब मन बुद्धि रूप में आता है तो अपनी ताकत को डाइवर्ट करके बुद्धि में प्रविष्ट कर देता है। जब मन संकल्प करता है तो इसे मन कहते हैं। जब यह निश्चय या फैसला करता है तो इसे बुद्धि कहते हैं। इसका मतलब है कि बुद्धि से जितने भी फैसले लिए जाते हैं, वो हमारे लिए रुकावट है, पक्का है। बुद्धि से हम निर्णय करते हैं कि इस काम में हित है, इस काम में अहित है। इन सबकी प्रेरणा बुद्धि देती है। बुद्धि एक बहुत बड़ा नेट है, जाल है। यह मन का बहुत बड़ा जाल है।

अब मन ने ही तो आत्मा को संसार सागर में फँसाया हुआ है, कैद करके रखा हुआ है और बुद्धि रूप में वही है। तो फिर बात साफ है कि बुद्धि से हम परमात्मा की प्राप्ति नहीं कर पायेंगे।



76) प्रश्न : इस संसार में अन्याय क्यों है?

उत्तर : क्योंकि यह सत्य प्रभु का संसार नहीं है। यह निरंजन का संसार है। यहाँ न्याय की आशा मत रखना। साहिब बड़ा प्यारा कह रहे हैं—

धन्य निरंजन तेरा दरबार, जहाँ तनिक नहीं न्याय विचार।

रंग महल में बसें मसखरे, पास तेरे सरदार ॥

.... धन्य निरंजन तेरा दरबार ॥

यहाँ का आलम यह है कि—

कर्म करावत आपही, कष्ट देत पुनि जीव को ॥

सब कर्म निरंजन स्वयं ही जीव के अन्दर बैठकर उसका दिमाग घुमाकर करवाता है। बार-बार परेशान करके मजबूर करता है कि ऐसा कर। फिर बाद में वही कार्य करने पर उसे अनुचित कर्म ठहराकर सज़ा देता है। कभी पुण्य कर्म करते हैं तो वो पाप बन जाता है। जैसे हर देश का अलग कानून है, ऐसे ही निरंजन के अपने कानून हैं। छल और कपट का बादशाह होने के कारण उसके देश में उन्हीं की जय है। छल से ही निरंजन ने परम पुरुष की सब आत्माओं को उनसे माँग लिया था। छल

से ही उसने बलपूर्वक आद्य-शक्ति को भी अपने साथ रख लिया और बहन का रिश्ता होते हुए भी अपनी पत्नी बनाकर रखा। छल से ही उसने आत्माओं को माया के पिंजड़े में कैद करके उन्हें अमरलोक जाने से रोक लिया है। यहाँ छल-कपट का बोलबाला है। छल-कपट करके मनुष्य बहुत ऊपर उठ जाता है जबकि ईमानदार को जिंदगी भर दो वक्त की रोटी के लिए कठिन मेहनत करनी पड़ती है। झूठे महात्मा के पीछे पूरी दुनिया लग जाती है जबकि सच्चे महात्मा की निंदा की जाती है, उसकी बात दुनिया आसानी से समझती नहीं है। दुनिया को सच्ची भक्ति समझाने के लिए सच्चे संत को बड़ी कठिन मेहनत करनी पड़ती है।

साधारणतः तो पाप और पुण्य के अनुसार ही जीवात्मा को नरक और स्वर्ग में भेजा जाता है और यहां उसे पिछले जन्मों का हिसाब देना पड़ता है। पर चूंकि वो संसार का राजा है, यह उसकी मर्जी है, चाहे तो रंक को राजा बना दे और चाहे तो राजा को भिखारी। कहने का मतलब है कि यहाँ न्याय की उम्मीद न रखना। इस संसार का आधार ही झूठ है, छल है, कपट है, पाप है।



77) प्रश्न : क्या स्त्री माया है?

उत्तर : नहीं, स्त्री माया नहीं है। जैसे पुरुष के लिए स्त्री बंधनकारक है, इसी तरह स्त्री के लिए पुरुष भी बंधनकारक है। माया यह शरीर है। स्त्री तो एक वर्ण है।



78) प्रश्न : मनुष्यतन को देवता लोग क्यों पाना चाहते हैं?

उत्तर : क्योंकि मनुष्य योनि के अलावा जितनी भी योनियाँ हैं, सब केवल भोग योनियाँ हैं। वहाँ अपने कर्मों का फल भोगा जा रहा है। कोई नवीन कर्म नहीं है। देवतन भी शुभ कर्मों के फलस्वरूप सुख भोगने के लिए मिला है जबकि मनुष्यतन में आकर जीव पिछले जन्म के कर्मों का फल तो भोगता ही है, साथ ही वो नवीन कर्म करने के लिए आज़ाद है। वो चाहे

तो इसे पाकर स्वर्ग लोक की प्राप्ति कर सकता है, वो चाहे तो इसे पाकर ब्रह्म लोक की प्राप्ति कर सकता है, वो चाहे तो इसे पाकर पारब्रह्म को पा सकता है और वो चाहे तो इसे पाकर अमर लोक की प्राप्ति करके सदा-सदा के लिए इस भवसागर से आजाद होकर उस परम परम आनन्द में समा सकता है, जहाँ से वो आया है। यह अवसर देवतन में भी नहीं है। देवतन में ज्ञान अधिक है। देवतन की प्राप्ति करने वाले मनुष्यतन की कीमत जान जाते हैं, इसलिए वो भी मनुष्यतन पाने की चाह रखते हैं।



79) प्रश्न : स्त्री का गुरु तो उसका पति होता है। फिर उसे गुरु करने की क्या ज़रूरत है?

उत्तर : नहीं, ऐसा नहीं है। स्त्री का गुरु उसका पति नहीं है। शास्त्रानुसार गुरु की भक्ति कही गयी है।

ध्यान मूलम् गुरु रूपम्, पूजा मूलम् गुरु पादकम्।

मंत्र मूलम् गुरु वाक्यम्, मोक्ष मूलम् गुरु कृपा॥

जो जिसकी भक्ति कर रहा है, वो वहीं समाएगा। यदि पति गुरु है और वो नरक की राह पर चल रहा है तो स्त्री भी वहीं जाएगी न! बंदे को खुद आत्मा का ज्ञान नहीं है, स्त्री को क्या ज्ञान मिलेगा! स्त्री भी वहीं तक ही पहुँचेगी, जहाँ उसका बंदा पहुँचेगा। उसे खुद के कल्याण का पता नहीं है, स्त्री का कल्याण क्या करेगा! जिसे ज्ञान हो गया, वो स्त्री का संग करेगा नहीं। या तो बालब्रह्मचारी रहेगा या ज्ञान हो जाने पर सन्यास ग्रहण करके संसार के कल्याण के लिए निकल पड़ेगा। यानी कहने का मतलब है कि स्त्री का गुरु उसका बंदा कहना मूर्खता होगी। पर मूर्खता से जिद्द करके आदमी इस बात को आसानी से मानता नहीं है। मैं एक आदमी की बात बताता हूँ।

एक माई आई, कहा कि बंदा नहीं आने देता है। मैंने पूछा कि क्या कहता है? उसने कहा कि जब आती हूँ तो कहता है कि जनानी का

कोई गुरु नहीं होता है, जनानी का गुरु होता है—उसका बंदा। मैंने कहा कि उसे लाना। कहा—आता नहीं है। मैं फिर उसे कहता कि भजन करना। वो कहती थी कि भजन नहीं करने देता। मैंने कहा कि वो कोई तेरी स्वाँस में थोड़ा बैठा है कि भजन नहीं करने देता है।

खैर, एक बार कहीं राँजड़ी में शादी थी। उनकी रिश्तेदारी थी तो वो आ गये। माई ने अपने बंदे को कहा कि दो मिनट चलो। वो बोला कि नहीं, वो साहिब जादू-जड़ी वाला है, फँसा लेता है। माई ने कहा कि नाम नहीं लेना, चलो तो सही। कहा—अच्छा बाद में चलूँगा। इतने में माई आई, कहा कि बंदा आया है, थोड़ी देर में आपके पास लाती हूँ। वो आया तो मैंने बात उठाई कि गुरु ज़रूरी है। क्योंकि माई ने पहले इशारा दे दिया था कि वो आ रहा है। मैंने कहा कि शास्त्र कह रहे हैं कि गुरु कि बिना गति नहीं है। वो बोला कि गुरु होता नहीं है जनानी (स्त्री) का। मैंने कहा कि बात सुन, किस ग्रंथ में यह बात लिखी है? कहा कि उसका बंदा ही गुरु होता है। वो तो बस अपनी ही रट पकड़े हुए था। मैं जान गया कि आज निपट शठ और जिद्दी से पाला पड़ा है। मैंने कहा—एक बात बताओ, शिवजी का नाम सुना है? कहा—हाँ। मैंने कहा कि उनकी जनानी का नाम जानते हो? कहा—पार्वती। मैंने कहा कि पार्वती का गुरु पता है, कौन है? कहा—नहीं। मैंने बताया कि नारद जी थे। शिवजी जैसे की जनानी को नारद जैसा गुरु करना पड़ा था तो आम आदमी क्या सोच रहा है! फिर मैंने कहा कि राम जी का नाम सुना है? कहा—हाँ। मैंने कहा कि उनकी जनानी का नाम जानते हो? कहा—सीता जी। मैंने कहा कि सीता जी का गुरु कौन था, पता है? कहा—नहीं। मैंने कहा कि सीता जी के गुरु थे—वशिष्ठ मुनि। राम जी ने नहीं कहा कि मैं ही हूँ तुम्हारा गुरु। वो आखिर में कह रहा है कि जनानी का गुरु होता नहीं है।

मैंने कहा कि तेरी बात तो वैसी ही है जैसे दिल्ली में एक बेकार बंदा था। उसकी स्त्री ने गाय रखी थी। दूध बेचकर अपने बच्चों को पालती थी। एक दिन बंदे ने ऐलान किया कि जो मुझे गीता का 18वाँ

अध्याय समझा देगा, उसे मैं यह गाय दान में दे दूँगा। माई ने कहा कि यह क्या जुल्म कर रहे हो, हम रोटी कहाँ से खायेंगे? वो बोला कि मुझे कोई गीता का 18वाँ अध्याय समझा नहीं सकता है, तू चिन्ता मत कर। वो बोली कि काशी जी के बड़े-बड़े विद्वान हैं, तुम ऐसा मत कहो; हमारे पास एक ही गाय है। वो बोला-अरे पगली! परेशान क्यों हो रही है! जब भी कोई समझायेगा तो मैं एक ही बात कहूँगा कि समझा ही नहीं।

तो मैंने उस बंदे से कहा कि तेरी बात भी वैसी ही है। शास्त्र तो कह रहे हैं-

ध्यान मूलम् गुरु रूपम् ॥

इसलिए जो ऐसी बात कह रहे हैं, वो शास्त्रों का ज्ञान नहीं रखते हैं। कल्पांतर तक साधना करते रहने पर भी गुरु के बिना परमात्मा को नहीं पाया जा सकता है। रामायण में तो गुरु के लिए बोला। कितना बढ़कर बोल दिया।

गुरु बिन भव निधि तरई न कोई। हरि विरंचि शंकर सम होई ॥

शिवजी ने वृहस्पति को गुरु किया। ब्रह्मा जी ने अग्नि को गुरु किया।

राम कृष्ण से कौ बड़ा, तिन भी तो गुरु कीन।

तीन लोक के नायका, गुरु आगे आधीन ॥

शास्त्रों को पढ़ने के बाद पता चलता है कि गुरु की ज़रूरत है। पर पाखण्डी गुरुवाद की तरफ नहीं जाने देता है।

गुरु को तजे भजे जो आना। ता मानुष को फोटक ज्ञाना ॥



80) प्रश्न : परम-पुरुष चाहे तो आत्माओं को मुक्ति नहीं दे सकता क्या?

उत्तर : एक पल में दे सकता है। पर फिर उनका शब्द नहीं कट जायेगा, जो निरंजन को 17 असंख्य चौकड़ी युगों का राज्य करने के लिए दिया है!



81) प्रश्न : आत्मा का क्या कसूर था?

उत्तर : इसलिए आपके जीवन में एक मौका मिलेगा उस देश में जाने के लिए। बस, आप सद्गुरु को पहचानो।



82) प्रश्न : पीड़ा में, कष्ट में या कुछ पाने के लिए जो हम पुकार या प्रार्थना करते हैं, क्या वो हमारी पुकार या प्रार्थना प्रभु तक जाती है? या फिर हम ऐसे ही अँधकार में पुकार रहे हैं?

उत्तर : जो भी संसार के लोग पुकार करते हैं, वो निरंजन तक जाती है। शरीर के कष्ट से छुटकारा पाने के लिए ही तो पुकार कर रहे हैं न! वो निरंजन से संबंधित है। सांसारिक वस्तु पाने के लिए ही प्रार्थना कर रहे हैं। वो भी शरीर से संबंधित होने से निरंजन से ही संबंधित है। वो निरंजन सब चीजें दे देता है ताकि लगे कि प्रभु ने पुकार सुनी। पर वो आत्मा का ज्ञान नहीं देने वाला। भौतिक पदार्थ दे देगा।

नचिकेता का वृत्तांत सुना होगा। उसका पिता राजा था। वो बूढ़ी गाय दान में दे रहा था। नचिकेता को ठीक नहीं लगा। उसने सोचा कि यह तो जाकर इनकी सेवा ही करेगा। दान में तो अच्छी चीज़ होनी चाहिए। उसने पिता से पूछा कि मुझे किसको दान में दोगे? पिता ने उसकी बात अनसुनी कर दी। नचिकेता ने 2-3 बार पूछा, पर उसके पिता ने ध्यान नहीं दिया। पर जब वो बार-बार पूछने लगा कि मुझे किसे दान में दोगे तो उसके पिता ने कहा कि जा! तुझे मृत्यु को दान में दिया। वो चित्रगुप्त के पास पहुँचा। यमराज ने कहा कि तुम न्याय प्रिय हो, गलती से यहाँ आ गये हो, मैं तुमसे बहुत प्रसन्न हूँ, माँगो क्या चाहते हो? उसने कहा कि मुझे आत्मा का ज्ञान चाहिए। यमराज ने कहा कि यह मत माँगो। और जो कुछ तुम्हें चाहिए, मैं दे सकता हूँ, पर यह नहीं माँगो, यह नहीं दे पाऊँगा।

कहने का मतलब है कि जाने-अनजाने में हम जिस प्रभु तक अपनी अन्तरात्मा की पुकार पहुँचाना चाह रहे हैं, वहाँ तक हमारी पुकार नहीं पहुँच पा रही है। वो तीन लोक के राजा निरंजन तक ही पहुँच रही है, जो हमारा कल्याण नहीं चाहता है। तीन लोक का राजा आत्मा का ज्ञान नहीं देना चाहता है। बाकी जो भी देगा, वो तो छूटेगा ही छूटेगा।

83) प्रश्न : जो नाम आप दे रहे हैं, आपने कहा है कि वाणी का विषय नहीं है, पर वो तो हम बोल भी सकते हैं।

उत्तर : ठीक से समझें। अब तार है, उसपर बिजली चलती है। बस, ऐसे ही है। वो तार है। उस पर विदेह नाम आपके अन्दर दिया है।



84) प्रश्न : क्या सच में मनुष्य योनि 6 शरीरों से सम्पन्न है? यदि हाँ तो वो 6 शरीर कौन से हैं?

उत्तर : हाँ, हरेक मनुष्य के पास 6 शरीर हैं। स्थूल, सूक्ष्म, कारण, महाकारण, ज्ञान, विज्ञान। ये छः शरीर हरेक के पास में हैं। इंसान अपनी पूरी औकात से परिचित नहीं है। इनमें से कुछ रहस्यमय हैं, जो अत्यंत तीव्रगामी हैं।

1) स्थूल शरीर : वो हम ही हैं, जो इसमें रह रहे हैं। वो कोई और नहीं है। स्थूल शरीर सबको दिख रहा है। यह नाशवान् शरीर है। यह देवताओं के पास नहीं है। हम इस शरीर में वास कर रहे हैं, इसलिए इसका परिचय हम सबको समान रूप से है। इस शरीर की ताकत एक दायरे में है। हम इन स्थूल आँखों से कुछ ही दूर देख सकते हैं। इन स्थूल कानों से कुछ दूर तक ही सुन सकते हैं। स्थूल मुँह से कुछ ही दूर तक अपनी आवाज़ पहुँचा सकते हैं। इन हाथों से भारी भरकम वज़न नहीं उठा सकते हैं। इसकी ताकत की सीमा को भी हम जानते हैं।

2) सूक्ष्म शरीर : सूक्ष्म शरीर वो है, जो हमें नींद में चले जाने पर प्राप्त होता है। इस शरीर के प्राप्त होते ही जीव एक दूसरी दुनिया में चला जाता

है, जिसे स्वप्नलोक कहा जाता है। हमारे गले के बाईं ओर एक अत्यंत ही सूक्ष्म कोषिका है। जब हमारा ध्यान वहाँ समा जाता है तो हम स्वप्न अवस्था में पहुँच जाते हैं। तब हमें जो दुनिया दिखाई देती है, हम उसी को सच मान लेते हैं। जैसे जाग्रत अवस्था में स्थूल शरीर के कारण से हम इस झूठे और अनित्य संसार को सच मानते हैं, ऐसे ही स्वप्नावस्था में मिलने वाले शरीर के कारण से हम उस अजीब दुनिया को भी सच मानने लग जाते हैं। इस सूक्ष्म शरीर से, इस स्वप्न की दुनिया से इंसान का बड़ा गहरा नाता है। क्योंकि पिछले कई जन्मों के खेल वहाँ दिखाई देते हैं।

इसमें भी हम ही होते हैं, हमारी अभिव्यक्ति होती है। यह बड़ा अनूठा है। इससे भी इंसान परिचित नहीं है। इस स्थूल से निकलकर उसमें प्रवेश लेते हैं। कौन-सी चीज़ थी, जो इसमें से निकलकर उसमें प्रवेश कर गयी? यह शरीर जड़वत् हो जाता है। पर वो कहीं जा रहा है। वो पूरी स्थितियों को देखता है, पूरे काम करता है। फिर हम वापिस इस शरीर में आ जाते हैं। पर हमें पता नहीं चलता कि कैसे निकले और कैसे आए। वहाँ वो नाना जगहों का सफ़र करता है। कई बार जीवन में ऐसा हुआ। जब भी आप सोए, तब हुआ। पर फिर भी पता नहीं है कि कैसे निकले। क्या चीज़ निकली? यह शरीर निर्जीव हो गया और दूसरा स्वप्न वाला शरीर सजीव हो गया। यानी हम शरीर से निकलकर उस शरीर में प्रविष्ट हुए। भाई मिला तो जान जाते हैं कि भाई है। आप सब सत्य मानने लगे। जितनी देर देखा, सत्य माना। यह था उस शरीर का करिश्मा। जिस तरह इस शरीर में भाई, बंधु, संसार सत्य लग रहा है, उसी तरह वो सब संसार भी सत्य लगता है। इसमें एक स्नायुमंडल काम कर रहा है। चाहे हज़ारों बार पढ़ते हैं कि संसार स्वप्नवत् है, पर लेशमात्र भी अन्तर नहीं पड़ता है। यह शरीर का गुण है। तो स्वप्न में जाते हैं तो एक सूक्ष्म चीज़ उसमें चली गयी। कभी ग़ौर नहीं किया। यह शरीर मृतक अवस्था में चला गया। सब पर लॉक लग गये। वहाँ सभी चीज़ें देख रहे थे। सब सच मान

रहे थे। कभी गहनता से विचार नहीं किया। फिर बाद में खेल मानते हैं, स्वप्न मानते हैं, झूठ मानते हैं।

कभी विचार नहीं किया कि आप स्वप्न में क्यों गये। क्यों हुए आप ऐसे? एक वैज्ञानिक 40 साल से स्वप्न पर रिसर्च कर रहा है। मैं कहता हूँ कि मुझे मिले, एक मिनट में समझा दूँगा। तो एक हमारी अवस्था बनी। चेतना कम हो जाती है। यदि दुख मिले तो उतना ही मिलता है, जितना कि जाग्रत में। यदि राजा बन गये, सुख मिले, तो भी उतनी ही खुशी होती है, जितनी कि जाग्रत में। यह अवस्था का खेल है। क्या चीज़ है यह मानव-तन में? यह काया बड़ी दुर्लभ है।

यह काया है समरथ केरी। काया की गति काहू न हेरी॥

आपने भी धारणा बनाई है कि सद्गुरु पार कर देगा। आप अनुभूतियाँ करें न! तब मोहर लग जाती है। तो उस अवस्था में सब चीज़ें होती हैं। अलग-अलग स्थानों को देखते हैं। सपना क्या था? आत्मा ऐसे कैसे हो गयी? ए.सी. के कमरे में चले जाते हैं तो सर्दी लगने लगती है। इस तरह सूक्ष्म शरीर की बात थी। वर्तमान में दुनिया सच लग रही है। यह स्थूल का करिश्मा है। कैसे पता चला कि वो फलाना है, वो फलाना है। यह इंद्रियों का खेल है। छोटा बच्चा माँ को स्पर्श से पहचानता है। दूसरी स्त्री उठाए तो फौरन जान जाता है कि यह माँ नहीं है। पशु-पक्षी भी पहचानते हैं। वो भी अपना भला-बुरा समझते हैं।

हित अनहित पशु पक्षिन जाना॥

यह आत्मा सबमें एक जैसी है तो फिर ज्ञान अलग क्यों है? क्योंकि शरीर अलग किस्म का है। इस शरीर की क्षमता अलग है। अन्यथा आत्मा एक जैसी है। वो न्यूनाधिक नहीं होती है। फिर किसी में कम अक्ल, किसी में अधिक क्यों? यह शरीर की ताकत है। कुछ गाड़ियाँ हैं, 150 कि. मी. की स्पीड तक भागती हैं। चाहे ड्राइवर कितना भी ट्रेड क्यों न हो, अधिक तेज़ी से नहीं भगा सकता है। इस तरह जैसा

शरीर मिलता है, वैसे ही आत्मा रेगुलेट करती है।

3) कारण शरीर : यह बड़ा निराला शरीर है। यह ध्यान का शरीर है। इसमें बड़ी ताकत है। इस शरीर की ताकत को ऐसे समझें। जैसे आप सत्संग में बैठकर मुझे सुनते हैं, मेरी बातों को समझते हैं और मुझे देखते भी हैं। पर यदि कुछ देर के लिए आपका ध्यान कहीं ओर चला जाए तो आप स्थूल रूप से वहाँ मौजूद होते हुए भी मुझे सुन नहीं सकते हैं, मेरी बात को समझ नहीं सकते हैं, मुझे देख भी नहीं सकते हैं। देखने की, सुनने की और समझने की ताकत इस ध्यान में है। यह कारण शरीर इसी ध्यान का शरीर है। यदि इस शरीर का ज्ञान हो जाए तो आप इस शरीर को कहीं भी भेजकर वहाँ ही स्थिति का पूरा हाल जान सकते हैं, समझ सकते हैं, देख सकते हैं। इसी शरीर के द्वारा इंसान कभी अपने गुजरे हुए दिनों में पहुँच जाता है तो कभी भविष्य की कल्पनाओं में पहुँच जाता है।

यह केवल एकाग्रता है। कुछ कहते हैं कि प्रेतात्मा मिली। वो कारण शरीर द्वारा आई पास में। जिसके पास आई, वो समझता है। वो अनुभव होती है। वाह, शरीर एकाग्रता का है। प्रमाण दे रहा हूँ। कभी अचानक किसी का ध्यान आ जाता है। आपने ध्यान नहीं किया। कतई चिंतन नहीं किया था। थोड़ी देर में वो सामने आ जाता है। कई बार ये चीजें अनुभव हो जाती हैं। वो कारण शरीर द्वारा आपके पास था। इसलिए उसकी हाज़िरी लग रही थी। अन्य किसी को वो नहीं दिख रहा था। क्योंकि उसका ध्यान केवल आपके पास था।

फिर देखते हैं कि कोई गहरी सोच में लगता है। लगता है कि वो यहाँ नहीं है। आप उसके पास जाते हैं, कहते हैं कि भाई कहाँ हो? कई बार आप स्वयं भी ऐसी स्थिति में पहुँच जाते हैं। कई बार आपने देखा है। यानी आप कहीं पर थे। इस कारण शरीर के लिए भी किसी ने नहीं सोचा। अगर इंसान खोज करेगा तो बहुत चीजें मिलेंगी। आप कभी भी किसी से भी मिल सकते हैं।

शब्द तुरी असवार है, पल आवे पल जाय।।

इस ध्यान से जुड़ा है। इसमें हमारा मन भी होता है। पूरा ध्यान एकाग्र होता है तो किसी सोच में चला जाता है। कई बार हमारा अन्तःकरण इसकी खबर देता है, पर वर्तमान का कांशियस मंजूर नहीं करता है। इस शरीर का सिस्टम उसे मान्यता नहीं देता है।

एक ने कहा कि पिछले जन्म का सीरियल चल रहा है, टी.वी. पर दिखाया जा रहा है। क्या सच में ऐसा होता है? मैंने कहा कि हरेक को पिछले 100 जन्म याद हैं। लेकिन शरीर की क्षमता ही थोड़ी है। वो कहाँ 100 जन्म याद रखेगा! 1 मिनट में मैं अगर कुछ बोलूँ तो आप उस मेरे 1 मिनट में कहे हुए को दोहराना चाहें तो नहीं हो पायेगा। आप बहुत कुछ भूल जायेंगे। तो फिर 100 जन्म की बात कहाँ याद होगी!

फिर 100 जन्म की स्थिति कहाँ पर है? हिंदू धर्म की तीन मान्यताएँ हैं—

1. ईश्वर है
2. आत्मा अमर है
3. कर्म के अनुरूप ही आत्मा को नाना शरीर धारण करने पड़ते हैं।

जन्म एक नहीं जन्म अनेका। छूटे नहीं कर्म को लेखा।।

कई जन्म का संस्कार साथ में है। याद है सब। कई जन्मों की घटनाएँ अन्तःकरण में याद हैं। इसमें मन, बुद्धि आदि भी हैं और आत्मा भी है। पर आत्मा को अनन्त जन्मों की याद है। कभी आप कहते हैं कि अमर-लोक पहुँचकर देखेंगे कि आत्मा कैसी है, परम-पुरुष कैसा है, अमर-लोक कैसा है। नहीं, आप अमर-लोक को जानते हैं, आप परम-पुरुष को जानते हैं। आत्मा कैसी है, आप जानते हैं। विश्वास करना कि आप सबको पता है कि परम-पुरुष कैसा है, क्योंकि आप हो ही आत्मा। पर वर्तमान में जो कांशियस है, वो उसे मंजूर नहीं कर पा रहा है।

आपको 100 जन्मों की बात याद है। बातें आपकी चेतना में

आती है वो बात। पर ब्रेन कहता है कि कल्पना है। वो इतनी पीड़ा नहीं उठा पाता है। एक घोड़े के ऊपर यदि 6 कुईटल सामान रख दें तो वो बैठ जायेगा। इस तरह मस्तिष्क अतीत की स्मृति अपने पास नहीं रखना चाहता है। वो नकार रहा है इसे। अगर रखेगा तो आप पागल हो जायेंगे। इसलिए केवल इसी जन्म की घटनाओं से जूझ रहा है। अन्तःकरण खबर दे रहा है। यह मस्तिष्क कह रहा है—झूठ, कल्पना।

एक बालक छोटपन से चाह रहा है कि पहलवान बने। नहीं, वो पहले पहलवान था। इसे कर्म का लेखा कहा। अन्तःकरण से कोई छोटपन से ही मास्टर बनना चाहता है। वो पहले था। कुछ बच्चेपन से ही महात्मा बनना चाहते हैं। संस्कार था। वो पहले भी महात्मा था। इसलिए अन्तःकरण भी मूवमेंट कर रहा है और ब्रेन भी। बड़ी खींचाखांची है। बचपन से ही धारण कर लेता है कि यह-यह काम करूँगा। क्योंकि—

कर्मसानी बुद्धि उत्पानी॥

कर्म के अनुसार स्वभाव बना। 100 जन्म की घटनाएँ याद हैं आत्मा को। सभी याद हैं। इसका उल्लेख भी आता है। हे अर्जुन! तुम्हारे और मेरे कई जन्म हो चुके हैं। अन्तर केवल इतना है कि तुम्हें वो याद नहीं हैं जबकि मुझे याद हैं।

अन्तर केवल याद का है। मैंने कहा कि आप जिससे भी मिलना चाहेंगे, मिल सकते हैं। हम इस शरीर से चलकर जाते हैं। कहीं आपके पास ऐसा सिस्टम है कि जिससे भी मिलना चाहें, मिल सकते हैं। गये हुए पूर्वजों से भी मिल सकते हैं। परमात्मा से मिलना चाहें, मिल सकते हैं।

जितने भी धर्म हैं, ध्यान पर केंद्रित हैं। सभी ध्यान करना बोल रहे हैं। दरअसल ध्यान में क्षमता है। इसलिए सभी ध्यान कर रहे हैं। पर अन्य शरीर में जाने के लिए ब्रेन रुकावट डाल रहा है। वो अन्य शरीरों को स्वीकार नहीं कर पा रहा है। वो केवल इस शरीर की सोच रखता है। इसके हित के लिए क्या-क्या चाहिए, इसी सोच में लगा है। इसके

आगे मस्तिष्क नहीं सोच सकता है। आगे की परेशानी उठाने की क्षमता नहीं है। इसलिए बाकी में जाना चाहते हैं तो इसकी रुकावट आती है।

तू में नू मार मुका बंदेया ॥

अपने को भुलाकर जाना पड़ता है। चाहे कितना भी ज़ोर लगा लो, पर इस शरीर में सिस्टम नहीं है। जैसे नाक से देखने का काम नहीं कर सकते हैं, कानों से सूँघने का काम नहीं कर सकते हैं। इसी तरह स्थूल शरीर में दिव्य शक्तियों को, दिव्य लोकों को अनुभव करने की क्षमता नहीं है। कितना भी ज़ोर लगाए कि उड़ें तो नहीं हो पायेगा। उन शरीरों की प्राप्ति के बाद ही होगा।

हम तो भक्ति का बाहरी वातावरण देख रहे हैं, जिसमें नाचना, कूदना आदि हो रहा है। साहिब ने इस पर खूब कहा—

**नाचना कूदना ताल का पीटना, रांड़िया खेल है भक्ति नाहिं।
भक्ति साहिब की बड़ी बारीक है, शीश सौंपे बिन नाहिं पाई ॥**

हम ध्यान के द्वारा कई अनुभूतियाँ कर सकते हैं। साहिब ने कहा—

सुरति से देख सखी वो देश ॥

4) महाकारण शरीर : यह बड़ा ही ग़ज़ब का शरीर है। इसकी प्राप्ति के लिए मनुष्य योग करता है। इस शरीर को प्राप्त करके योगी लोग ब्रह्माण्डों की यात्राएँ करते हैं। इसमें पहुँचकर बहुत ताकत आ जाती है। दिव्य शक्तियाँ इस शरीर में निवास करती हैं। रिद्धि-सिद्धियों की प्राप्ति हो जाती है।

योगी इसमें होते हैं। यह मसुर के दाने से भी छोटा है। त्रिकुटी में जाकर एकाग्र होते हैं तो यह प्राप्त होता है। यह शरीर निराला है। जो अन्तर्धान होना सुनते हैं, इसी शरीर में है। महाकारण से ही ब्रह्मलोक आदि में जाते हैं। इसे दिव्य-दृष्टि का खुलना कहते हैं। आपका शरीर मामूली नहीं है। आपकी हैसियत बहुत बड़ी है। आप मामूली नहीं हैं। आप ईश्वर के अंश हैं।

सबकी गठरी लाल है, कोई नहीं कंगाल ।।

5) ज्ञान देही : इस शरीर को पाकर योगी ब्रह्मनिष्ठ हो जाता है और स्वयं को ब्रह्म समझने लग जाता है, क्योंकि तब उसमें एक अलग संसार बनाने की ताकत आ जाती है। जो कहे, होता जाता है, जो इच्छा करे, वो होता जाता है।

यह शरीर प्राप्त करता है तो सृजन करने की क्षमता आ जाती है। कभी सुनते हैं कि फलाना भगवान। यह इस शरीर में जाने पर होता है। तब लगता है कि सृष्टि का अधिष्ठा मैं हूँ। सोए हुए आदमी को आवाज़ लगाकर जगा देते हैं या हिलाकर जगा देते हैं। यह है—जगाने का सूत्र। इस तरह इन शरीरों को जगाने का भी सूत्र है।

6) विज्ञान देही : इस देही को प्राप्त करने पर मन मूर्छित अवस्था में पहुँच जाता है। मन की ताकत काँमा में पहुँच जाती है जबकि आत्मा अत्यंत चेतन हो जाती है। इस शरीर को पाकर साधक बिना आँखों के देखने लग जाता है, बिना कानों के सुनने लगता है, बिना हाथों के कार्य करने की ताकत आ जाती है। इस शरीर की महिमा गोस्वामी जी ने कही—

**पग बिन चले सुने बिन काना। कर बिनु कर्म करे विधि नाना ।।
आनन रहित सकल रस भोगी। बिन वाणी वक्ता बड़ योगी ।।
तन बिन परस नयन बिन दरसे। गहे प्राण बहु शेख विशेखे ।।
यही विधि सबै अलौकिक करनी। महिमा जाय कवन विधि वरणी ।।**

जैसे स्थूल शरीर के पैरों की चलने की क्षमता सीमित है। पर जो पैर इस शरीर में प्राप्त होते हैं, वो अनन्त की तरफ चल सकते हैं।

इसी से जीव बहुत यात्राएँ कर लेता है। यह अत्यंत तीव्र है। इसी से नाना खेलों को देखता है। 10वें द्वार से निकलने पर यह प्राप्त होता है। तब पूरे मस्तिष्क के संबंध काट देता है। इंडा-पिंगला को लय कर देता है। पूरी जीवन-शक्ति को लय कर देता है।

ये सब साजो-सामान केवल इस मानव तन में है। मानव के अलावा ये 6 शरीर अन्य किसी भी प्राणी में नहीं हैं।



85) प्रश्न : परम पुरुष के 16 शब्द पुत्र थे, पर उन्होंने एकमात्र बुरे शब्द पुत्र काल निरंजन को ही जीवात्माएँ क्यों दी?

उत्तर : शब्द पुत्रों को उत्पन्न करने के बाद जीवों को उस अमर-लोक में विचरण करते हुए बहुत समय बीत गया। उसके पश्चात् पाँचवां पुत्र 'निरंजन' ध्यान करने लगा। उसने 70 युग तक एकाग्रचित होकर परम-पुरुष का ध्यान किया। परम-पुरुष सेवा से प्रसन्न हुए और पूछा कि इतना घोर तप क्यों कर रहे हो? निरंजन ने कहा कि मुझे भी कहीं थोड़ा सा स्थान दे दो। परम-पुरुष ने तब निरंजन को मानसरोवर स्थान दिया (मानसरोवर अमर-लोक का ही एक द्वीप है)। मानसरोवर पहुँच कर निरंजन बड़ा खुश हुआ और आनन्द से वहाँ रहने लगा। लेकिन कुछ ही समय बाद पुनः परम-पुरुष का ध्यान करने लगा। निरंजन ने पुनः 70 युग तक परम-पुरुष का ध्यान किया। परम-पुरुष ने सेवा से प्रसन्न होकर पूछा कि अब क्या चाहते हो?

निरंजन—

इतना ठाँव न मोहि सुहाई।

अब मोहि बकसि देहहु ठकुराई॥

कै मोहि देहु लोक अधिकारा।

कै मोहि देहु देश इक न्यारा॥

निरंजन ने कहा— “मैं इतने से खुश नहीं हूँ। अब कृपा करके या तो इस अमर-लोक का राज्य ही मुझे दे दो या फिर एक अलग से न्यारा देश दो, जिस पर मेरा पूरा अधिकार हो, जहाँ मैं स्वतन्त्र रूप से बिना किसी रोक-टोक के अपना कार्य कर सकूँ।”

परम-पुरुष ने तब निरंजन से कहा कि तुम्हारे बड़े भाई कूर्म के पास पाँच तत्त्व का बीज (जो सूक्ष्म रूप में था) है। तुम उसके पास जाकर प्रार्थना करना और पाँच तत्त्व का बीज ले लेना। उससे तुम शून्य में तीन-लोक बनाना। जाओ! तुम्हें 17 चौकड़ी असंख्य युग का राज्य देता हूँ।

निरंजन कूर्म जी के पास पहुँचा, लेकिन कूर्म जी से प्रार्थना नहीं की, और बल से पाँच तत्त्व का बीज उसी प्रकार उनसे छीन लिया, जैसे किसी के शरीर से खून खींचकर निकालते हैं। कूर्म जी शांत थे, उन्होंने सोचा कि यह कौन शैतान यहाँ आ गया है! कूर्म जी ने तब परम-पुरुष से पुकार की, कहा – यह किस शैतान को यहाँ भेज दिया है! इसने तो मेरे साथ बल का प्रयोग करके पाँच तत्त्व का बीज छीना है। परम-पुरुष ने कूर्म जी से कहा कि तुम शांत रहो, यह तुम्हारा छोटा भाई है, इसे माफ़ कर दो। लेकिन परम-पुरुष ने सोचा कि यह कैसा निरंजन उत्पन्न हुआ है!

पाँच तत्त्व का बीज लेकर निरंजन ने उससे पाँच तत्त्व (जल, अग्नि, वायु, पृथ्वी और आकाश) बनाए। जिस तरह कुम्हार मिट्टी से तरह-2 की वस्तुएँ बनाता है, उसी तरह निरंजन ने भी इन पाँच तत्त्वों से 49 करोड़ योजन पृथ्वी, सूर्य, चन्द्र, तारे, सप्त-पाताल, सप्त-लोक, सब बना दिया। ऐसे शून्य में कुछ समय तक रहा, लेकिन जीव नहीं थे, इसलिए यह निर्जीव सृष्टि थी। निरंजन ने सोचा कि यदि जीव ही नहीं है तो फिर सृष्टि का क्या लाभ! अतः उसने पुनः 64 युग तक परम-पुरुष का ध्यान किया। परम-पुरुष ने पूछा कि अब क्या चाहिए ?

निरंजन –

दीजै खेत बीज निज सारा।।

निरंजन ने कहा- “मैंने तीन-लोक की रचना तो की है, लेकिन जीव ही नहीं हैं तो राज्य किस पर करूँ! इसलिए कृपा करके थोड़े से जीव मुझे भी दे दें, ताकि मैं उन पर राज्य कर सकूँ।”

तब परम-पुरुष ने इच्छा करके ऐसी कन्या (आद्य-शक्ति) की उत्पत्ति की, जिसकी आठ भुजाएँ थीं। आद्य-शक्ति ने परम-पुरुष को प्रणाम करते हुए पुछा कि उसे क्यों बनाया गया है? परम-पुरुष ने अनन्त आत्माएं देते हुए कहा कि हे पुत्री! मानसरोवर में निरंजन है, जिसने शून्य

में तीन-लोक की रचना की है। तुम ये आत्माएं लेकर उसके पास जाओ और दोनों मिलकर शून्य में सत्य-सृष्टि करो (आत्माओं को योनियों में न लाकर अर्थात् शरीरों में न डालकर सत्य-सृष्टि करने की आज्ञा दी, जैसी कि अमर-लोक की सृष्टि थी)।



86) प्रश्न : परम पुरुष का पुत्र होने पर भी काल निरंजन ने जीवात्माएँ क्यों माँगी? यदि माँगी भी तो जीवात्माओं को तंग क्यों किया करता है?

उत्तर : जैसे सांसारिक कथाओं में आप सब पढ़ते हैं कि राक्षस लोगों ने भी तपस्याएँ की और देवता समान लोगों ने भी। अन्तर यह रहा कि देवता समान लोगों ने तपस्या करके प्रभु से प्रभु को ही चाहा और यदि प्रभु ने उन्हें कोई और वस्तु या शक्ति दी तो उससे दूसरों का कल्याण ही चाहा। यदि किसी ने उन्हें कष्ट भी पहुँचाया तो उन्होंने यही कहा कि हे भगवान, इसे सदबुद्धि देना, क्योंकि इसे नहीं पता है कि यह क्या कर रहा है। दूसरी ओर राक्षस समान लोगों ने तपस्या करके ऐसे-ऐसे वर माँगे, जिनसे उन्हें कोई भी मार नहीं सके और वो ज़्यादा-से-ज्यादा समय तक जीवित रहकर दूसरों को मारकर लूट सकें, दूसरों पर राज्य करके, उन्हें कष्ट देकर आनन्द ले सकें।

निरंजन ने भी ऐसा ही किया। तेज शब्द से उत्पन्न होने से वो राक्षस समान निकला और दूसरों पर राज्य करने के लिए, उनका अहित करके आनन्द लेने के लिए परम पुरुष की सेवा की। कूर्म और आद्य शक्ति दोनों के साथ काल निरंजन ने बल का प्रयोग करके बुरा ही किया। यहाँ तक कि उनकी अंश आत्माओं को भी माँग लिया और उन्हें भी माया के पिजड़े में कैद करके कष्ट दिया करता है। पर आत्माओं को परम पुरुष ने इतना सुरक्षित करके दिया कि निरंजन उनका कुछ भी बिगाड़ नहीं सकता है।



87) प्रश्न : ये अमर लोक, ये 14 लोक, ये निरंजन, ये माया, ये आत्मा, ये ब्रह्माण्ड, ये देवी-देवता आदि किसने और कैसे बनाए?

उत्तर : एक बार धर्मदास जी ने अमर-लोक तथा सृष्टि-उत्पत्ति के विषय में जानने की इच्छा से कबीर साहिब से प्रार्थना करते हुए पूछा -

अब साहिब मोहि देउ बताई। अमर-लोक सो कहां रहाई ॥

कौन द्वीप हंस को वासा। कौन द्वीप पुरुष रह वासा ॥

तीन लोक उत्पत्ति भाखो। वर्णहुसकल गोय जनि राखो ॥

काल-निरंजन किस विधि भयऊ। कैसे षोडश सुत निर्मयऊ ॥

कैसे चार खानि बिस्तारी। कैसे जीव कालवश डारी ॥

त्रय देवा कौन विधि भयऊ। कैसे महि आकाश निर्मयऊ ॥

चन्द्र सूर्य कहु कैसे भयऊ। कैसे तारागण सब ठयऊ ॥

किस विधि भई शरीर की रचना। भाषो साहिब उत्पत्ति बचना ॥

हे सहिब ! कृपा करके अब मुझे बताओ कि वह अमर-लोक कहाँ है? उस अमर-लोक में जीव किस स्थान पर रहते हैं? तीन लोक की उत्पत्ति कैसे हुई? काल-पुरुष कैसे हुआ? सोलह पुत्र कैसे बने? यह निर्मल आत्मा चार खानियों में कैसे गयी? आत्माएँ काल-पुरुष के चंगुल में कैसे फँस गयीं? त्रिदेव कैसे बने? पृथ्वी और आकाश कैसे बने? शरीर की रचना कैसे हुई? हे साहिब ! कृपा करके मुझे सृष्टि की उत्पत्ति का सारा भेद समझाकर कहिए। तब धर्मदास को अधिकारी जानकर कबीर साहिब ने फरमाया-

तब की बात सुनहु धर्मदासा। जब नहिं महि पाताल अकाशा ॥

जब नहिं कूर्म बराह और शेषा। जब नहिं शारद गोरि गणेश ॥

जब नहिं हते निरंजन राया। जिन जीवन कह बांधि झुलाया ॥

तैतिस कोटि देवता नाहीं। और अनेक बताऊं काहीं ॥

ब्रह्मा विष्णु महेश ने तहिया। शास्त्र वेद पुराण न कहिया ॥

तब सब रहे पुरुष के माहीं। ज्यों बट वृक्ष मध्य रह छाहीं ॥

हे धर्मदास ! मैं तब की बात कह रहा हूँ, जब धरती और आकाश नहीं थे; जब कूर्म, शेष, बाराह, शरद, गौरी, गणेश आदि कोई भी न था, जब जीवों को कष्ट देने वाला निरंजन भी न था, जब तैतीस करोड़ देवता भी न थे... और अधिक क्या बताऊँ ? ब्रह्मा, विष्णु और महेश न थे। वेद, शास्त्र, पुराण आदि भी न थे। लेकिन वह एक था।

कबीर साहिब कहते हैं कि प्रारम्भ में सत्य-पुरुष गुप्त थे। उनका कोई साथी-संगी नहीं था। वे कभी बने नहीं हैं और न ही मिटेंगे।

जिस किसी वस्तु का सृजन होता है, वह अन्ततः नष्ट भी अवश्य हो जाती है। लेकिन जो परम-पुरुष कभी बना ही नहीं, वह मिट कैसे सकता है ! साहिब धर्मदास से कहते हैं कि साकार, निराकार, लोक-लोकान्तर आदि सब बाद में बने, अतः गवाही किसकी दूँ ! चारों वेद भी सत्य पुरुष की कहानियाँ नहीं जानते और निराकार अर्थात् काल-पुरुष तक की बात ही कहते हैं।

धरती, आकाश, ब्रह्माण्ड, निरंजन, त्रिदेव आदि की उत्पत्ति के विषय में बताते हुए साहिब फरमाते हैं कि सर्वप्रथम परम-पुरुष ने इच्छा करके एक शब्द पुकारा, जिससे एक अद्भुत श्वेत रंग का प्रकाश हुआ और वह अद्भुत प्रकाश अनन्त में फैल गया। वह प्रकाश सांसारिक प्रकाश की भांति न था, वह इतना अद्भुत था की जिसका एक-2 कण करोड़ों सूर्यों को भी लज्जा दे।

जब वह प्रकाश अनन्त में फैल गया तो फिर वे सत्य-पुरुष स्वयं उस प्रकाश में समा गये। अब वह प्रकाश चेतन हो गया, जीवित हो गया। जिस प्रकार आत्मा के शरीर में आने से शरीर चेतन हो जाता है। उसी तरह वह प्रकाश भी जीवित हो उठा।

प्रकाश में आने से पहले वे सत्य-पुरुष अगम थे, गुप्त थे जबकि प्रकाश में आकर ही वे सत्य-पुरुष कहलाए और वह अद्भुत

प्रकाश, जो स्वयं सत्य-पुरुष ही थे, अमर-लोक कहलाया। उन्हीं की नकल पर निरंजन ने पाँच तत्व से पहले तीन लोक बनाए और फिर गुप्त होकर तीन लोक में समा गया। जिस तरह वो अमर लोक परम पुरुष की देही हुई, वो परम पुरुष स्वयं ही अमर लोक हो गया, इसी तरह ये तीन लोक निरंजन की देही है।

...अभी भी सत्य-पुरुष अकेले ही थे। फिर उनकी मौज हुई और उन्होंने उस प्रकाश को अर्थात् अपने ही स्वरूप को अपने में से छिटका दिया। अनन्त बूँदें हुईं, जो वापिस उस अद्भुत अनन्त प्रकाश में आयीं। जिस प्रकार समुद्र में से पानी को मुट्ठी में या हाथों में भरकर उछालने से कई कण बिखर जाते हैं, उसी तरह उस प्रकाश में से भी अनेक कण बिखर गये। लेकिन जिस प्रकार समुद्र की बूँदें पुनः समुद्र में गिर, समुद्र का ही रूप हो जाती हैं, उसी तरह वे अनन्त कण भी वापिस उस अद्भुत प्रकाश में आए, लेकिन अचरज यह था कि वे बूँदें जब वापिस प्रकाश में आयीं तो वे प्रकाशमय नहीं हुईं, क्योंकि सत्य-पुरुष ने इच्छा की कि इनका अपना अलग अस्तित्व भी रह जाए। वे ही हंस आत्माएं कहलाये। वे सब हंस उसी अद्भुत प्रकाश में विचरण करने लगे।

आत्माओं का उस प्रकाश में अलग अस्तित्व के साथ विचरण करना बड़े अचरज की बात थी क्योंकि समुद्र की बूँदों का समुद्र में अपना अलग अस्तित्व नहीं होता। जिस तरह पानी में मछली घूमती रहती है, उसी तरह सब जीव उस प्रकाश में घूमने लगे। ये देख परम-पुरुष बड़े खुश हुए और उन आत्माओं से बहुत प्यार करने लगे। बहुत समय ऐसे व्यतीत हो गया और सभी हंस उस अद्भुत प्रकाश में विचरण करते हुए परम-आनन्द लूट रहे थे। 'सदा आनन्द होत है वा घर, कबहु न होत उदासा।'

वहाँ उस अमर-लोक में आत्मा का प्रकाश 16 सूर्य का है और परम-पुरुष के मात्र एक रोम का प्रकाश ही करोड़ों सूर्य तथा चन्द्रमा को लज्जा देने वाला है। अतः जब परम-पुरुष के एक रोम की

ऐसी महिमा है तो फिर वह परम-पुरुष स्वयं कैसा होगा, इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती।

फिर परम-पुरुष ने शब्दों से पुत्र उत्पन्न किये अर्थात् जो बोलते जा रहे थे, वह पुत्र बन रहा था। जैसे ही परम-पुरुष ने इच्छा करके दूसरा शब्द पुकारा तो 'कूर्म' उत्पन्न हुआ। इसी तरह तीसरे शब्द से 'ज्ञान' और चौथे शब्द से 'विवेक' उत्पन्न हुआ।

परम-पुरुष ने सोचा कि मैं जो बोल रहा हूँ, वह सब पैदा हो रहा है, तो क्यों न एक अपने जैसा भी बना दूँ! अतः इस बार परम-पुरुष ने एक और परम-पुरुष बनाने की इच्छा से तीव्र आवाज़ में शब्द पुकारा। यह शब्द परम-पुरुष ने थोड़ी संशय में पुकारा। इस शब्द से 'मन' (निरंजन) हुआ। परम-पुरुष तब यह जानने के लिए कि क्या उनके द्वारा उत्पन्न पाँचवाँ शब्द पुत्र उनके जैसा ही है या नहीं, उस समय परम-पुरुष उसमें समाए। परम-पुरुष को एक निमक (पल का तीसरा हिस्सा) के लिए शंका आई कि यह तो मेरा शरीर नहीं है और अपने को वहाँ से खींचकर अपने शरीर में लाए। फिर परम-पुरुष ने छठा शब्द पुकारा तो उससे 'सहज' की उत्पत्ति हुई। सातवें शब्द से 'संतोष', आठवें से 'चेतना', नौवें से 'आनन्द', दसवें से 'क्षमा', ग्यारहवें से 'निष्काम', बारहवें से 'जलरंगी', तेहरवें से 'अचिन्त' चौदहवें से 'प्रेम', पन्द्रहवें से 'दीन-दयाल', तथा सोलहवें शब्द से 'धैर्य', उत्पन्न हुआ। उस अमर-लोक की शोभा को बढ़ाने के लिए ही परम-पुरुष ने इन शब्द पुत्रों को उत्पन्न किया। ये सभी उसी अमर-लोक में विचरण करने लगे।

ये सब परम-पुरुष के शब्द पुत्र थे, जिन्हें परम-पुरुष ने इच्छा से पैदा किया, लेकिन आत्मा इच्छा से नहीं बनी। आत्मा तो परम-पुरुष का ही अंश है। इस तथ्य को कबीर साहिब ने बड़े सुन्दर ढंग से कहा है—

जीवरा अंश पुरुष का आही।

आदि अन्त कोउ जानत नाहीं॥



88) चक्र भेद क्या है?

उत्तर : शरीर में सात चक्र हैं। योगी लोग सात चक्रों का भेद जानते हैं जबकि संत आठवें से शुरू होते हैं। योग छोटे चक्र तक जा रहा है। योगेश्वर सातवें चक्र तक जा रहा है। कुछ कहते हैं कि एक ही बात है। कहाँ एक ही बात है! कहाँ से एक बात हुई!

मूलाधार चक्र पर गणेश जी हैं। नाभि में विष्णु जी हैं। अनहद चक्र में शिवजी का वास है। वो अहंकार के देवता हैं। 'मैं हूँ' की अनुभूति भी इसी में है। विशुद्ध चक्र में सरस्वती का वास है। सभी स्वर यहीं से हैं। आज्ञाचक्र में आत्मा का वास है। वो स्वांसा ले रहा है। सातवां सहस्रसार चक्र है। आठवें में सद्गुरु का वास है। पर योगी लोग सातवें तक ही सीमित हैं।

आठ अटाकी अटारि मंझारा, देखा पुरुष न्यारा।

निराकार आकार न जोति, नहिं वह वेद विचारा॥

वे साहिब सब संत पुकारा, और पाखंड पसारा।

सद्गुरु चीह्न दीन यह मारग, नानक नजर निहारा॥

उघरा वह द्वारा वाह गुरु परिवारा॥

तो हम अष्टम चक्र की बात कर रहे हैं। संतों ने आठवें चक्र की बात की, नौवें चक्र की बात की, जो गुप्त है। योगी तो सातवें तक सीमित हैं। फिर एक बात कहाँ हुई।

सप्तम चक्र में जाता है तो विज्ञान देही की प्राप्ति होती है। कालांतर में सप्तम चक्र तक ही सब जा रहे थे। वेद भी सात चक्रों की बात कर रहा है। अष्टम चक्र का भेद वेद में नहीं है।



89) प्रश्न : पंच मुद्राएँ क्या हैं? क्या इन मुद्राओं से हम परम सत्य की प्राप्ति नहीं कर सकते हैं?

उत्तर : पंच मुद्राएँ योग मत में आती हैं और योग कमाई का मार्ग है।

अपनी कमाई से करोड़ों जन्म की तपस्या के बाद भी कोई परम सत्य की प्राप्ति नहीं कर सकता है। परम सत्य तक पहुँचना आपकी अपनी कमाई से बाहर का मामला है।

इन पंच मुद्राओं द्वारा हम निरंजन की सीमा से बाहर नहीं जा सकते हैं। पंच मुद्राएँ पाँच शब्दों पर आधारित हैं। ये शब्द सर्वशक्तिमान ने ही पुकारे थे। ये हैं—सोहं, सत्, ज्योति-निरंजन, रंकार, ओंकार। ये पाँच शब्द साहिब ने पुकारे। कहने का भाव है कि इन शब्दों को पुकारने वाला परमात्मा था, इनमें से कोई शब्द परमात्मा नहीं। इसलिए जो शब्द को परमात्मा कहते हैं, वो इस निरंजन की ही भक्ति करते हैं, सच्चे साहिब की नहीं।

पंच मुद्राओं द्वारा हमारे पूर्वजों ने मेहनत की, जो हासिल किया, वो सूत्र हमारे लिए छोड़ गये! साहिब इन चीजों को नकार नहीं रहे हैं, पर कह रहे हैं कि यह अध्यात्म नहीं है, योग है। ये पांच मुद्राएँ इस प्रकार हैं।

चाचरी मुद्रा

ज्योति निरंजन चाचरी मुद्रा, सो है नैनन माहिं।

तेहि को जाना गोरख योगी, महा तेज है ताही॥

कुछ आज भी ये मुद्राएँ कर रहे हैं। गोरख जी चाचरी मुद्रा से ध्यान करते थे। गोरखनाथ जी ब्रह्मचर्य का पालन कर रहे थे।

इनकी दिशा देने वाले ब्रह्मचारी हुए। पर आज गृहस्थ में योग की बात कर रहे हैं। वो कामयाब नहीं होंगे। उसके लिए धीरता की जरूरत पड़ती है। साहिब तो कह रहे हैं—

जहाँ भोग तहाँ योग विनाशा॥

...पर इस मुद्रा से आत्म ज्ञान नहीं मिलेगा। आदमी के शरीर में काफ़ी ताक़तें भरी पड़ी हैं। इसे नारायणी चोला कहा जाता है। इसमें सब कुछ है। जब तीसरे तिल की कोशिकाएँ जागती हैं तो बड़े आलोकिक रहस्य दिखाती हैं।

हम चिकित्सा विज्ञान के युग में जी रहे हैं। रोम-रोम की डॉक्टरों ने ख़बर ली है, पर वैज्ञानिक मानव तन की कोशिकाओं का पूरा रहस्य नहीं जान पाए। कोशिश कर रहे हैं, पर गहराई में नहीं जान पाए अभी। तो कह रहे हैं कि चाचरी मुद्रा में बड़ी अनुभूतियाँ होती हैं। चाबी ताले को खोलती है। ऐसे ही ध्यान कोशिकाओं को खोलता है। साधक को तब ज्ञान हो जाता है। जब कोशिकाएँ खुलती हैं तो बड़ी सिद्धियाँ प्राप्त हो जाती हैं, बड़े ब्रह्माण्ड दिखते हैं, अलख ब्रह्म दिखता है। तभी योगी अलख ब्रह्म की बात कर रहे हैं। वो प्रकाश इतना है कि इसे ही परमात्मा माना गया।

भूचरी मुद्रा

शब्द ओंकार भूचरी मुद्रा, त्रिकुटी है अस्थाना।

व्यासदेव ताको पहिचाना, चाँद सूर्य सो जाना॥

व्यास जी ध्यान करते थे—आज्ञा चक्र में। यहाँ ध्यान रोकने से यहाँ की नाड़ियाँ खुलती हैं। ‘कर नैनों दीदार महल में प्यारा है।’ जब यहाँ पर पूरा ध्यान एकाग्र होता है तो बड़े नज़ारे दिखते हैं। जब कोई समस्या आती है तो ध्यान यहीं पर रोक कर आप बैठ जाते हैं। यानी कहीं यहाँ पर समस्या का हल है। इनको ओपन करता है—ध्यान। ध्यान मास्टर की (Master Key) है, इसलिए—‘ध्यान ही वेद शास्त्र कहत हैं, ध्यान ही वेद बखाना।’ आज भी हमारे देश में बहुत लोग यहाँ ध्यान रोक रहे हैं। ये तो कोशिकाएँ खुलीं। इन्हें जगाया गया, पर आत्मा नहीं जगी। साहिब की गोरख से गोष्ठी हुई तो साहिब ने कहा कि योग तो करो, पर जब इड़ा-पिंगला, सुषुम्ना सब नष्ट हो जायेंगी तब कहाँ ध्यान रोकोगे! ‘इड़ा विनशे, पिंगला विनशे, विनशे सुषुम्न नाड़ी। कहें कबीर सुनो हो गोरख, कहाँ लगाइहों ताड़ी॥’ इसका मतलब है कि इन नाड़ियों का नाश हो जाता है। कहा—हे नाथ जी! तब कहाँ जायेंगे!

अगोचरी मुद्रा

सोहंग शब्द अगोचरी मुद्रा, भँवर गुफा अस्थाना।

शुकदेव ताको पहिचाना, सुन अनहद की ताना॥

अगोचरी मुद्रा भूचरी से उत्तम है। अब वो जाकर भँवर गुफा में बैठ जाते हैं। चेतना को पूर्ण एकाग्र करके वहाँ ला रहे हैं। सुरति का खेल है। बंकनाल ऐसा बिन्दु है कि वहाँ पहुँचने पर मन की स्फुरना कम हो जाती है। वहाँ चेतना खूब है। आनन्द भी खूब है। कुछ शब्द सुरति अभ्यास भी कह रहे हैं। अन्दर धुनें हैं, उनमें खो जाता है। कुछ इसे पराकाष्ठा कह रहे हैं, पर इससे तुरीयातीत से पार नहीं जा सकते हैं। सबका अपना वजूद है। धुनें खुद खत्म हो जाती हैं। **‘जाप मरे अजपा मरे, अनहद भी मर जाय। सुरति समानी शब्द में, उसको काल न खाय।’** फिर यह कौन सा शब्द हुआ! यानी धुनात्मक शब्द नहीं है, वर्णनात्मक शब्द भी नहीं है। साहिब कह रहे हैं—**‘सो तो शब्द विदेह।’** आवाज़ रहित धुन है वो। क्योंकि— **‘दो बिन होय न अधर अवाज़ा।’** आवाज़ दो के बिना नहीं होती और यहाँ द्वैत आ गया, वहाँ माया है। बंकनाल बड़ी निर्मल अवस्था है। आज भी देश में बहुत लोग यह चीज़ कर रहे हैं।

उनमुनि मुद्रा

सत् शब्द सो उनमुनि मुद्रा, सोई आकाश सनेही।

तामें झिलमिल जोत दिखावे, जाना जनक विदेही॥

शुकदेव को राजा जनक को गुरु धारण करना पड़ा था, क्योंकि उनमुनि मुद्रा के विशेषज्ञ थे।

खेचरी मुद्रा

ररंकार खेचरी मुद्रा, दसवां द्वार ठिकाना।

ब्रह्मा विष्णु महेश्वर देवा, ररंकार को जाना॥

फिर इन सबसे ऊपर पाँचवीं मुद्रा खेचरी है। इसमें 10वें द्वार को खोल के जाना होता है। इसमें पारंगत हैं—त्रिदेव। लोग आलोचना कर रहे हैं, हम कह रहे हैं कि चिंतन करो। मानव तन में दिव्य रहस्य भरे हैं।

शिव गोरख सो पच-पच हारे, इस काया का भेद ना पाए॥

इससे सुषुम्ना नाड़ी को खोल महाशून्य तक जाते हैं, महाशून्य तक को अनुभव कर सकते हैं। 10वाँ द्वार खुलने से कहीं भी विचरण करने की क्षमता आ जाती है। पर साहिब कह रहे हैं—

सिध साध त्रिदेवादि ले, पाँच शब्द में अटके ।

मुद्रा साध रहे घट भीतर फिर औंधे मुँह लटके ॥

तो सभी यहाँ तक पहुँचे। औंधे मुँह लटकने का मतलब है, फिर माँ के पेट में आना। यानी फिर जन्म होगा। पुनर्जन्म विद्यते। दुबारा जन्म होगा। माया फिर नीचे पटक सकती है।



90) प्रश्न : आत्मा सतलोक जाती है तो क्या यह दुनिया याद रहती है?

उत्तर : नहीं। बिलकुल याद नहीं रहती। कुछ ही देर में भूल जाता है कि कोई दुनिया भी थी, क्योंकि वहाँ परमानन्द में खो जाता है।



91) क्या सतलोक से इस दुनिया में लौटकर आने के बाद यह याद रहता है कि सतलोक है?

उत्तर : हाँ, यह बिलकुल याद रहता है। यदि यह याद न होता तो मैं आपको कैसे बताता कि ऐसे वहाँ प्रकाश है, जो सांसारिक प्रकाश से परे है, आत्मा ऐसे आनन्द में रहती है। पर आप भूल चुके हैं, क्योंकि बहुत समय से मन-माया के बीच रहते-रहते भूल चुके हैं। मैं तो कहता हूँ कि आपने जितने भी जन्म लिए हैं, वो सब आपको याद हैं, पर याद रहते हुए भी याद नहीं हैं। आप भूल गये हैं। नाना योनियों में चक्कर काटते-काटते भूल चुके हैं।



92) प्रश्न : आत्मा सतलोक जाती है तो कैसा लगता है?

उत्तर : जब आत्मा सतलोक जाती है तो बहुत पीछे से यह याद आ जाता है कि यही तो मेरा घर है। यह थोड़ा लगता है कि वाह, कैसा है। वहाँ पहुँचने पर याद आ जाता है कि मैं तो यहीं का था। वहाँ सब पहचान वाले मिलते हैं। परम पुरुष को देखने पर ऐसा नहीं लगता है कि पहली बार मिले हैं। वहाँ ठीक ऐसा लगता है, जैसे सपना देखने वाले को सपने की चीजें सच्ची लगती हैं, पर जब जगता है तो हँसता है कि यह तो मिथ्या

था। इसी तरह वहाँ पहुँचने पर लगता है कि मैं तो यहीं का था, पर झूठी दुनिया में चला गया था।



93) प्रश्न : शरीर से निकलने पर चित्त तो यहीं रह गया, दिमाग तो यहीं रह गया, फिर कैसे कुछ देर तक याद रहा कि कोई दुनिया थी और कैसे वहाँ से आने पर यह याद रहा कि कोई अमर लोक है?

उत्तर : वो मूल सुरति है। उसी से सब याद रहता है। यही चौंकाने वाली बात है। एक चेतना है, चाहे कहीं भी चले जाओ, होती है। सत्लोक में मन, बुद्धि, चित्त आदि भी नहीं हैं तो फिर वहाँ की बातें कैसे याद रहीं। यह अजीब बात है। चाहे किसी भी अवस्था में चले जाओ, मूल सुरति रहती है। आदमी का शरीर छूट गया, स्वर्ग में चला गया तो पता चलता है कि फलाना हूँ। पितर लोक में चला गया तो भी पता चलता है कि फलाना हूँ, वहाँ मेरा घर है, फलानी मेरी बीबी है, मेरे इतने बच्चे हैं। कभी-कभी आपकी दादी-नानी स्वप्न में आती है, पता चलता है। वो स्वप्न नहीं होता है। मौत के बाद भी याद रहता है। इस तरह सत्लोक जाने के बाद भी कुछ देर तक याद रहता है कि कोई दुनिया थी और लौटकर आने पर पूरा याद रहता है कि सत्लोक है। यानी एक याददाश्त है। वो खत्म नहीं होती है।

गीता में कहा-हे अर्जुन, इस आत्मा की आँखें नहीं हैं, फिर भी सभी दिशाओं से देख सकती है। हे अर्जुन, इस आत्मा की टाँगें नहीं हैं, फिर भी सभी दिशाओं से चल सकती है। हे अर्जुन, इस आत्मा को मुँह नहीं है, फिर भी सभी दिशाओं से बोल सकती है।

जैसे बिना पैरों के चला जा रहा है, बिना मुँह के बोला जा रहा है, बिना आँखों के देखा जा रहा है, वही चीज़ बिना दिमाग के भी याद कर रही है।



94) प्रश्न : कबीर साहिब ने भी तो कई जगहों पर राम का नाम लिया है। यदि वो सगुण, निर्गुण भक्तियों से परे की बात कहे हैं तो फिर किस राम की बात किये हैं?

उत्तर : साहिब ने चार राम बोले। संतों की दुनिया सबसे निराली रही है।

संतों ने उस परम-सत्य की बात समझाने के लिए संसार को संसार ही की भाषा में समझाया है। **कहीं-कहीं संतों ने राम**, शब्द का इस्तेमाल भी किया है, पर 'राम' से उनका मतलब 'साहिब' से ही रहा है। इसलिए भ्रमित न होना। चार राम की बात बताते हुए साहिब ने इसे स्पष्ट भी किया है।

साकार राम दशरथ का बेटा। निराकार राम घट घट में लेटा।

बिंदू राम जिन जगत पसारा। निरालंब राम सबही ते न्यारा ॥

यानी जिस राम को सारी दुनिया पूज रही है, कहीं संतों को भी उसी का उपासक बता रही है, वो तो साकार राम की कोटि में है। फिर कहीं-कहीं संतों को निराकार राम का उपासक बताया जा रहा है, पर वो दूसरी, निराकार राम की कोटि में है। तीसरा राम वीर्य है, जिससे सृष्टि का पसार है। लेकिन संतों का राम चौथा है, जो निरालंब है। वो जन्म-मरण में अवतार धारण करके नहीं आता। उसे ही सब संतों ने 'साहिब' पुकारा है।

कुछ सगुण-निर्गुण भक्ति के जो शब्द संतों की वाणी में मिलते हैं, वो इसलिए कि उन्होंने कबीर साहिब से नाम पाने से पहले निरंजन की भक्ति की थी।

फिर कहीं-कहीं संतों ने योग आदि के रहस्यों की बात भी की है, अंदर में होने वाली धुनों की बात भी की है, 10वें द्वार की बात भी की है। तो लोग समझ लेते हैं कि संतों ने योग का महत्व बताया है। नहीं, संतों ने यह सब योग आदि की पहुँच बताने के लिए कहा है। यह सब बताते हुए उन्होंने 'सार शब्द' का महत्व बताया है, जो अन्दर में होने वाला शब्द नहीं है, जो निःशब्द शब्द कहा जाता है। इसलिए संतों की वाणी में आंतरिक धुनें और आंतरिक खेल के वर्णन से भी भ्रमित नहीं होना है। **बस, इतनी-सी बात समझ लेना** कि संतों ने इस तीन-लोक को काल का देश बताते हुए एक अमर-लोक की बात की है, जिसकी राह आत्मा के भीतर सुरति से ही है, इसलिए बाहर भटकने की ज़रूरत नहीं है और उस रास्ते की कुंजी सार-शब्द (नाम) है, जो केवल संतों के पास है।

एक राम दशरथ का बेटा। एक राम घट घट में लेटा।।
 एक राम जिन सकल पसारा। एक राम है सबसे न्यारा।।

दुनिया जिस राम को जानती है, उस राम की बात साहिब ने नहीं की। वो सबसे न्यारा राम है। उसकी बात की है।

सार नाम सत्य पुरुष कहाया।।



95) प्रश्न : यदि कोई परम पुरुष है तो धर्म शास्त्रों में सत्य पुरुष की बात क्यों नहीं है?

उत्तर : धर्म शास्त्र सब निरंजन की वाणी से निकले। कबीर साहिब की वाणी स्वयं उनकी वाणी है। उसमें अपना मत मिलाकर निरंजन ने जो वाणी संसार में फैलाई, वो वेद की वाणी हुई। जीवों को अपने जाल में फँसाए रखने के लिए परम पुरुष का भेद छिपाना जरूरी था, इसलिए उसने वहाँ अपनी ही महिमा कही, परम पुरुष का भेद नहीं दिया। फिर उसी में से सब निकला। इसी कारण परम पुरुष का भेद उसमें नहीं है।

वेद चारों नहीं जानत, सत्पुरुष कहानियाँ।

वेद को तब मूल नाहीं, अकथ कथा बखानियाँ।।



96) प्रश्न : सत्संग और कथा में क्या अंतर है?

उत्तर : कथा यानी जो कथ चुका। फलाने ने फलाने को मारा और फलाने ने फलाने को। इससे आत्मा का कल्याण होगा क्या! नहीं, कथाएँ सुनकर आत्मा का कल्याण नहीं हो सकता है, क्योंकि कथा बुद्धि से संबंध रखती है। दूसरी ओर सत्संग आत्मा से निकलने वाली वाणी है। इसलिए संतों ने सत्संग की बात कही।

बिन सत्संग विवेक न होई।।



97) प्रश्न : स्वर्ग क्या है?

उत्तर : स्वर्ग निरंजन के तीन लोक के अन्दर वो स्थान है, जहाँ पर मनुष्य संसार पर किये गये कर्मों का फल भोगने कुछ देर के लिए भेजा जाता

है। स्वर्ग की तीन श्रेणियाँ हैं—नीचे का स्वर्ग, मध्यम स्वर्ग और ऊपर का स्वर्ग। नीचे के स्वर्ग में सुख है। पर मध्यम में अधिक सुख है और ऊपर के स्वर्ग में तीनों की तुलना में सबसे ज़्यादा आनन्द है। न तो यह कोई आत्म लोक है, न यहाँ आत्मा का साक्षात्कार है। वहाँ भी एक शरीर है, पर वो पंच भौतिक शरीर न होकर सूक्ष्म शरीर है। मनुष्य स्वर्ग में जाना चाहता है, पर विचार कोई नहीं करता है कि देवतागण मानव-तन पाना चाहते हैं यानी वहाँ कुछ कमी होगी न!

एक बार दुर्वासा ऋषि मृदुगल ऋषि पर प्रसन्न हो गये, वरदान दे दिया कि स्वर्ग की प्राप्ति हो। देवदूत विमान लेकर आए, कहा कि चलो। स्वर्ग से लेने आए हैं। मृदुगल ने कहा कि पहले बताओ, स्वर्ग कैसा है? देवदूत ने स्वर्ग के सुखों का बखान करना शुरू किया, कहा कि वहाँ चारों ओर सुंदर-सुंदर बगीचे हैं जहाँ अनेक प्रकार के सुंदर और खुशबू देने वाले फल लगे हैं, फूल लगे हैं। जिस फल की इच्छा हो, खा सकते हैं। वातावरण बड़ा प्यारा है। स्थान-स्थान पर सुंदर-सुंदर झरने बह रहे हैं। वहाँ रोग आदि का दुख भी नहीं है। हरेक के गले में महक देने वाली फूलों की मालाएँ पड़ी हैं। देवदूतों ने कहा कि धरती पर ऐसा सुख नहीं है। स्वर्ग में बड़ा सुख है।

मृदुगल ऋषि बड़े चिंतनशील थे, पूछा—हे देवदूत, मुझे बताओ कि स्वर्ग में अभाव क्या है, कमियाँ क्या हैं? देवदूत ने कहा कि वहाँ तीन बड़ी कमियाँ हैं। पहली कमी यह है कि वहाँ ईर्ष्या है। क्योंकि स्वर्ग तीन प्रकार के हैं, तीन श्रेणियाँ हैं। जो उच्च श्रेणी में रहने वाले हैं, उनके सुखों को देखकर निम्न वालों को ईर्ष्या होती है। दूसरी कमी है कि वहाँ भय है। वहाँ सबके गले में फूलों की मालाएँ पड़ी हुई हैं। कर्म क्षीण हो जाते हैं अर्थात् शुभ कर्म समाप्त हो जाते हैं तो फूलों की माला कुम्हलाने लगती है। यह संकेत है, चेतावनी है कि पुनः मृत्युलोक जाने की तैयारी करो। तब वो डरने लगता है। फिर तीसरी कमी है कि वहाँ कोई उन्नति नहीं है, क्योंकि शुभ कर्मों का फल भोगने ही वहाँ जाते हैं। कोई नया कर्म वहाँ नहीं किया जा सकता है। यह बताकर देवदूत चुप हो गये। मृदुगल ने कहा—हे देवदूत, मैं ऐसे निकृष्ट स्वर्ग में नहीं जाना चाहता। उससे तो यह

मृत्युलोक ही ठीक है। मैं महानिर्वाण की प्राप्ति करना चाहता हूँ, उस अनन्त को पाना चाहता हूँ, जहाँ से वापिस नहीं आना पड़ता है। हे देवदूत, तुम लौट जाओ। मृदुगल ऋषि स्वर्ग नहीं गये।

वास्तव में स्वर्ग भी एक धोखा है। वो आत्मा के साक्षात्कार में सहायक नहीं।



98) प्रश्न : क्या स्वर्ग और नरक की व्यवस्था निरंजन ने की है?

उत्तर : हाँ, स्वर्ग और नरक की व्यवस्था निरंजन की है। स्वर्ग का झूठा सुख देने वाला भी यही है और नरक की यंत्रणा देने वाला भी यही है। अत्यंत आनन्दमयी आत्मा को बच्चे के खिलौने की तरह स्वर्ग का छोटा-सा झूठा सुख इसलिए दिया जाता है ताकि उसी की प्राप्ति के लिए प्रयास करता रहे और अपने मूल परम आनन्द को भूला रहे, प्रयास भी न करे। दूसरी ओर सप्त कुंभी नरक हैं, जहाँ जीवों को कर्मानुसार ऐसे-ऐसे कष्ट दिये जाते हैं, ऐसी-ऐसी सज़ाएँ दी जाती हैं, जिन्हें संसार का कोई भी शिष्ट आदमी मंज़ूर नहीं कर सकता है। कहीं गर्म तेल की कड़ाई में डाला जाता है, कहीं लोहे की गर्म स्त्री से चिपकाया जाता है, कहीं मल-मूत्र के घड़े में फेंका जाता है, कहीं उबला हुआ तेल पिलाया जाता है, कहीं काँटों पर चलाया जाता है। आप सांसारिक दृष्टि से ही विचार करें कि क्या आप अपने बच्चे को, चाहे वो कोई अपराध भी कर ले, ऐसी यात्नाएँ देंगे। अपने बच्चे को छोड़ो, किसी दूसरे के लिए भी ये यात्नाएँ शिष्ट आदमी नहीं चाहेगा। खुद ही तो विचार कर लो न कि क्या वो परम पुरुष अपनी ही अंश आत्माओं को भला नरक की ऐसी भयानक यात्नाएँ क्यों देगा!



99) प्रश्न : दिव्य दृष्टि कहाँ है? यह कैसे खुले?

उत्तर : यह दिव्य दृष्टि सबके पास है। हम महापुरुषों के पास जाकर कहते हैं कि थोड़ा देखकर बताओ कि हमारा काम होगा या नहीं? क्या चश्मा लगाकर देखें? नहीं। यानी हम सीधा यह कह रहे हैं कि दिव्य-

दृष्टि से देखकर बताओ। यह दिव्य-दृष्टि आपके पास भी है। इसी से आप परमात्मा को देख सकते हैं। कोई कहता है कि यह दिव्य-दृष्टि आज्ञाचक्र में है, कोई कहता है कि तीसरे तिल में। कोई कहीं तो कोई कहीं पर बता रहा है। यह एक रहस्य है। वास्तव में यह दिव्य-दृष्टि आपकी सुरति के अन्दर है, इसलिए हम सुरति योग बोल रहे हैं। जब हमारा ध्यान पूर्ण एकाग्र हो जाएगा, तब यह दिव्य-दृष्टि खुलेगी। पर जब भी हम ध्यान को एकाग्र करना चाहते हैं, कोई हमें एकाग्र नहीं होने दे रहा है। यदि हम पूरा एकाग्र हो जायेंगे तो आत्म साक्षात्कार हो जाएगा, दिव्य दृष्टि खुल जाएगी। पर्दे के पीछे बैठकर मन हमारे ध्यान को संसार में भ्रमित कर रहा है। इसने दिव्य दृष्टि को सांसारिक कार्यों में उलझा दिया है। हर काम को करने के लिए सुरति की जरूरत पड़ती है। सुरति बाहर संसार में घूम रही है। इसी का दूसरा अंग निरति शरीर में फँसी है। जब दोनों एक हो जायेंगे तो दिव्य दृष्टि खुल जाएगी। यह एक स्थिति है, जो बनानी पड़ती है। सुरति को बाहर से खींचकर और निरति को शरीर से ऊपर उठाकर दोनों को एक स्थान पर मिलाना होता है।

जैसे आँख में मोतियाबिंद आ जाता है तो आँख में देखने की क्षमता होते हुए भी कुछ दिखाई नहीं देता है। इसी तरह मन मोतियाबिंद की तरह है, जो अन्तर दृष्टि के ऊपर छा गया है। जब दिव्य-दृष्टि खुल जाएगी तो मन की हकीकत नज़र आएगी। और दिव्य-दृष्टि तभी खुलेगी जब परम एकाग्र होकर सुरति और निरति दोनों एक कर लोगे।



100) प्रश्न : सहज समाधि क्या है?

उत्तर : सहज समाधि यानी कुछ भी क्रिया नहीं करना। सहज कहते हैं—आसान। योग की प्रक्रिया कठिन है। योग मुश्किल है। साहिब कह रहे हैं कि योग न करें। सहज समाधि से काम बनेगा। हम जो जाप कर रहे हैं, यह भी तो कठिन है। कुछ क्रिया न करना। वास्तव में सहज मार्ग आसान नहीं है। इसका मतलब है कि कुछ भी क्रिया नहीं करना।

सहज समाधि को समझने के लिए पहले समझना होगा कि योगी

क्या करते हैं। वो पहले व्रत रखते हैं। फिर चक्र शोधन करते हैं। मल विसर्जन करते हैं। 6 चक्रों को साफ करते हैं। पानी के टब में बैठते हैं, गुदा में वस्त्र डालकर सफाई करते हैं। फिर शिशन को दूध से साफ करते हैं। शिशन से दूध खींचते हैं, छोड़ते हैं। 9 अंगुल लंबा धागा लेकर शिशन में डालते हैं, पेशाब को बाहर करते हैं। फिर 7 हाथ लंबी धोती लेकर निगलते हैं, बाहर निकालते हैं। फिर उसे पानी से धोते हैं। यह क्रिया 3 बार करते हैं। फिर आंते साफ करते हैं। फिर कंठ साफ करते हैं। हृदय में चिकनाई है, उसे साफ करते हैं। अनहद चक्र शोधन करते हैं। फिर जो स्वर चल रहा हो, उससे पानी खींचकर दूसरे से निकालते हैं और आज्ञा चक्र की सफाई करते हैं। फिर आसन में बैठकर स्वांस को ऊपर चढ़ाते हैं, सुषुम्ना को खोल देते हैं। प्राणों का निग्रह करते हैं। प्राणों में आत्मा है। पूरी क्रिया रोक देते हैं। यह क्रिया बहुत मुश्किल है। इसलिए योगी किसी को नहीं मानता है। वो आत्मा को मानता है। यह कठिन है। कितने लोग कर पायेंगे! बहुत बहुत बहुत थोड़े। पहले 2 दिन भूखा रहना है, फिर 1 दिन ये क्रियाएं करनी हैं, फिर ध्यान में बैठना है। तब तक चक्कर खाकर गिर पड़ोगे।

प्राणों में आत्मा है। मैं जो सहज योग बता रहा हूँ, वो क्या है? मैं कह रहा हूँ कि स्वांस-स्वांस से सुमिरन करना। चक्र शोधन नहीं बता रहा हूँ। जैसे स्वांस से सुमिरन करेंगे, कफ हट जायगा और स्वांसा उल्टी चलेगी। यह सहज योग है। स्वांसा ऊपर चलेगी तो आप समाधि अवस्था में आ जायेंगे।



101) प्रश्न : एक गुरु को छोड़कर दूसरा गुरु करना अपने पति को छोड़कर दूसरे पति के पास जाने वाली बात नहीं है क्या?

उत्तर : यह सवाल तब उठता है, जब आप सद्गुरु को छोड़कर अन्यान्य भक्तियों में लग जाएँ। काल पुरुष की भक्ति देने वाले गुरु को छोड़कर सत्य भक्ति देने वाले सद्गुरु की शरण में आना तो गैर को छोड़कर अपने सही पति की शरण में वापिस आने वाली बात है, दूसरे पति के पास जाने वाली बात नहीं।

यहाँ आपको विचार करना है कि क्या आप अपने पति (सच्चे परमात्मा, साहिब) की भक्ति कर रहे हैं या पराए की। साहिब ने त्रिदेव, साकार, निराकार, ईश्वर, ओम, हरि, भगवान अथवा सगुण भक्ति (वर्णनात्मिक शब्द) और निर्गुण भक्ति (धुनात्मिक शब्द) आदि सबसे परे बता दिया। यह भक्तियाँ तो काल के दायरे में रहीं। इनमें से किसी को भी जीव का सच्चा पति नहीं कहा। जीवात्मा का सच्चा पति उसका अंशी परम पुरुष है। इसका मतलब है कि दुनिया सच्चे पति की भक्ति नहीं कर रही है और जो गुरु पराए पति की ओर ले जा रहा है, जो उसे उसके प्रियतम से नहीं मिला सकता है, उसी की शरण में रहना चाहती है, उसे छोड़कर सच्चे गुरु के पास नहीं आना चाहती है और कहती है कि अपने पति को छोड़कर दूसरे के पास नहीं जाना है। अपना पति कौन है, यही मालूम नहीं है। यहीं पर भूल हो रही है। बाकी यह कहना कि अपने पति को छोड़कर पराए पति की तरफ नहीं जाना है, यह बात तो बड़ी अच्छी है। पर सत्य यह है कि अपने पति को नहीं पहचान पा रही है। दादू दयाल तो कह रहे हैं—

पुरुष हमारा एक है, हम नारी बहु अंग॥

साहिब तो कह रहे हैं—

जब तक गुरु मिले नहीं साँचा।

तब तक करो गुरु दस पाँचा॥



102) प्रश्न : संत सद्गुरु भी तो एक इंसान हैं, फिर वो मरने के बाद शिष्य की आत्मा को अमर लोक ले जाने के लिए कैसे आ सकते हैं?

उत्तर : जो संत सद्गुरु को मनुष्य करके जान रहा है, वो मूर्ख है। जिस सद्गुरु से आपका नाता है, वो अष्टम चक्र पर बैठा हुआ है। वो शरीर नहीं है। वो शरीर का पर्दा करके चल रहा है, क्योंकि अगर पर्दा नहीं रहेगा तो निरंजन का देश खत्म हो जाएगा। कोई भी जीव यहाँ नहीं बचेगा। सब अमर लोक चले जायेंगे। उस रूप में इतना आकर्षण है कि

अगर पर्दा हटा दिया तो सब उसी में समा जायेंगे। इसलिए यह काम नहीं करना है। उसका देश खाली नहीं करना है। युक्ति-युक्ति से शरीर रूपी पर्दा करके जीव को समझाना है। जो समझ जाए, वो चल पड़े। वो इसी शरीर के माध्यम से आपको समझा रहा है, इसलिए उसके इसी रूप का ही ध्यान करना है और परम पुरुष और सद्गुरु में भेद नहीं समझना है। अंत समय में वो विदेह रूप में लेने आयेगा।



103) प्रश्न : जो अवतार आदि संसार में हुए, क्या वो परमात्मा के अवतार नहीं थे?

उत्तर : वो सब माया थी। सब निरंजन के अवतार थे। उसी का देश है। अपनी महिमा को बनाए रखने के लिए यह सब किया गया है।

दुनिया कह रही है कि वो अवतार धारण करके संसार में आता है, पर साहिब कह रहे हैं—

दशरथ कुल औतर नहीं आया। नहीं लंका के राव सताया॥
पृथ्वी रमण धमन नहीं करिया। पैठि पाताल न बलि छलिया॥
...ई सब काम साहिब के नाहीं। झूठ कहै संसारा॥

ये सब काम साहिब के नहीं हैं, निरंजन के हैं। साहिब किसी से छल नहीं करता। वो किसी को नहीं मारता।

है दयाल द्रोह न वाके , कहु कौन को मारा॥

यह सारा पसार उसी निरंजन का है।

जन्म मरण से रहित है , मेरा साहिब सोय।
बलिहारी उस पीव की, जिन सिरजा सब कोय॥

कोई पारखी ही उसे समझ सकता है। वो परम-पुरुष ही आत्मा का सच्चा प्रियतम है। साहिब कह रहे हैं—

आवै न जावै मेरे नहिं जनमे, सोई निज पीव हमारा हो।
ना कोई जननी ने जन्मो, ना कोई सिरजनहारा हो॥
साध न सिद्ध मुनि ना तपसी, ना कोई करत अचारा हो।
ना षट दर्शन चार वर्ण में, ना आश्रम व्यवहारा हो॥
ना त्रिदेवा सोहं शक्ति , निराकार से पारा हो।

शब्द अतीत अचल अविनाशी, क्षर अक्षर से न्यारा हो ॥
 ज्योति स्वरूप निरंजन नहीं, ना ओम ओंकारा हो ।
 धरति न गगन पवन ना पानी, ना रवि चंद न तारा हो ॥
 है प्रगट पर दीसत नहीं, सतगुरु सैन सहारा हो ।
 कहैं कबीर सब घट में साहिब, परखो परखनहारा हो ॥

शब्दों की तरफ ध्यान दें। कह रहे हैं कि जो हमारा सच्चा प्रियतम है, वो जन्म-मरण से परे है, संसार में आता-जाता नहीं यानी वो माता के पेट से अवतार धारण करके नहीं आता। उसका कोई माता-पिता नहीं है और न ही उसे किसी ने बनाया है। वो न सिद्ध है, न साधु, न तपस्वी और न ही वो संसार के आचार करता है। वो इनमें से भी कोई नहीं है और षट्-दर्शन, चार वर्ण आदि से भी परे है। वो चार आश्रम से भी परे है यानी वो न जवान होता है, न बूढ़ा होता है, न वो बच्चा है। उसकी कोई उम्र नहीं है। वो त्रिदेव में से कोई भी नहीं है, वो सोहं भी नहीं है; वो शक्ति भी नहीं है। वो तो निराकार से भी परे है। वो शब्द (निःशब्द शब्द) स्वरूपी अचल और अविनाशी है। वो माया और ब्रह्म से भी न्यारा है। वो ज्योति-स्वरूप निरंजन भी नहीं है और 'ओम' भी नहीं है। वो धरती, आकाश, हवा, पानी आदि तत्वों से भी कोई नहीं है और सूर्य, चाँद, तारों से भी परे है। वो सबमें है, पर दिखाई नहीं देता। सद्गुरु के शब्द ही उसका बोध दे सकते हैं। वो साहिब तो सबके घट में रहने वाला है। कोई पारखी ही उसे परख सकता है।



104) प्रश्न : यदि यह संसार स्वप्नवत् है तो यहाँ पर जो हम सूर्य, चाँद तारे आदि देख रहे हैं, वो भी स्वप्नवत् हुए न। फिर गुरु भी तो स्वप्नवत् हुआ न? फिर सत्य क्या है?

उत्तर : यह संसार स्वप्नवत् है, क्योंकि यहाँ कुछ भी नित्य नहीं है। ये भौतिक आँखें झूठी हैं, इसलिए इनसे आप जो भी देख रहे हैं, सब झूठ है, सब स्वप्नवत् है। यह स्वप्न बहुत लंबा है। साहिब कह रहे हैं—

चन्द्र सूर्य भास स्वप्न, पंच में प्रपंच स्वप्न,

स्वर्ग औ नर्क बीच बसै सोऊ स्वप्न रूप है ।

चाँद और सूर्य का आभास भी स्वप्न है। जो स्वर्ग और नरक में रहने वाले हैं, वो भी स्वप्न में रह रहे हैं। वास्तव में जिस अवस्था में आप बैठे हैं, वो भी स्वप्न है।

**ओहं औ सोहं स्वप्न पिण्ड और ब्रह्माण्ड स्वप्न,
आत्मा परमात्मा स्वप्न रूप सो अरूप है ॥**

वाह, आत्मा-परमात्मा भी स्वप्न है। क्योंकि जब हंसा में मन समाया तो आत्मा कहा गया। मन के मिश्रण के बाद आत्मा नाम पड़ा, इसलिए यह शुद्ध चेतन सत्ता नहीं, इसलिए स्वप्न कहा। और परमात्मा निरंजन को कहते हैं। वो भी स्वप्न है।

**जरा मृत्यु काल स्वप्न, गुरु शिष्य बोध स्वप्न,
अक्षर निःअक्षर आत्मा स्वप्न रूप है ।**

लेकिन सद्गुरु स्वप्न नहीं है, क्योंकि वो तत्त्व सुरति में है। आगे साहिब कह रहे हैं—

**कहत कबीर सुन गोरख वचन मम,
स्वप्न से परे सत्य सत्य रूप भूप है ।
सोई सत्यनाम सत्यलोक बीच वासा करे,
नहीं कहूँ आवे नहीं जावे सत्यरूप है ॥**

वो सत्यनाम ही सत्य है, क्योंकि उसका वास उस अमर-लोक में है, जो कभी नष्ट नहीं होता। वहाँ मन का वजूद नहीं है, वहाँ मन की इच्छा नहीं है, वो मन की सीमा से बाहर है, इसलिए उसे सत्य कहा।



**सन्तो सो सतगुरु मोहि भावे, जो आवागमन मिटावै ।
द्वार ना मूदे पवन न रोके, न अनहन उरझावे ॥**

जौन भेद में मैं बसौ । वेदौ जानत नाहिं ।।

कुरान शरीफ कह रहा है 'बेचूना खुदा'। बेचूना अर्थात् निराकार। ईसा मसीह भी कह रहे हैं मेरा आकाशी पिता (स्वर्गीय पिता) मैं उसका इकलौता पुत्र हूँ। अकाशी पिता अर्थात् निराकार। वेद भी निराकार की बात कह रहा है। **जेजे दृश्यम् तेते अनित्यम्। जेजे अदृश्यम् तेते नित्यम्।** यानि निराकार। हमारे सभी धार्मिक ग्रन्थ भी निराकार तक की बात कहते हैं। भाईयो जह निराकार सत्ता वाला जिसको लोग रब्ब कहते हैं, वह 84 लाख योनियों का रचनहार है परन्तु योनियों को चेतन करने वाली जो ऊर्जा है सुरति है वो कोई और चीज है तभी तो इस सिरजनहार निराकार को कबीर साहिब जी बोल रहे हैं।

मन ही निराकार, निरंजन जानिए।

मुक्ति से सबका तात्पर्य निराकार की प्राप्ति। साहिब बन्दगी पंथ किसी की निन्दा नहीं करता। निराकार सत्ता को भी स्वीकार करता है, लेकिन आगे की बात का संकेत भी देता है। संत सम्राट् कबीर साहिब जी ने न्यारा कहा और निराकार सत्ता से आगे कहा। सगुण भक्ति, निर्गुण भक्ति अथवा पाँच मुद्राओं से आगे कहा।

इसके आगे भेद हमारा। जानेगा कोई जाननहारा ॥

कहे कबीर जानेगा सोई। जा पर दया सतगुरु की होई ॥

संतों ने आ कर तीन लोक से आगे परम निर्माण, अमर धाम, सत्य लोक अथवा दसवें द्वार से आगे 11वें द्वार का भेद संसार को दिया।

भाईयों साहिब बन्दी पंथ भी काल पुरुष के काया नाम और अमर लोक के विदेह नाम का अंतर समझा कर संसार को सत्य भक्ति की ओर ले जा रहा है।

काग पलट हंसा कर दीना। ऐसा पुरुष नाम मैं दीना।

अकह नाम, लिखा न जाई, पढ़ा न जाई।

बिन सतगुरु कोई नाहि पाई ॥

युगन युगन से हम चले आए

मुझे न जानने वाले मेरे निन्दकों से सुनकर कभी कहते हैं रँजड़ी वाला गुरू कहता है कि 'मैं ही सब कुछ हूँ'। यद्यपि मैंने ऐसा कभी नहीं कहा, पर उनकी इस बात में भी वज्रन है। हम ईमानदारी से चिन्तन करें तो मैं अपनी संगत, अपने नामियों को अपने इर्द-गिर्द ही तो घुमा रहा हूँ। इसलिए दूसरे लोग ऐसा समझ रहे हैं।

एक व्यक्ति ने मुझे फोन किया। वो बोला कि मधु परमहंस से बात करना चाहता हूँ। मैंने कहा, बोलो। वो बोला कि मधु परमहंस से बात करनी है। क्योंकि पहले पी.ए. ही उठाते हैं, फोन। फिर जरूरी हो तो आगे देते हैं, तो उसने सोचा कि पी.ए. होगा। मैंने कहा कि मैं बोल रहा हूँ। फिर भी वो बोला कि मुझे कुछ शक है। उसकी वाणी अच्छी नहीं थी। पहले तो दिल किया कि फोन रख दूँ, जिसे बात करने की तमीज़ ही नहीं तो क्या बात करनी। फिर विचार आया कि शायद इसका लहजा ही ऐसा है, सुन लेता हूँ। मैंने कहा कि कहो क्या शंका है? वो बोला कि आप कहते हैं कि आप कबीर का अवतार हैं, प्रूफ करो। मैंने कहा कि पहली बात तो यह है कि मैंने कभी ऐसा नहीं कहा है। वो बोला कि आपके शिष्य कहते हैं। मैंने उत्तर दिया कि मैं तो आपको भी कबीर ही मान रहा हूँ। जो एक शुद्ध चेतन सत्ता सबमें निवास कर रही है, उसे कबीर कहते हैं।

मूल नाम है अजर शरीरा। तनमन से गह सत्त कबीरा॥
जोई गहे धर्मदास कबीरा। सो पावे सुख सागर तीरा॥
काया बीर नाम है धीरू। सब घट रहे समाय कबीरू॥
निज ही शब्द कबीर है सारा। जाका है निज सकल पसारा॥
एकहि हम तुम एक शरीरा। एक शब्द है मति के धीरा॥

दूसर भाव नहीं है आसा। सोई कबीर सोई धर्मदासा ॥

‘सब घट रहा कबीर समोई।’ वो सब प्राणियों में है। मैंने कहा कि मैं आपको भी कबीर मान रहा हूँ। कबीर, जिसमें काया नहीं है। वो बोला कि दूसरी बात यह है कि जो आप कह रहे हैं कि जो चीज़ आपके पास है, वो कहीं नहीं है। मैंने कहा कि आप सबकी बात सुन रहे हैं न। मैं एक खालिस बात कर रहा हूँ। हम सबसे अलग हैं। उसे समझाया। यदि मैं कहता कि नाम के समय एक पाँवर दे देता हूँ तो उसे समझ नहीं आनी थी।

...तो उसने और भी सवाल पूछे। फिर वो जालन्धर सत्संग में आया। मैं यही बात सत्संग में बता रहा था तो वो खड़ा हो गया, कहा कि वो मैं ही हूँ। तब उसने मुझसे नाम लिया।

सद्गुरु रूप ‘कबीर’ तो केवल शब्द-नाम की महिमा समझाने संसार में आए और कहा -

केवल नाम निःअक्षर आई। निःअक्षर में रहै समाई ॥

निःअक्षर ते करै निवेरा। कहे कबीर सोई जन मेरा ॥

अमर मूल मैं बरन सुनाई। जिहिते हँसा लोक सिधाई ॥

शब्द भेद जाने जो कोई। सार शब्द में रहै समोई ॥

कबीर साहिब ने पृथ्वी लोक के सत्युग से पूर्व के 13 युगों का इस सृष्टि में आने का वर्णन शिष्य धर्मदास को सुनाया। (1) अघासुर युग, (2) बलभद्र युग, (3) द्वन्दर युग, (4) पुरवन युग, (5) अनुमान युग, (6) धीर्यमाल युग, (7) तारण युग, (8) अखिल युग, (9) विश्वायुग, (10) अक्षय तरण युग, (11) नन्दी युग, (12) हिण्डोल युग, (13) कंकवत युग। धर्मदास जी की अधीर जिज्ञासा से कबीर साहिब ने फिर कल्पयुग के चार युगों का वर्णन किया। बताया कि निरंजन काल ने पुनः-पुनः सृष्टि में जीवों की रचना कर संसार बनाया। जीवों को भयानक यातना देकर काल खाने लगा और जीवन-मरण का चक्र चलाया। जीवों की करुण पुकार परमपुरुष तक पहुँची। परमपुरुष ने ज्ञानी जी को ‘शब्द’ देकर पुनः-पुनः जीवों को सत्यलोक लाने भेजा।

(1) **सत्युग** – सत्युग में ‘सत्यसुकृत’ नाम से ज्ञानीजी (कबीर साहिब) कालपुरुष के लोक में आए। सत्युग की अवधि सत्रह लाख वर्ष थी। इस युग में मनुष्य 21 हाथ ऊँचे शरीर के थे। सत्युग में साहिब से राजा मित्र सेन की रानी चित्ररेखा ने नाम पाया। रानी के आग्रह पर राजा मित्र सेन ने भी शब्द ग्रहण किया और दोनों को सत्यलोक भेजा। दूसरा राजा वटक्षेत्र और तीसरे राजा हरचन्द को शब्द भेद धारण करवा कर निजलोक भेजा। चौथी मथुरापुरी में विकसी-ग्वालिन ने नाम पाया और सत्यलोक सिधारी। ये हँस गुरुवंश कहलाये जिन्होंने नामदान देकर नौ लाख हँसों को उबारकर अमरलोक ले गए।

(2) **त्रेतायुग** – त्रेतायुग में ज्ञानीजी को परमपुरुष ने हँसों को लाने भेजा। इस युग में वह ‘मुनिन्द्र’ नाम से आए। इस युग की अवधि बारह-लाख छियानवे हजार वर्ष बताई। मनुष्य 14- हाथ ऊँचे शरीर के थे। साहिब इस युग में ऋषि श्रृंगी, अयोध्या के लक्ष्मण जी और मधुकर, रावण की पत्नि मन्दोदरी, गुरु वशिष्ठ और दुर्वासा ऋषि ने ‘नाम’ शब्द पाया और सत्यलोक गए।

(3) **द्वापर युग** – इस युग में ‘करूणामय’ नाम से ज्ञानीजी मृत्यु लोक आए और जीवन अमरता का सन्देश दिया। द्वापर युग की अवधि साठ लाख चौंसठ हजार वर्ष थी। मनुष्य सात-हाथ ऊँचे शरीर का था। द्वापर युग में साहिब से राजा चन्द्र विजय की रानी इन्दुमति, राजा युधिष्ठिर, ऋषि पराशर, राजा धुँधुल, पारसदास व उनकी पत्नि ने ‘नाम अमृत’ पाया। गरूड़ जी को बोध देकर उन्हें विहंग शब्द दिया। हरिदास सुपच को ‘नाम शब्द’ प्रदान कर हँस बनाया। शुकदेव जी और विदुर जी ने ‘नाम’ ग्रहण किया। राजा भोज और राजा मुचकुन्द नाम पाकर पार लगे। राजा चन्द्रहास को और चार गोपी-ग्वालिनों को नाम शब्द से तारा। इन सबने गुरु-रूप होकर सत्यपंथ चलाया और बावन-लाख जीवों को मोक्षधाम भेजा।

(4) **कलियुग** – कलियुग में ज्ञानीजी को परमपुरुष ने जीवों को

चेताने भेजा जो 'कबीर' नाम से मृत्युलोक में आए। कलियुग की अवधि चार लाख बत्तीस हजार वर्ष है। मनुष्य की आयु सौ वर्ष तक और शरीर की ऊँचाई साढ़े-तीन हाथ तक की है। कलियुग में आयु निश्चित नहीं है। इस युग में भक्ति कम ही मनुष्य करते हैं। उल्टी चाल और उल्टा रहन-सहन होता है। साधु को देखकर साधु ही ईर्ष्या करते हैं, इसलिए चौरासी की योनियों में ही जाते हैं। इस युग में सत्य को कोई विरला ही पहचान पाता है। जो कोई साहिब का 'सत्य' शब्द ग्रहण करेंगे उनसे सब मन में जलेंगे। बहुत से भेषधारी साधु-महंत, ठगी, और झूठ का आचरण करेंगे। साधु स्वयं को संत बताकर माँगेंगे और विषय-वासना करेंगे।

कलियुग में सत्य से निज का परिचय कराया उनका वर्णन कबीर साहिब ने शिष्य धर्मदास से किया। (1) कलियुग में उत्पन्न हुए योगेश्वर गोरखनाथ को 'सत्य' समझाकर गर्वचूर किया। (2) अरबी के बहुत विद्वान शाह बलख बुखारा को सत्य का बोध कराया। (3) स्वामी रामानंद को गुरु बनाकर उन्हें गुप्त भेद बतलाया। (4) शेख पीर तकी के शिष्य बादशाह सिकन्दर लोधी को शरण में लिया। (5) शेख पीर तकी को अपना सच्चा रूप दिखाकर उसका गर्व चूर किया। (6) काशी के राजा वीरसिंह बघेल को सत्यशब्द दिया। (7) अवध के नवाब बिजली खान को अपना शिष्य बनाया। (8) कनकसिंध राजा को सोलह रानियों सहित सत्यनाम देकर अमरलोक पहुँचाया। (9) राजा भूपाल शरण में आए, उन्हें ग्यारह रानियों सहित मोक्ष दिया। (10) मिठाई वाली रतनाबाई अग्रवाल को सत्यनाम देकर निजलोक पहुँचाया। (11) अलीदास धोबी के साथ सात जीवों ने 'नाम' पाकर मोक्ष पाया। (12).....(13) मोहम्मद साहब को कुरान सुनवाया जिनसे एक हृद तक जीवों ने आदेश माना। (14) नानक देव जी को उपदेश देकर गुप्त भेद का सन्देश कहा। (15) दामोदर साहू को 'नाम' की महिमा से पार लगाया। इन सब हँसों को गुरु रूप परवाना (अधिकार) देकर पाँच लाख जीवों को मोक्ष दिलाया।

द्वापर युग में श्रीराम के कृष्ण अवतार जन्म लेने के पूर्व श्री विष्णु ने सोलह हजार गोपियों को उत्पन्न किया। सभी गोपियाँ सिंगार-विलास बनाकर हरी का ही गुणगान गा रहीं थीं। श्रीकृष्ण ने गोकुल में वासुदेव के पुत्र रूप में - भगवान का जन्म धारण किया। राजा कंस ने अपने शत्रु अवतार श्रीकृष्ण की आँखें फोड़ने की आज्ञा कागासुर को दी। जब बाल सखाओं के साथ श्रीकृष्ण के क्रीड़ा स्थल पर कागासुर पहुँचा तो उसे दुष्ट-रूप आया जानकर हरी ने उससे चिपटकर मार दिया। कागासुर की पत्नि पूतना जब मारने आई तो उसका स्तनपान कर उसका समस्त विष पीकर उसे मार दिया। इसी प्रकार ग्वालों के साथ खेलते हुए बकासुर ने घेरा तो उसे कृष्ण अवतार हरी ने पल में ही मार दिया। किसी दैत्य को जीवित नहीं छोड़ा। इन्द्र द्वारा सात दिन तक लगातार वर्षा करने पर पूरे पर्वत को अंगुली पर उठा लिया तब इन्द्रदेव ने क्षमा माँगी। एक बार कालिन्दी नदी के तट पर गाय-बछड़े चरा रहे थे। प्यास लगने पर जब गाय-बछड़े पानी पीने गए तो सबके शरीर में जहर जैसी हानि हुई। यह देखकर श्रीकृष्ण को अचम्भा हुआ तो उन्होंने स्वयं पानी पिया जिससे तन साँवला हो गया। इस पर श्रीकृष्ण ने नदी में जाकर कालिया नाग को नथकर पाताल में भेज दिया। श्रीकृष्ण के इस चरित्र के वास्तविक सत्य को वही जान सकेगा जिसे सद्गुरु मिला हो।

शिशुपाल को श्रीकृष्ण ने मारकर काल का ग्रास बनाया। हरि की समस्त लीलायें तीन लोकों के जन्म-मरण और बदला लेने के अवतार की हैं। इन्हीं को मनुष्य काल और हरी का धर्म मानकर हरि द्वारा मुक्ति दिया जाना जानता है। तीन लोकों के इन अचरज भरे खेलों के मायाजाल में भूलकर कोई भी चौथे लोक के परम सत्यपुरुष का ज्ञान नहीं पाता। अमरलोक जो हँस आत्मा का मूल स्थान है उसका पता तो केवल सद्गुरु ही देते हैं। परम मोक्ष पाकर किसी का कोई बदला, कर्म और लेना-देना शेष ही नहीं रहता, अवतार नहीं होता। देव और दैत्य अवतारों के कर्म, जन्म-मरण ही तीन लोकों के स्वामी निराकार निरंजन

का आवागमन विधान है।

साखी -

काल सबन को ग्रस्यो, वचन कहयो समझाय।

कहैं कबीर मैं का करौं, देख नहिं पतिआय॥

सब कुछ देखते हुए भी जीव मनुष्य देह पाकर भी देव-दैत्य लीला को ही मुक्ति धर्म मान रहा है। साहिब इस दुखी संसार और निरंजन के मायाजाल को समझाने युगों-युगों से सद्गुरु रूप धारण करके आते हैं। सारी दुनिया पाखण्ड के व्यवहार में ग्रस्त है। मूल छोड़कर छद्म रूपों की भक्ति से पार उतरने के सपनों में सब खोए हैं। कबीर साहिब चेतावनी देते हैं, साखी -

भूल परी सब दुनिया, पाखण्ड के व्यवहार।

मूल छाँडि डारै गहै, कैसे उतरे पार॥

श्रीहरी कृष्ण ने पाँचों पाण्डवों की सेवा से उनका हित रखकर कौरवों सहित पाण्डवों की सेना को यमदूतों का भोजन बना दिया। दानी कर्ण, गंगापुत्र भीष्म और गुरु द्रोणाचार्य सबको मार दिया। यह सब हरी द्वारा मतिभ्रम उत्पन्न करके ही कराया गया। केवल पाँचों पाण्डव बचे तब निरंजन ने श्रीहरी कृष्ण को ध्यान में सुरति से बुलाया। श्रीकृष्ण ने सुरति में बैकुण्ठ से आगे जाकर, जहाँ शून्य, सूर्य, चन्द्र आदि नहीं है अलख निरंजन का ध्यान किया। ध्यान में श्रीकृष्ण ने पुकारा, हे सबमें व्याप्त निरंजन। तुमने पाँच तत्व और शून्य को उत्पन्न किया है। तुम्हीं ब्रह्मा, विष्णु, महेश, आदि-अंत और देवादि हो। हे कृपानिधि अन्तर्यामी दया करके आगे आज्ञा दीजिए। तत्क्षण आकाशवाणी से श्रीकृष्ण को वाणी सुनाई दी, हे कृष्ण। अब जो कहा जा रहा है वह वचन धारण करो। तुम्हें असुरों को विध्वंस कर पृथ्वी का भार उतारने भेजा है। श्रीकृष्ण ने पूछा, हे पुरातन पुरुष। संसार में अब मेरा स्थान कहाँ है। निरंजन ने समझाया,

तुम मेरे अंश हो और मुझ में ही वास करते हो। संसार कालरूप निवास स्थान है। मृत्यु लोक में जो अन्यायी, पातकी, बलशाली हों उन्हें तुम छल-बल से मारो। इस तरह उत्पन्न और विनाश होते-होते अल्प अवधि वाला कलियुग आएगा। कलियुग में मनुष्य शरीर कमजोर और छोटी आयु का होगा। इस अवधि में तुम्हारी ही पूजा होगी। जैसा तुम चाहोगे वैसा ही होगा, इसलिए तुम्हें पृथ्वी लोक का राज दिया है। हे कृष्ण! शीघ्र जगन्नाथ में राज्य स्थापित करो क्योंकि कबीरदास के वहाँ आने से पहले तुम्हें शरीर छोड़ना होगा। श्रीकृष्ण को ध्यान के इस समस्त वार्तालाप में निरंजन से यह सुनकर अचम्भा हुआ। **श्रीकृष्ण ने पूछा यह दास-कबीर कौन है? जिनके आने के पहले स्वामी (निरंजन) मुझे शरीर त्यागने को कह रहे हैं।** निरंजन विधाता ने अवगत कराया कि हे कृष्ण। जब पाण्डव पुत्र यज्ञ करेंगे तो भोजन करने समस्त ऋषि, गण-गन्धर्व आयेंगे किन्तु यज्ञ पूर्ण नहीं होगा। यज्ञ में आने वाले किसी को परमपुरुष के सच्चे **‘नाम’** का ज्ञान नहीं होने से ऐसा होगा। कलियुग में शरीर रूप धारण कर केवल कबीर ही **‘नाम’** की महिमा कहेंगे। उनके शिष्य सुपच के **‘नाम’** ज्ञान से द्वापर के संधिकाल में पाण्डवों का यज्ञ पूर्ण होगा। तुम्हारा सहयोगी होकर मैं पूरे पृथ्वी मण्डल में छाया रहूँगा। तुमने राम रूप में बालि को मारा था। वही बाली व्याध अवतार होकर उसका तुमसे बदला होगा। तुम उसके वैर बदले को चुकाओ। निरंजन से इस ध्यान वार्ता के बाद श्रीकृष्ण आज्ञानुसार द्वारका नगर आ गए।

बन्धु-बाँधवों को मारने के कर्म-निवारण के लिए पाण्डवों ने यज्ञ हेतु श्रीकृष्ण को द्वारका से बुलाया। श्रीकृष्ण ने सभी देव, गण-गन्धर्व और ऋषि मुनियों को यज्ञ का भोजन पाने की आज्ञा दी। सभी के भोजन करने पर भी घण्टा नहीं बजा तो युधिष्ठिर को बहुत लज्जा हुई। श्रीकृष्ण ने तब यह मंत्रणा देते हुए युधिष्ठिर को बताया कि ऐसे भक्त की खोज करो जो सदा सत्य की महिमा गाता हो। तभी यज्ञ पूर्ण होगा। ऐसे भक्त को लाने सब तरफ दूत भेजे गए किन्तु किसी को ऐसे वेश वाले भक्त से भेंट नहीं हुई। फिर तुरन्त भीम

ढूँढने गए और चारों दिशाओं में खोजते हुए काशी के समीप वन में सुपच भक्त के पास पहुँचे। भीम ने सुपच से कहा, हे हरिजन! कृपाकर मेरे साथ चलो, स्वामी बाल गोविन्द हरी ने स्वयं तुम्हें बुलवाया है। **भक्त सुपच ने कहा तुम जिन्हें प्रभु कह रहे हो वही तो काल हैं।** भीम ने क्रोध से लाल होकर सोचा, यह मैं किस भक्त के पास आ गया हूँ। यदि इसको मार देता हूँ तो धर्मराज नाराज होंगे। अतः एव भीम ने वापिस जाकर युधिष्ठिर को बताया कि जो तीन लोकों के प्रभु हैं उनको सुपच भक्त काल कसाई कहता है। मैंने तुम्हारा भय मानकर उसे नहीं मारा। पूरी साखी साहिब बन्दगी सत्संग की पुस्तक 'सतगुरु भक्ति' में पढ़ें।

भीम की बात सुनकर भगवान कृष्ण मन में हँसे और युधिष्ठिर को कहा कि तुम शीघ्र जाकर भक्त सुपच को सिर नवाकर लाओ। युधिष्ठिर ने सुपच भक्त के पास पहुँच कर कहा, हे भक्त! अपराध क्षमा कर मेरे गृह आकर मेरा कार्य पूर्ण करावें। आपका बड़ा परमार्थ होगा और यज्ञ में बैठे सभी जन हर्षित होंगे। भक्त सुपच युधिष्ठिर के साथ चले तो श्रीकृष्ण ने जान लिया कि अब यज्ञ का कार्य पूर्ण होगा। युधिष्ठिर ने भक्त सुपच के पाँव-पखार कर भोजन करवाया तब घोर ध्वनि के साथ घंटा बजा। यह कौतुक देख ऋषिगण, गन्धर्व, तपसी, और मुनि स्वयं को भूल देखते रह गए। यज्ञ पूर्ण होने पर श्रीकृष्ण भी द्वारका गए। जिनकी देह धर्म कहाई ऐसे राजा युधिष्ठिर को छोड़कर श्रीकृष्ण ने अर्जुन को बुलाकर अपना धर्ममत सुनाया कि मैं गोपियों सहित जिस लोक जाऊँगा वह बैकुण्ठ धाम है।

कबीर साहिब धर्मदास से कहते हैं -

कृष्ण शक्ति में मुनि ऋषि झूला। जान बूझि के पण्डित भूला ॥

बूझौ सन्तो नाम हमारा। नाम बिना किम उतरौ पारा ॥

सो सब रहे पूर्ण यज्ञ नाहिं। नामहिं महिमा जानत नाहीं ॥

सुपच जान भल नाम प्रभाऊ। तातें पूरण यज्ञ कराऊ ॥

श्रीकृष्ण ने अर्जुन से समस्त गोपियों को मथुरा से शीघ्र द्वारका लाने की आज्ञा दी। धनुषवाण और अनेक यादव वीरों को साथ

लेकर अर्जुन जब गोपियों को लेकर द्वारका आ रहे थे तो वे सभी आपस में लड़कर मर गईं। कुछ को वनवासियों ने लूट लिया। यादवों सहित सभी प्राण प्यारी गोपियों को श्रीकृष्ण ने इस प्रकार मरवा दिया। अर्जुन के सब वाण हार गए। जब अर्जुन द्वारका नगर पहुँचे तो श्रीकृष्ण ने कहा हे अर्जुन! यह संसार छोड़ो। इस प्रपंच से भरे संसार से मैं तो अब स्वर्ग जाऊँगा। अर्जुन ने वापस आकर अपने चारों भाइयों को श्रीकृष्ण का समाचार दिया और कहा यह मृत मण्डल छोड़कर और पुत्रों को राजपाट देकर चलें। पाँचों भाई जब स्वर्ग जाने को चले तो मार्ग में ही गलकर काल मृत्यु को प्राप्त हुए।

श्रीराम द्वारा मारे गए बालि के व्याध अवतार ने बैर बदला लेने श्रीकृष्ण पर घात लगाकर तीर संधान किया। निराकार निरंजन स्वयं इस प्रकार प्रत्येक का बदला चुकवाता है। इस बैर का सिलसिला हरि रूप में स्वार्थवश जीवों को मारने का बदला जीवों से करवाता है। निरंजन ने तीन लांकों को जानने वाले श्रीकृष्ण की जीव-आत्मा का भी बैर व्यवहार से ही निपटारा कराया। यह भेद संसार के लोग नहीं जान रहे हैं।



तीन लोक में बाहर देशा। तेहि साहब का सुनो संदेशा॥
 तेहि साहब की मोहि साहिदानी। तिनकी आदि कृष्ण नहि जानी॥
 तीन लोकके कृष्ण हैं राजा। भोजन कीने घंट नहि बाजा॥
 एते बचन सुपच कह राई। चले सुपच नृप सङ्ग लिवाई॥

मरने वाले का पता

ग्यारहवें द्वार से जीव जब जाई। अमर लोक में वासा पाई ॥

11वां द्वार—इस द्वार से प्राण निकलने पर जीवात्मा सदा-सदा के लिए भवसागर से छूटकर परम-पुरुष में चली जाती है और दुबारा जन्म नहीं होता।

दशम द्वार से जीव जब जाई। स्वर्ग लोक में वासा पाई ॥

दशम द्वार—यदि जीवात्मा के प्राण दसवें द्वार से जाते हैं तो वो स्वर्ग आदि लोकों में चली जाती है और पुनः मृत्यु-लोक में आकर राजा होकर जन्म लेती है। इसकी पहचान यह है कि मरने वाला देखने में प्रसन्न चित्त दिखाई देता है।



श्रवण द्वार से जीव जब चाला। प्रेत देह पावे तत्काला ॥

श्रवण द्वार—यदि जीवात्मा के प्राण कानों से निकलते हैं तो उसको तत्काल प्रेत योनि मिलती है। प्रेत की आयु 1000 वर्ष होती है। इसकी पहचान कि मरने वाले के शरीर को देख कर भय सा लगेगा।

नेत्र द्वार से जीव कोई जाई। मक्खी आदि तन सो पाई ॥

नेत्र द्वार—इस द्वार से प्राण निकलने पर जीवात्मा मक्खी, मच्छर आदि योनियों में जन्म लेती है। इसकी पहचान है कि मरने वाले की आँखें खुली रह जाती हैं।

स्वांस द्वार से जीव जब जाई। अण्डज खानी में प्रगटाई ॥

श्वास द्वार—इस द्वार से प्राण निकलने पर जीवात्मा अण्डज खानि में जन्म लेती है, जैसे उड़ने वाले पक्षी आदि।

मुख द्वार से जीव जब जाई। अन्न खानि में वासा पाई ॥

मुख द्वार—यदि मुँह में से प्राण निकलते हैं तो जीवात्मा अन्न-खानि के जीवों में जन्म लेती है, जैसे अनाज के कीड़े-सुसरी सुंडी आदि। इसकी पहचान है कि मरने वाले का मुख बहुत ऊँचा खुला रह जाता है।

नाभि द्वार से जीव जब जाई। जलचर योनि में प्रकटाई ॥

नाभि द्वार—यदि मूत्र द्वार से प्राण निकलते हैं तो जीवात्मा जलचर योनि में जन्म लेती है, जैसे मछली, मेंडक, कछुआ आदि जल के जीव। इसकी पहचान है कि मरने वाले का मूत्र बाहर आ जाता है।

मल-द्वार से प्राण निकास। नर्क खानि में पाए वासा ॥

गुदा स्थान—इस द्वार से प्राण निकलते हैं तो जीवात्मा नरक में चली जाती है, क्योंकि यह है ही नरक का द्वार। इसकी पहचान है कि मृतक का मल बाहर आ जाता है।

सार नाम सत्यपुरुष कहाया

संत सद्गुरु जो नाम शिष्य को देते हैं, वो ऐसा नाम नहीं है, जो संसार के लोगों ने समझ लिया है। धर्मदास जी भी साहिब से पूछ रहे हैं—
धर्मदास कहै सुनो गोसाईं। पुरुष नाम कहऊ समुझाई ॥
सहस्रनाम जो वेद बखाना। नेति नेति कह बहुरि निदाना ॥
कौन नाम को सुमिरन करई। कैसे सदा पुरुष चित धरई ॥
कैसे आवागमन मिटाई। क्षर निहअक्षर कह समुझाई ॥

कहा कि वेदों में जो हज़ारों नाम हैं, यह नाम उनमें से कोई है या फिर कोई और! आप जिस नाम के सुमिरन के लिए कह रहे हैं, वो कौन सा नाम है, मुझे समझाकर कहिए, जिससे मेरा आवागमन मिटे।

साहिब कह रहे हैं—

सुनु धर्मनि तुम हंस पियारे। तुम्हरो काज सकल हम सारे ॥
सुमिरन आदि मैं तुम्हें सुनावों। सकल कामना तोर मिटावों ॥
नाम एक जो पुरुष को आही। अगम अपार पार नहिं जाही ॥
वेद पुराण पार नहिं पावै। ब्रह्मा विष्णु महेश्वर धावै ॥
आदि कहौं तो को पतिआई। अंत कहौं तो परलै जाई ॥
आदि अंत में वासा होई। निहअक्षर पावै जन सोई ॥
अक्षर कह सब जक्त बखानै। निहअक्षर को मर्म न जानै ॥

वेद, पुराण भी इस नाम का भेद नहीं जानते हैं।

दुनिया तो 52 अक्षर की सीमा वाले नामों को ही जानती है। आज के महात्मा लोग भी यही नाम दे रहे हैं। ये सब नाम तो वेदों में दिये गये हज़ारों नामों में से हैं, पर साहिब कह रहे हैं—

नाम पार वेदन नहिं पावा। नेति नेति कह सब गुहरावा ॥

ऐसे तो सभी को 15-20 नाम पता होते हैं। यदि इन नामों में से कोई होता तो फिर संतों को सद्गुरु की महिमा गाने की ज़रूरत नहीं थी। फिर तो किसी बच्चे से भी नाम लिया जा सकता था।

कैसा है यह नाम? फिर वाणी से समझा रहे हैं—

कहो न जाई लिखो न जाई। बिन सतगुरु कोउ नाहीं पाई ॥
 सतगुरु मिलै तो अगम लखावै। हंस अमी पीवत घर आवै ॥
 अंकुरी जीव कहे निर्बाना। पावत हंस लोक पहिचाना ॥
 सुरतिवंत पावै निज वीरा। संग रहौं मैं दास कबीरा ॥
 जो कोई हंस प्रवाना लेई। अग्र नाम सतगुरु कहि देई ॥
 बिन सतगुरु कोई नाम न पावै। पूरा गुरु अकह समझावै ॥
 अकह नाम वह कहा न जाई। अकह कहि कहि गुरु समझाई ॥
 समुझत लोक परै पुनि चीन्हा। जाते लोक होइ लवलीना ॥
 हरदम सुमिरै चित्त लगाई। लोक दीप में जाइ समाई ॥
 अजर अमर होइ लोक सिधावै। चौरासी बंधन मुक्तावै ॥
 आवागमन ताहि नहिं भाई। जरा मरण का बीज नसाई ॥

वो नाम कहने में नहीं आता है, वाणी का विषय नहीं है। वो लिखने में भी नहीं आता है। वो अकह है। बिना सद्गुरु के उसे कोई नहीं पा सकता है। पूरा गुरु होगा, वही समझा सकता है। उसी नाम को पाकर जीव चौरासी के बंधन से छूटकर अमर-लोक में जा सकता है।

यह नाम और सद्गुरु का इतना गहरा संबंध क्यों है? क्योंकि यह नाम अलौकिक है और इसे केवल सच्चे संत-सद्गुरु से ही प्राप्त किया जा सकता है। यदि यह नाम सांसारिक नामों में से कोई होता तो फिर संतों ने सद्गुरु की इतनी महिमा नहीं गानी थी। यह नाम पोथियों में नहीं मिलेगा। क्योंकि यह नाम 52 अक्षर से परे एक सजीव वस्तु है।

गुरु सजीवन नाम बताए। जाके बल हंसा घर जाए ॥

आजकल के झूठे संत जो नाम दे रहे हैं, उनसे हमारी आत्मा

अमर लोक में नहीं जा सकती है, क्योंकि ये नाम तो वाणी का विषय हैं, 52 अक्षर की सीमा में आ जाते हैं, इन्हें हम भी जानते हैं। इस तरह ये नाम तो सबके पास हैं। तभी तो साहिब सतर्क कर रहे हैं—

कोटि नाम संसार में, तिनते मुक्ति न होय।

मूल नाम जो गुप्त हैं, जाने बिरला कोय॥

कह रहे हैं कि संसार में करोड़ों नाम प्रचलित हैं, पर उनसे आप मुक्त नहीं हो सकते हैं। जो सच्चा नाम है, वो गुप्त है, उसे कोई बिरला संत ही जानता है।

एक बार सिकन्दर अपने मंत्री और सेना सहित कही जा रहा था। जंगल का रास्ता था। उसके सैनिकों ने आगे जाने से इनकार कर दिया। फिर वही जंगल में पड़ाव डालना पड़ा। वहाँ पास में किसी साधु का आश्रम था। उसका मंत्री वहाँ आश्रम में गया और साधु से दीक्षा ले ली। सिकन्दर के पूछने पर उसने सारी बात बता दी। सिकन्दर ने कहा कि मैं भी जाता हूँ। वो भी गया, प्रणाम किया, पर साधु ने सिकन्दर को दीक्षा नहीं दी। वो वापिस आ गया। मंत्री ने सिकन्दर से पूछा कि दीक्षा मिली। सिकन्दर ने कहा कि नहीं। फिर सिकन्दर ने मंत्री से कहा कि तू ही मुझे बता कि साधु ने क्या दीक्षा दी, कौन-सा मंत्र बताया? मंत्री ने कहा कि अभी नहीं बताऊँगा, कुछ दिनों बाद बता दूँगा।..... सोचा, यह भूल जाएगा। घर वापिस आने पर सिकन्दर फिर उससे कहता है कि बता क्या कहा था, साधु ने। मंत्री भी टालता है, कहता है, थोड़ी मोहलत और दो।

थोड़ी देर बाद सिकन्दर ने फिर कहा कि बता, क्या कहा था। मंत्री ने सोचा, यह तो पूछकर ही रहेगा, कहा-कल बताऊँगा। अगले दिन दरबार लगा था। मंत्री ने सेनापति से कहा कि बादशाह सिकन्दर को कैद कर लो। सेनापति बेचारा कुछ नहीं कर पाता है। मंत्री फिर कहता है, ओ सेनापति! तुमने सुना नहीं, यह मेरी आज्ञा

है; बादशाह सिकन्दर को कैद कर लो। सेनापति फिर चुपचाप बैठा रहता है। तीसरी बार मंत्री यह बोलने ही जा रहा होता है कि सिकन्दर को गुस्सा आ जाता है; वो सेनापति से कहता है— सेनापति! मंत्री को कैद कर लो। सेनापति फौरन आता है और मंत्री को कैद कर लेता है।

तब मंत्री कहता है कि मैंने दो बार सेनापति को आज्ञा दी, पर सेनापति ने आपको कैद नहीं किया। आपके एक ही बार कहने पर सेनापति ने मुझे कैद कर लिया, क्योंकि वास्तव में इस आदेश के हकदार आप ही हैं। इसी तरह जो चीज़ उस साधु ने मुझे दी, वो चीज़ साधु ही दे सकता है, मैं वो आपको नहीं बता सकता। अगर बताऊँगा भी तो उसका कुछ लाभ नहीं होगा। बादशाह सिकन्दर को ज्ञान हो गया, समझ आ गयी।

जो सच्चा नाम है, वो केवल संतों के पास है। वो वाणी का विषय नहीं है। वो कहने-सुनने या पढ़ने-लिखने में भी नहीं आता। वो 52 अक्षर से परे, वो सजीव वस्तु है। संतों के बिना इस सजीव नाम को नहीं पाया जा सकता। चन्दन अपनी महक स्वयं दूसरों तक पहुँचाने में सक्षम नहीं होता। हवा ही चन्दन की महक को ले जाकर दूर-दूर तक बिखेर देती है और सारा वातावरण सुगन्धित हो जाता है। सागर अपना जल स्वयं किसी को नहीं दे पाता। बादल जब सागर के जल को ऊपर ले जाकर बरसाते हैं तो पत्ता-पत्ता हरा हो जाता है, पपीहे प्रसन्न हो जाते हैं, मोर नाचने लगते हैं। साहिब कहते हैं कि इसी तरह संतों के बिना परमात्मा भी पंगु है।

संत-सद्गुरु परमात्म-तत्त्व को लाकर शिष्य के भीतर छोड़ते हैं। यही 'नाम' कहलाता है। इस नाम के बिना कोई भी जीव संसार-सागर से पार नहीं हो सकता। यही नाम अर्थात् स्वयं परमात्मा जीव को इस संसार-सागर से परे अमर-देश में ले जाता है।

पहली बार जब साहिब धरती पर आए तो 100 साल रहकर वापिस गये। पर एक भी जीव को नहीं ले जा सके। परम-पुरुष ने पूछा कि कोई भी जीव नहीं लाए। कहा—नहीं। परम-पुरुष ने पूछा—क्यों? कहा कि जिसे सुबह समझाता हूँ, शाम को भुला देता है। जिसे शाम को समझाता हूँ, वो सुबह भुला देता है। तब परम-पुरुष ने कहा कि यह लो गुप्त वस्तु (नाम)। जिस घट में यह वस्तु दे दोगे, उसपर काल का जोर नहीं चलेगा।

इस तरह नाम रूप में सद्गुरु स्वयं मालिक साथ में कर देता है, जिसके कारण जीव को स्वयं कमाई की कोई ज़रूरत नहीं रहती, वो स्वयं ही शरीर छूटने के बाद अनल पक्षी की तरह अपने घर की तरफ़ चल पड़ता है।



काया नाम सबहिं गुण गावै, विदेह नाम कोई बिरला पावै।
विदेह नाम पावेगा सोई, जिसका सद्गुरु साँचा होई ॥
पाँच तीन यह साज पसारा, न्यारा शब्द विदेही हो।
पाँच कहो तो छटवें हम हैं, आठ कहो नौ आई हो ॥
पाँच तीन अधीन काया, न्यार शब्द विदेह हो।
सुरति माहिं विदेह दरशै, गुरु मता निज एह हो ॥
छिन इक ध्यान विदेह समाई। ताकी महिमा बरनिन न जाई ॥

धर्मदास तहाँ वास हमारा ।

काल अकाल न पावे पारा ।

कबीर साहिब भक्ति क्षेत्र में क्रांति लाए, सबको चौंका दिया ।
जिनकी पुरानी दुकानें चल रही थीं, बंद हुई । उनके निर्गुण पदों में उस देश
का ज़िक्र आता है । वे कह रहे हैं -

मरहमी होय सो जाने संतो, ऐसा देश हमारा है ।
बिन बादल जहाँ बिजुरी चमके, बिन सूरज उजियारा है ।
बिना सीप जहाँ मोती उपजे, बिन मुख बैन उच्चार है ।
ज्योति लगाए ब्रह्म जहाँ दरपे, आगे अगम अपारा है ।
कहैं कबीर तहाँ रहन हमारी, बूझे गुरुमुख प्यारा है ।

उस देश की महिमा साहिब ने अपनी वाणी में कही । यह आत्मा उस
देश से आई है । जब तक वापिस वहाँ नहीं पहुँचेगी, जन्म मरण से
छुटकारा नहीं मिलने वाला । साहिब ने सामीप्य, सालोक्य आदि चार
मुक्तियों को नकारा थोड़े है, पर इनमें पुनर्जन्म है यानि ये सीमित समय
की मुक्तियाँ हैं, इसलिए भवसागर में फिर-फिर आना पड़ेगा । पर वो देश
निर्मल है, वहाँ से पुनर्जन्म नहीं होता । साहिब ने किसी का विरोध नहीं
किया, उस लोक का ज़िक्र किया । वास्तव में वे एक महान हस्ती थे ।
सबने साहिब को अपने में मिलाने का प्रयास किया है, सबने उन्हें उचित
स्थान दिया है । योगियों ने उन्हें योगीराज कहा है, क्योंकि उन्होंने ब्रह्माण्ड
और अन्तर जगत की सब बातें कहीं, देखो, वो कह रहे हैं -

खेल ब्रह्माण्ड का पिण्ड में देखिया, जगत की भर्मना दूर भागी ।
बाहर भीतर एक आकाशवत्, सुषुम्ना डोर तहाँ पलट लागी ।
पवन को पलट कर शून्य में घर किया, धर और अधर में भरपूर देखा ।
कहैं कबीर गुरु पूरे की मेहर से, त्रिकुटी मध्य दीदार देखा ।

यानि महायोगी का गुण था उनमें, सब जानते थे। आजकल योग का प्रचार बहुत दिख रहा है। योग कमाई का साधन भी बन गया है। शरीर को स्वस्थ रखना ज़रूरी है, पर आप सोचें कि इससे पार होंगे नहीं ऐसा नहीं होगा। साहिब का अपने समय के महान योगियों से शास्त्रार्थ हुआ। महान योगी गोरखनाथ उनके ज्ञान के आगे नतमस्तक हुए। साहिब प्राणायाम का विरोध नहीं कर रहे, पर इनका संबंध स्नायुमण्डल से है, आत्मा से नहीं। योग दो प्रकार का है - एक स्थूल, एक सूक्ष्म। स्थूल योग शरीर के स्थूल अंगों को स्वस्थ और चेतन करता है जबकि सूक्ष्म योग शरीर की सूक्ष्म कोशिकाओं को चेतन करता है। साहिब ने आत्म तत्व को चेतन करने की बात की। वो काम योग से नहीं होगा। हम स्वाँसा में सुमिरन कर रहे हैं तो यह योग और भक्ति दोनों है। हम तो अधूरी स्वाँस ले रहे हैं। भोजन खा रहे हैं तो एकाग्र होकर खाएँ, पानी पी रहे हैं तो एकाग्र होकर पिएँ। जो हम वैसे स्वाँस ले रहे हैं, अधूरी है, इसलिए एकाग्र होकर लें। अधूरी स्वाँस नाभि चक्र तक नहीं पहुँच रही है। इसलिए मैंने आपको स्वाँस ध्यान और नाम एक करने को कहा -

सकल पसारा मेट कर, मन पवना कर एक।

ऊँची तानो सुरत को, तहाँ देखो पुरुष अलेख॥

इस तरह उस समय के योगियों में उनका स्थान बड़ा ऊँचा था। फिर कवियों में भी उन्हें कविराज कहा गया है। उनकी वाणी इतनी मीठी और सरल है कि भैंसे पर बैठा गँवार भी उनकी वाणी गुनगुनाता है और प्रोफेसर भी। देखो, कितनी सहजता से उस देश की बात कर रहे हैं। कोटि जन्म का पथ था, गुरु पल में दिया पहुँचाय। अपने योग से अपनी कमाई से चार मुक्तियों की प्राप्ति कर सकते हैं, पर अमर लोक की नहीं, इसलिए उन्होंने सद्गुरु की बात कही। वो लोक - 'बिन सतगुरु पावे नहीं, कोई कोटिन करे उपाय।' यँ तो सगुण-निर्गुण में भी गुरु का महत्व है, पर सद्गुरु क्या करेगा -

गुरु को कीजै दण्डवत्, कोटि कोटि प्रणाम ।

कीट न जाने भृंग को, गुरु करले आप समान ॥

जैसे भृंगा कीड़े को पकड़कर अपनी तरह बना लेता है, इसी तरह गुरु भी अपने समान कर लेता है। वैसे कीड़े में उड़ने की क्षमता नहीं है, पर उसके सम्पर्क में आने से उसमें क्षमता आ जाती है। इस तरह सद्गुरु नाम देकर आत्मा को चेतन कर देता है। आप याद रखना, आपमें किसी शक्ति को आहुत नहीं करना है। इस आत्मा में अद्भुत शक्तियाँ भरी पड़ी हैं, जिसमें से कुछ भी माया कम नहीं कर सकी है। ये मन द्वारा आच्छादित हो गयी है। बस आत्मा के ऊपर आवरण आ गया। एक मणि रोशनी देती है। रोशनी तो दीपक में भी है, पर हवा के झोंके से बुझ जाता है, फिर तेल खत्म होने पर भी बुझ जाता है। मणि को तेल नहीं चाहिए। पर गोबर फेंक दें तो आच्छादित हो जाता है उसका प्रकाश। इस तरह मन-माया द्वारा आच्छादित हो गयी आत्मा। आत्मा अपने को मन-माया मानने लगी। इस मन के कारण आत्मा का ज्ञान नहीं हो रहा है। मन की प्रक्रिया मनुष्य को समझ में नहीं आ रही है। जब गुरु नाम देता है तो काम, क्रोध दिखने लगेंगे, मन की क्रियाएँ, वृत्तियाँ समझ आने लगेंगी। नाम की रोशनी से ही मन समझ आयेगा। इसलिए 'गुरु मिलने से झगड़ा खत्म हो गया।' आज आप टी.वी. पर भी अनेक तरह के प्रवचन सुनते हैं। कोई अनहद धुनों को प्रमात्मा बोल रहा है। कोई आचार संहिता बता रहा है, कोई उस ईश्वर तक जाने का मार्ग बता रहा है। पर साहिब जिस गुरु की बात कर रहे हैं, वो पूर्ण गुरु है, जिसे उन्होंने परमात्मा से भी ऊपर कह दिया। इसमें रहस्य है -

गुरु हैं बड़े गोविन्द से, मन में देख विचार ।

हरि सुमिरे सो वार है, गुरु सुमिरे सो पार ॥

कबीर हरि के रुठते, गुरु की शरणी जाय ।

कहैं कबीर गुरु रुठते, हरि न होत सहाय ॥

साहिब का संदेश समाज के लिए साफ़ था, उन्होंने इन्सानियत को जगाया, एक नया आयाम संसार को दिया। उन्होंने पाखण्ड से

समाज को जगाया और कहीं 'तीन लोक से परे की बात की। तीन लोक से भिन्न पसारा, अमर लोक सद्गुरु का न्यारा।' 'तीन लोक प्रलय कराई चौथा लोक अमर है भाई॥' सबसे अनूठी बात उनकी यह लगी कि तीन लोक के संसार में रहने वाला प्रत्येक जीव काल के शिकंजे में है। उनसे पहले जितने भी ऋषि, मुनि, सिद्ध, महात्मा, विद्वान आदि आए, सबने यह कहा कि ब्रह्माण्ड का संचालन परमात्मा कर रहा है। जितने भी धर्म हैं, उनका इशारा भी निराकार परमात्मा की ओर है। पर साहिब ने सब समीकरण बदल डाले, कहा - नहीं यह संसार शैतानी ताक़त के हाथ में है। अभी तक तो यह धारणा थी कि ईश्वर द्वारा संचालित हो रहा है संसार, पर साहिब ने कहा कि यह ब्रह्माण्ड शैतानी ताक़तों के हाथ में है। 'सैयाद के काबू में हैं सब जीव विचारे।'।

अब चार मुक्तियों के स्थान भी इस तीन-लोक में हैं। चाहे कोई चार मुक्तियों तक भी पहुँच जाए, तो भी काल की सीमा से बाहर नहीं निकल सकता। यह अजूबी बात है, जल्दी से आम आदमी साहिब की बात को पचा नहीं पा रहा है कि 'तीन लोक से भिन्न पसारा। अमर लोक सद्गुरु का न्यारा॥' इसका मतलब है, तीन-लोक में जो कुछ भी है, काल के दायरे में है। कालांतर में जितने भी मत मतान्तर हुए, काल-पुरुष के लिए कहा, तीन-लोक की बात कही और यह भी माना कि ये नाश को प्राप्त हो जायेंगे।

तीन लोक और अमर लोक के बीच भी आयाम हैं। बड़ी अजीब बात है। तीन लोक का राज्य निरंजन तक का है। यह शून्य स्थान है। वेद भी निराकार तक की बात कर रहा है, मुसलमान भी 'बेचूना खुदा' कह रहे हैं। कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद साहब ने जो संदेश प्राप्त किये, पर्दा था यानि पर्दे के पीछे से संदेश प्राप्त किये। पर्दा कोई कपड़े का नहीं था, वो निराकार सत्ता का था। जितने भी धर्म हैं, निराकार की बात कर रहे हैं। ईसा मसीह भी कह रहे हैं - 'मेरा आकाशी पिता।' साहिब की वाणी में वज़न है, वे चेता कर कह रहे हैं - "ऋषि मुनि गण गन्धर्व अरू देवा। सब मिल लाग

निरंजन सेवा ॥” अर्थात् इस ब्रह्माण्ड में जितने भी ऋषि, मुनि बड़े-बड़े योगी आदि हुए, सबने काल निरंजन को माना, उसी की भक्ति की। लोगों के दिमाग में यह बात आई कि शायद कबीर जुलाहा था, अनपढ़ था, ऐसे ही बातें कर गया हैं। नहीं। वे कह रहे हैं -

संतों अविगत से चला आया, कोई भेद मर्म न पाया।
न हम रहले गर्भवास में, बालक होइ दिखलाया।
काशी तट सरोवर भीतर, तहाँ जुलाहा पाया।
न हमरे मात पिता हैं, न संग गृही न दासी।
नीरु के घर नाम धराये, जग में हो गई हाँसी।
आणे तकिया अंग हमारी, अजर अमर पुर डेरा।
हुक्म हैसियत से चले आए, काटन यम का फेरा॥

साहिब ने बहुत बड़ा अध्यात्म संसार को दिया, आगे चलकर कुछ तपकों ने साहिब का खण्डन किया, कहा-जुलाहा था, अनपढ़ था। यदि शिक्षा की बात है तो ध्रुव को किसने पढ़ाया! यानि भौतिक शिक्षा का कोई संबंध नहीं है इसमें। वहाँ तो आप को भुलाकर जाना पड़ता है। साहिब ने तीन-लोक की बात बेहतर की, पूरे ब्रह्माण्ड का खेल बोला, फिर आगे के लोकों की बात भी बताई। साहिब के चार दोहे और साखियों को जानकर लोग समझने लगे कि हम कबीर को जान गये।

आओ देखते हैं, क्या है काल-पुरुष, फिर चलेंगे अमर लोक की ओर। मैंने राष्ट्रपति रीगन के पी.ए. का कई बार हवाला दिया है। उसका वाक्या वर्ष का महावाक्या माना गया था, उसका कहना था - ‘मुझे यूँ लग रहा है, हमारा संचालक एक शैतान है। हम सब एक शैतानी शक्ति के अधीन हैं। वो शक्ति हम सबको विनाश की तरफ ले जा रही है।’ हम यथार्थ में देखें तो पता चलता भी है कि हम परम पुरुष की देख-रेख में नहीं हैं, पता चलता है कि यह संचालन परम पुरुष द्वारा नहीं हो रहा है। मनुष्य व्यभिचार कर रहा है, चोरी कर रहा है, किसी का खून कर रहा है, छल-कपट आदि कर रहा है यानि उसे सब पाप कर्म मंजूर हैं।

उसकी दण्ड व्यवस्था भी ठीक नहीं है। नरक की यंत्रणाओं के विषय में आता है कि शराब पीने वाले को उबला तेल पिलाया जाता है। क्या यह क्रूर दण्ड नहीं है। हम अपने बच्चे को यह दण्ड नहीं दे सकते, फिर सत्य पुरुष को तो दयालु कहा गया है यानि समझ में आता है कि यह दण्ड सत्य पुरुष नहीं दे रहा, कोई शैतानी ताकत दे रही है।

नरक में सात घड़े हैं। एक में विष्ठा है। पाप करने वाले को उसमें फेंकते हैं। सभ्य मानव इन सज़ाओं को स्वीकार नहीं करेगा। सभी धर्मों में स्वर्ग-नरक का उल्लेख है और संसार के सभी लोग किसी-न-किसी धर्म को मान रहे हैं, इसलिए सभी स्वर्ग-नरक को भी मान रहे हैं। अन्तवाहक शरीर द्वारा हमारे कुछ पूर्वजों ने इन्हें देखा भी है। तो कहीं अग्निकुण्ड में पापी को फेंकते हैं, वो बेचारा तड़पता है। फिर रक्त कुण्ड है, उसमें फेंकते हैं। आप विचार करें कि यथार्थ में शैतानी ताकतें ही ऐसा कर सकती हैं। 'पाप करावे आप ही, कष्ट पुनि देवे आप।' मन ही मनुष्य से पापिष्ट कर्म करवा रहा है और फिर खुद ही सज़ा भी दे रहा है, इसलिए 'जीव पड़ा बहू लूट में, नहीं कछु लेन न देन।' जीव लूट में है; उसे कुछ लेना देना नहीं है। हजारों साल नरक में यंत्रणाएँ दी जाती हैं। अगर किसी को काँटों पर चलाकर ले जाया जाए तो मानव हृदय कभी इस सज़ा को स्वीकार नहीं करेगा। फिर विचार करना होगा। और भी यंत्रणाएँ हैं। कहीं गिद्धों, चीलों को छोड़ देते हैं नोचने के लिए। फिर कहीं साँप, बिच्छुओं को छोड़ा जाता है। इंसान को यहाँ ऐसा कष्ट दें तो जन समुदाय मंजूर करेगा क्या! कभी नहीं करेगा। साहिब ने ऐसे ही नहीं कहा - 'सैयाद के काबू में हैं जब जीव विचारे।' यह पहला संदेश साहिब ने दिया तो विरोध हुआ। होना ही था, यह तो स्वाभाविक है। जब भी नवीन संस्कृति का सृजन होता है, पहले विरोध होता है, फिर खामोशी होती है, फिर लोग अनुकरण करते हैं। पहले कोपरनिकस ने कहा कि धरती घूम रही है तो बड़ा विरोध हुआ, उस बेचारे को तो फाँसी चढ़ा दिया गया। अब तो वैज्ञानिक कह रहे हैं कि सूर्य भी घूम रहा है, पर उसकी गति कम है। यह 21½ इंच एक साल में चल रहा है। जैसे सौरमण्डल का परिवार है, ऐसे अनेक सूर्य के

परिवार हैं। अब वैज्ञानिकों ने कहा तो हम मान रहे हैं। हमारे धर्म-शास्त्रों में तो लिखा है कि सूर्य अपने सफेद रथ पर सवार होकर यात्रा किये जा रहा है।

तो साहिब कह रहे हैं कि यहाँ निराकार का शासन है। जैसे सरकार है, राष्ट्रपति है, प्रधानमंत्री है, राज्य मंत्री है, तहसील आफिसर है। इस तरह से गाँव-गाँव तक पकड़ है, शासन चल रहा है। इस तरह राष्ट्रपति निरंजन है। फिर मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार हैं, फिर इन्द्रियाँ हैं, काम, क्रोध, लोभ और अहंकार हैं। इस तरह ये हुक्म पालन के लिए बैठे हैं, जो-जो मन चाहता है, वो-वो जीव से करवाते हैं। आत्मा का हुक्म चल नहीं रहा है। साहिब ने क्या खूब कहा-

चश्म दिल से दूख तू, क्या-क्या तमाशे हो रहे

आत्म देव का कुछ नहीं चल रहा, चल ही मन का रहा है, विरोधी शक्तियों का चल रहा है। एक ने कहा कि आप मन पर ही कन्सन्ट्रेट हैं। मैंने कहा-इस शरीर में है ही मन, आत्मा और माया। आत्मा का बैरी यदि कोई है तो यह मन ही है, और कोई शत्रु नहीं है आपका, इसलिए मन पर ही कन्सन्ट्रेट हूँ। तो मन कहता है, चोरी कर, आत्मा चल पड़ती है, पर मन को कोई देख नहीं पा रहा है। इसके आदेश जारी होते रहते हैं। आत्मा को पता नहीं चलता कि क्या कर रहा है वो इसलिए साहिब कह रहे हैं - 'काया गढ़ जीतो रे भाई, तेरो काल अवध टर जाई।'

आदमी अपने स्वभाव को भी नहीं जान पा रहा है कि क्यों है उसका ऐसा स्वभाव। उसका स्वभाव बदल रहा है, विविध प्रकार के चिंतन वो कर रहा है। मन तरंग है, कभी हँसने का मूड है, कभी रोने का। आखिर शरीर में क्या हो रहा है! 'संतो घर में झगड़ा भारी....।'

'जस नट मरकट को दुख देई, नाना नाच नचावन लेई।' मन आत्मा को नाच नचा रहा है। हम एक बात कह रहे हैं कि मुक्ति चाहिए, पर किसकी, आदमी को अपना होश ही नहीं है। एक लड़की ने फोन पर कहा कि मेरा हृदय उचाट-सा है, कारण पता नहीं चल रहा है, कोई वजह नज़र नहीं आ रही है। मैंने कहा - बेटे! वहाँ तक नहीं पहुँच पाओगे, मैं बताता हूँ।

मनुष्य के अन्तःकरण में आठ कोने हैं, आठ पत्ते हैं, उनके बीच मन है। मन उन आठों पर घूमता रहता है। उत्तर दल पर जब मन जाता है तो भक्ति भाव, परमार्थ, दया की भावनाएँ आयेंगी। उसे पता नहीं है, पर वो पौना घण्टा शांत रहेगा। जब मन दक्षिण दल पर जाता है तो गुस्सा ही गुस्सा आयेगा। आप कभी-कभी कहते हैं कि आज मूड ठीक नहीं, खामखाह भी लड़ने लग जाते हैं पता नहीं चलता, बहुत क्रोध आयेगा। जिस पर झगड़ा नहीं किया जा सकता, उस पर भी करेगा, बाद में कहेगा कि मूड ठीक नहीं था उस वक्त। कभी मन पौन घण्टे से ज्यादा भी बैठ जाता है। पश्चिम दल पर बैठेगा तो दिल में विषय-विकार उत्पन्न होंगे, आप चिंतन किये जायेंगे। इस तरह मन हरेक पर सवार है। 'जो मन पर असवार है, ऐसा बिरला कोय।' तो इस तरह पूर्व दल पर बैठेगा तो हँसी मज़ाक करोगे। हँसी वाली बात न होगी तो भी हँसी आयेगी यानि आपको खुश रखा जाता है, आपको दुखी रखा जाता है, पूरी-पूरी हुकूमत चल रही है। वो चाहे तो आप खुश हो जाते हैं, वो चाबी घुमाता है दुख की तो दुखी। तो वायु दल पर बैठेगा, लोभ उत्पन्न करेगा। अग्नि दल कोण पर बैठेगा तो ईर्ष्या उत्पन्न होगी, दूसरे की बुराइयाँ बोलते रहोगे। किसी को देखकर बोलते हैं कि कहीं पागल तो नहीं हो गया। नहीं। उसका क्रसूर नहीं है, जो चाबी घुमायी गयी मन द्वारा, उसी का परिमाण है। तो नैऋत दल कोण पर बैठेगा तो वैराग्य उत्पन्न होगा। उस लड़की को कहा-बेटे! वो वहाँ बैठा है। इस तरह ईशान दल पर बैठेगा तो अहंकार उत्पन्न होगा, उतनी देर घमण्ड में रहेगा। इस विधि से मन मनुष्य से कर्म करवाए जा रहा है। क्यों? क्योंकि उसे चौरासी में फेंकना है, इसलिए शर्तिया पाप करवाने ही हैं। जो हर समय गुस्से में रहता है, उसका मन वहीं बैठे रहता है। इस तरह से सबको जकड़ा हुआ है, कोई इससे बचकर भाग भी नहीं सकता। 'दसों दिशा में लागी आग, कहै कबीर कहाँ जड़यो भाग।' आठों दल पर मन नाचता रहता है, जहाँ-जहाँ जाएगा, मनुष्य वैसा-वैसा ही करता जाएगा। 'अष्ट दल कमल पर धाए, नाना नाच नचाए।' इसलिए सबका स्वभाव बदलता रहता है। कभी कहते भी हैं कि कुछ देर

पहले तो ठीक था, अब अचानक पता नहीं क्या हो गया है। इसे केवल संत ही पकड़ सकते हैं। वासुदेव ने जब अर्जुन से मन को पकड़ने को कहा, उसका निग्रह करने को कहा तो अर्जुन ने कहा कि कुछ भी करने को कहो, प्रयास करूँगा, वायु की गठान नहीं बाँधी जा सकती, यदि कहो तो वो भी करूँगा, समुद्र का मंथन करना दुष्कर है, तो भी प्रयास करूँगा, पर मन का निग्रह करने के लिए मत कहो, यह नहीं कर पाऊँगा। साहिब कह रहे हैं - 'तेरा बैरी कोई नहीं, तेरा बैरी मन।' यह मन आत्म-देव को परेशान कर रहा है, हुकूमत इसी मन की चल रही है।

मन ही आहे काल कराला, जीव नचाए करे बेहाला ॥

जीव के संग मन काल रहाई, अज्ञानी नर जानत नाहीं ॥

यह आत्मा को बेहद पीड़ा दे रहा है। यह परम-पुरुष का पाँचवाँ पुत्र है, इसने तपस्या करके तीन-लोक का राज्य प्राप्त किया है। कभी-कभी भयंकर तबाही से घबराकर आप कहते हैं, हे प्रभु! रक्षा करो। इतने बड़े-बड़े विनाश संसार में हो रहे हैं। अब तर्क उठता है कि परमात्मा बचा क्यों नहीं रहा है। यानि वो खुद चाहता है। साफ़-साफ़ पता चलता है कि क्रूर ताकत ही इस संसार का संचालन कर रही है।

संसार में ज़्यादा-से-ज़्यादा क्या मिलता है- चार मुक्तियाँ। कहीं पितर लोक, कहीं बैकुण्ठ, कहीं ब्रह्म लोक, कहीं निराकार यानि निरंजन लोक, लेकिन - '.....फिरके डार दे भूमाहिं।' पुनर्जन्म होगा। इस प्रकार अनादिकाल से आत्मा काल के दायरे में है। कोई आत्म जान नहीं पा रहा है। 'जो रक्षक तहं चीह्नत नाहीं, जो भक्षक तहं ध्यान लगाहीं।' यह केवल सांसारिक लोगों की कहानी नहीं है। साहिब कह रहे हैं- 'ब्रह्मदि शिव सनकादि सब काल के गुण गावहीं।'।

देखते हैं कि साहिब कहाँ की बात कर रहे हैं। ध्यान दें, वे कह रहे हैं-

चल हंसा सतलोक, छोड़ो यह संसारा।

तीन लोक काल है राजा, कर्म का जाल पसारा ॥

चौरासी से बचने का सूत्र है। सब जगह जाने का सूत्र है। नरक का

रास्ता पाप है, स्वर्ग का रास्ता शुभ कर्म है, ब्रह्म लोक या निरंजन लोक का रास्ता पाँच शब्दों की पंच मुद्राएँ हैं। इस तरह अमर लोक का रास्ता भी है। इस जग में जितने भी जीव हैं, काल की सीमा के अन्दर हैं। काल की वृत्ति ही क्रूर है, वो कष्ट ही देता रहेगा। यहाँ सुख ढूँढ़ना बेवकूफी है। आज तक किसी भी महापुरुष की वाणी से एक चीज़ पता नहीं चली कि यहाँ कोई सुखी है। साहिब तो कह रहे हैं -

तन धरि सुखिया कोई न देखा, जो देखा सो दुखिया।

उदय अस्त की बात कहत हो, सबका किया विवेका ॥

कह रहे हैं, किसी भी शरीर धारी को सुखी नहीं देखा, जिसे देखता हूँ, दुखी ही नज़र आता है। जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त सब दुखी ही दिखाई देते हैं। वास्तव में यह शरीर मिला ही दण्ड के लिए है।

बाटे बाट सब कोई दुखिया, का गिरही का बैरागी।

सुखाचार्य दुख ही के कारण, गर्भहि माया त्यागी ॥

चाहे कोई गृहस्थ हो या सन्यासी, दुखों से नहीं छूट सकता। संसार के दुखों को समझकर ही तो शुकदेव ने गर्भ में ही माया का त्याग कर दिया था। वो तो बाहर ही नहीं आना चाहता था; साढ़े सात साल का होकर बाहर आया था और वो भी देवताओं द्वारा बहुत विनती करने पर। तो कह रहे हैं-

योगी दुखिया जंगम दुखिया, तपसी को दुख दूना।

आशा तृष्णा सब घट व्याप्त, कोई महल न सूना ॥

योगी लोग भी दुखी हैं, जो योगादि करके अष्ट सिद्धियों के मालिक बने हुए हैं। जंगम भी दुखी हैं, जो मोह से बचने के लिए एक स्थान पर टिक कर नहीं रहते। फिर उन तपस्वियों को तो दो गुणा दुख है जो अनेक कष्टों को सहकर तपस्या में लगे हुए हैं। साहिब कह रहे हैं कि आशा-तृष्णा सबको अन्दर से संताप दे रही हैं, जिसके कारण सभी दुखी हैं।

यह तो सच है, पर साहिब कहते हैं कि मेरी बातों को सुनकर लोग

मेरे ऊपर खीझते हैं, क्रोध करते हैं, लेकिन मैं तो कहता हूँ कि मुझसे झूठी बात नहीं कही जायेगी और सच तो यह है कि जिसने इस संसार की रचना की है, वो खुद भी दुखी है।

साँच कहौं तो सब जग खीझै, झूठ कहा न जाई।

कहैं कबीर वो भी दुखिया, जिन्ह यह राह चलाई॥

इस दुनिया में जितने भी ऋषि-मुनि आए, सबने इसे दुखों का घर बोला और नाशवान् कहा। भाइयो! यह जेलखाना है। यह दुनिया की बहुत बड़ी जेल है। आओ, बताता हूँ, कैसी जेल है। **जैसे एक वन विहार है, वो भी कैदखाना है।** फिर एक चिड़ियाघर है। वन-विहार में बड़े-बड़े जंगल हैं, उनमें रहने वाले पशु स्वाभाविक जीवन जी रहे हैं, उन्हें लगता है कि वे आज़ाद हैं। नहीं! अन्तर यह है कि चिड़ियाघर में एक कमरे में कैद हैं, पर वन-विहार में बड़े-बड़े जंगलों में कैद हैं। निकल कहीं से भी नहीं सकते, बस, दायरा छोटा बड़ा है। इस तरह तीन-लोक का दायरा है, जिसके अन्दर रहने वाला प्रत्येक जीव बंधन में है। तीन लोक में जो भी है, पक्का काल के दायरे में है। इस आत्मा को काल किसी भी कीमत पर निकलने नहीं दे रहा है। वहाँ अरण्य में झरने भी हैं, शेर के लिए हिरण भी रख रखे हैं, पर सब कैद हैं। ऐसे ही हम समझ रहे हैं कि आज़ाद हैं। साधारण आदमी समझ रहा है कि दिल्ली जा रहा हूँ, कलकत्ता जा रहा हूँ, मुम्बई जा रहा हूँ आज़ाद हूँ। साधक समझ रहे हैं कि स्वर्ग जा रहे हैं, ब्रह्म-लोक जा रहे हैं, शिव-लोक जा रहे हैं आज़ाद हैं। नहीं! कोई आज़ाद नहीं है। साहिब कह रहे हैं - 'तीन लोक में सबही अटके। खरे सयाने सबही भटके॥' उन्होंने बड़ा सुन्दर कहा -

तीन लोक में काल है, चौथा नाम निर्वाण।

जो यह भेद न जानइ, सो नर वृषभ समान॥

सबकी मान्यता बन गयी कि यही निराकार रक्षक है। पर साहिब ने कहा कि कोई भी सुरक्षित नहीं है। साहिब ने तीन लोक से न्यारे देश की बात की, कहा- उसे केवल संतजन ही जानते हैं। शरीर के समस्त चक्रों की बात करते हुए सभी मुकामों का उल्लेख भी करते हुए कैसे पहुँच

सकते हैं, वो भी कह रहे हैं -

जगर मगर एक नगर अग्र की डोरि है ।

बूझो सन्त सुजान शब्द घनघोर है ॥

कहू नग्र की डोरि तो सूक्ष्म झीन है ।

सुरति निरति से जाय सोई परवीन है ॥

मूल द्वार को तार लगा सुर भीतरे ।

इन्द्री नाल की जोर मिला गुण तीसरे ॥

नाभि कमल की शक्ति मिलावै आनि के ।

तीन तार करि एक अगम घर जानिके ॥

हृदय कमल की नाल तार से जोरिये ।

योग युक्ति से साधि भववासा तोरिये ॥

कण्ठ कमल की नाल तो स्वर में आनिये ।

पाँच औ सात मिलाय ऊपर को तानिये ॥

बंकनाल दुई राह एक सम राखिये ।

चढ़ो सुषमना घाट, अमीरस चाखिये ॥

रूप नाल की डोरि निरंजन बास है ।

सुरति रहै बिलम्हाय मिलावत श्वाँस है ॥

ता ऊपर आकाश बहुत परकाश है ।

ता में चार मुकाम लखै सो दास है ॥

त्रिकुटी महल में आव जहाँ ओंकार है ।

आगे मारग कठिन सो अगम अपार है ॥

तहाँ अनहद की घोर होत झनकार है ।

लागि रहे सिद्ध साधु न पावत पार हैं ।

सोंह सुमिरन होय सो दक्षिण कोन है ।

तहवाँ सुरति लगाय रहै उनमौन है ।

पश्चिम अक्षर एक सो रंकार है।

यह ब्रह्माण्ड का ख्याल सो अगम अपार है॥

धर्मराय को राज मध्य अस्थान है।

तीन लोक भरपूर निरंजन ज्ञान है॥

ता ऊपर आकाश अमी का कूप है।

अनंत भानु प्रकाश सो नगर अनूप है॥

तामे अक्षर एक सो सबका मूल है।

कहों सुक्ष्म गति होय विदेही फूल है॥

निःअक्षर का भेद हंस कोई पाइ हैं।

कहैं कबीर सो हंसा जाय समाइ हैं॥

एक बात आई कि वो देश निराला है। कई जगहों पर साहिब ने वर्णन किया है कि वो तीन लोक से परे है। आज तक आपने तीन-लोक से न्यारी बात नहीं सुनी होगी। साहिब ने तीन-लोक से न्यारी बात कही है।

संतो! सो निज देश हमारा।

जहाँ जाय फिर हंस न आवै, भवसागर की धारा।

सूर्य चन्द्र तहाँ नहीं प्रकाशत, नहीं नभ मण्डल तारा।

उदय न अस्त दिवस नहिं रजनी, बिना ज्योति उजियारा।

पाँच तत्व गुण तीन तहाँ नहिं, नहिं तहाँ सृष्टि पसारा।

तहाँ न माया कृत प्रपंच यह, लोग कुटुम परिवारा।

क्षुधा तृषा नहिं शीत उष्ण तहाँ, सुख दुख को संचारा।

आधिन व्याधि उपाधि कछू तहाँ, पाप पुण्य विस्तारा।

ऊँच नीच कुल की मर्यादा, आश्रम वरण विचारा।

धर्म अधर्म तहाँ कछू नाहीं, संयम नियम अचारा।

अति अभिराम धाम सर्वोपरि, शोभा अगम अपारा।

कहँहि कबीर सुनो भाई साधो, तीन लोक से न्यारा॥

वहाँ सूर्य, चाँद और तारों का प्रकाश नहीं है, इसलिए दिन-रात का खेल भी नहीं है। वहाँ बिना ज्योति के हर समय प्रकाश रहता है। वहाँ

जन्म-मरण नहीं, वहाँ पाँच तत्व भी नहीं हैं। याद रहे, जहाँ भी पाँच तत्व हैं, वहाँ प्रलय है। तत्व ही तत्व के विनाशक हैं, इसलिए नहीं हैं। फिर भूख-प्यास, सर्दी-गर्मी, सुख-दुख भी नहीं है और पाप पुण्य का जाल भी नहीं है। न कोई वहाँ बड़ा है, न छोटा; वो सबसे सुंदर और प्यारा देश है, जिसकी शोभा असीम है, अथाह है; वो इस तीन लोक से न्यारा देश है।

दुनिया के लोग परमात्मा की खोज भी बड़े निराले तरीके से कर रहे हैं, इसलिए वे समझा रहे हैं -

संतो मूल भेद कुछ न्यारा, कोई बिरला जानन हारा।
मूल रहस्य तो कुछ और ही है और उसे कोई बिरला ही जानता है।
मूड़ मुड़ाये भयो कह धारे, जटा जूट शिर मारा।
कहा भयो पशुसम नग्न फिरै बन, अंग लगाये छारा।
कहा भयो कन्द मूल फल खाये, वायु किये आहारा।
शीत उष्ण जल क्षुधा तृषा सहि, तन जीवन करि डारा।
सांप छोड़ि बांवी को कूटे, अचरज खेल पसारा।
धोबी के बस चले नहीं कछु, गदहा काह बिगारा।
योगी यज्ञ जप तप संयम व्रत, किया कर्म विस्तारा।
तीरथ मूरति सेवा पूजा, ये उरले व्यवहारा।
हरि हर ब्रह्मा खोजत हारे, धरि धरि जग अवतारा।
पोथी पाना में क्या ढूँढ़े, वेद नेति कह हारा।
बिन गुरु भक्ति भेद नहि पावे, भरमि मरे संसारा।
कहँहि कबीर सुनो भाई साधो, मानो कहा हमारा॥

यदि जटाएँ बढ़ा लेने से मिलता तो भालुओं के तो बाल ही बाल हैं, उन्हें मिल जाना था, पर नहीं - 'मूल भेद कुछ न्यारा।' कुछ पवन का आहार करके जीवित रहते हैं। रहा जा सकता है। सर्प शीतकाल में धरती के अन्दर निवास कर लेता है। हमारा तापमान 98.4 रहता है, पर उसका बाहरी वातावरण के आधार पर बदलता रहता है। तो सर्दी में उसका

शरीर अकड़ जाता है, वो चल नहीं पाता। वो चलता भी वक्र है, इसलिए वो सर्दी में अन्दर चला जाता है। फिर वहाँ खाता क्या है? हवा। दुनिया में कुछ सिद्ध हवा का सेवन करते हैं। इससे भी कल्याण नहीं होगा। फिर कुछ नंगे रहकर धूप में रहते हैं, कुछ ठण्ड में रहते हैं यानि शरीर को कष्ट देते हैं। यदि ऐसे में परमात्मा मिल सकता तो गरीबों को सबसे पहले मिलना था। तो कुछ खाना छोड़ देते हैं। इससे भी कुछ अन्तर नहीं पड़ने वाला, क्योंकि 'मूल भेद कुछ न्यारा।' यह सब तीन-लोक के अन्दर का व्यवहार है। 'हरिहर ब्रह्मा खोजत हारे।' ध्यान दें, क्या कह रहे हैं। वे झूठे नहीं थे, कह रहे हैं, हार गये।

तो बार-बार घूम कर कह रहे हैं कि मेरी बात मानो, वो तीन-लोक से न्यारा है। वहाँ काल नहीं, पंच तत्व नहीं, सगुण-निर्गुण भी नहीं। अभी तक तो सगुण-निर्गुण का खेल सुना था, पर दादू दयाल भी कह रहे हैं -

कोई सगुण में रीझ रहा, कोई निर्गुण ठहराय।

अटपट चाल कबीर की, मोसे कही न जाय ॥

दोनों से परे कहा, साहिब ने।

साकार कहूँ तो माया माहिं, निराकार कछु आया नाहीं।

है जैसा तैसा रहे, कहैं कबीर विचार ॥

कुछ उनकी वाणियाँ निराला कह रही हैं। चिंतन करना होगा। कुछ कहते हैं कि वे रहस्यवादी थे। नहीं, सत्यवादी थे। कह रहे हैं - 'वेद कितेब पार नहीं पावत, कहन सुनन से न्यारा है।' कुछ देर बाद साहिब की शिक्षा सिद्धांत रूप से चलेगी, लोग स्वीकार करेंगे। कह रहे हैं कि उस तत्व को मनुष्य नहीं समझ पाया।

कोई कहे हलका कोई कहे भारी, सब जग भर्म भुलाया है।

ब्रह्मा विष्णु महेश्वर हारे, कोई पार न पाया है।

शारद, शेष, सुरेश, गणेशहुँ वेदहुँ मन सकुचाया है।

द्विदल, चतुर, षट, अष्ट, द्वादश, सहस्र कमल बिच काया है।

ताके ऊपर आप बिराजै, अद्भुत रूप धराया है।

है तिल के झिलमिल तिल भीतर, ता तिल बीच छिपाया है।
 तिनका आड़ पहाड़ सी भासै, परमपुरुष की छाया है।
 अनहद की धुन भँवरगुफा में, अति घनघोर मचाया है।
 बाजे बजें अनेक भाँति के, सुनि के मन ललचाया है।
 पुरुष अनामी सबका स्वामी, रचि निज पिण्ड समाया है।
 ताकी नक़ल देखि माया ने, यह ब्रह्माण्ड बनाया है।
 यह सब काल जाल को फन्दा, मन कल्पित ठहराया है।
 कहहिं सत्यपद सद्गुरु, न्यारा करि दर्शाया है ॥

अभी तक विज्ञान को जितना मालूम है, उतना हम मान रहे हैं। जैसा कि पहले भी कहा कि पुराणों में पहले ही कहा है कि सूर्य नारायण चल रहा है, सफ़ेद घोड़ों का रथ लेकर सूर्य नारायण यात्रा कर रहा है। हम विज्ञान द्वारा अब मान रहे हैं। इस तरह साहिब ने तीन लोक के आगे कहा। इस तीन लोक और अमरलोक के बीच में भी कई लोक हैं। आओ, उनपर बात करते हैं।

इस तीन लोक के ऊपर जाने पर अचिन्त लोक है .. बहुत दूरी पर। कम्प्यूटर में यह गणना नहीं है। साहिब की गणना भी बड़ी जबरदस्त है। वैज्ञानिक प्रकाशवर्ष में गिन रहे हैं, साहिब ने योजन में बताया। एक जन्म नहीं, अगर अरबों भी अपोलो-11 चले, पारपाइण्डर चले, तो भी नहीं पहुँच पायेगा। तो कैसे जाएँ? भाइयो! आपकी आत्मा एक सैकेण्ड में अरबों मील चलती है। आपकी आत्मा में इतना वेग है। इसका उल्लेख वासुदेव ने किया, कहा – हे अर्जुन! इस आत्मा के हाथ नहीं, पर सभी दिशाओं से काम कर सकती है, इसकी आँखें नहीं, पर सभी दिशाओं से देख सकती है, इसकी टाँगें नहीं, पर सभी दिशाओं से चल सकती है। यह मामूली नहीं है। अपने बच्चों में आप अपने गुण देख रहे हैं, इस तरह यह आत्मा, परमात्मा की अंश है। मामूली नहीं है। मीराबाई ऐसे नहीं कह रही है – ‘मीरा मन मानी सुरति सैल असमानी।’ नाभा जी भी कह रहे हैं – ‘नाभा नभ खेला सुरति केल सर सैला।’ तो इस प्रकार ये रहस्य भरे पड़े हैं। यह चोला मामूली नहीं है। मोबाइल में बड़े सिस्टम हैं, चाहो तो कैमरे में चले जाओ, चाहो तो मैसिज में। लेकिन ग़लत बटन दबाया तो

लॉक हो जाएगा। इस तन में पाप कर्मों के गलत बटन दबाकर इस मोबाइल को लॉक कर दिया है आपने। गुरु लॉक खोलने का रहस्य बता देता है। तो फिर जब चाहो, उड़ सकते हैं, ब्रह्माण्ड की यात्रा कर सकते हैं।

तो कह रहे हैं कि शून्य से पाँच असंख्य योजन ऊपर जाने पर अचिन्त लोक है। फिर अचिन्त से तीन असंख्य योजन ऊपर जाने पर सोहंग लोक है। सोहंग से फिर पाँच असंख्य योजन ऊपर मूल सुरति लोक है। सुरति से तीन असंख्य योजन ऊपर अंकुर लोक है। अभी वैज्ञानिक नन्हें बच्चे हैं पीछे-पीछे आ रहे हैं। 30 करोड़ रुपये लगाकर इंग्लैंड में साहिब पर अनुसंधान केन्द्र खोला है। बड़े शोध कर रहे हैं। वेदों पर भी शोध चल रहा है। अगर मैं कहूँ कि उस देश की बात कर रहा हूँ तो आप जल्दी नहीं मानोगे। मैं तो वहाँ जाता रहता हूँ। साहिब भी कह रहे हैं -

मैं आया सतलोक से, फिरा गाँव की छोर।

ऐसा बंदा न मिला, जो लीजै फटक पछोर ॥

एक बार किसी का प्रवचन सुना, वो कह रहा था कि कोई पृथ्वी पर नहीं उतरता था, ये काल्पनिक चीजें हैं। नहीं! उसे ज्ञान नहीं था। आना होता है, जाना होता है। इन्द्र को एक बार वशिष्ठ मुनि ने हिलाया था, इन्द्र ने कहा - तुम कौन हो? मुझ पर तो कोई हमला नहीं कर सकता। कहा - हे इन्द्र! मैं वशिष्ठ हूँ। इन्द्र ने कहा - तुम नज़र नहीं आ रहे हो। कहा - मैं अन्तवाहक शरीर द्वारा आया हूँ, तुम मुझे नहीं देख सकते हो, पर मैं तुम्हें देख सकता हूँ। भाइयो! छः शरीर हैं आपके शरीर में। जैसे आपके पास बड़े सूट हैं - एक बाहर जाने को, एक पार्टी के लिए, एक घर में पहनने के लिए। इस तरह बड़े शरीर हैं।

‘शिव गोरख सो पच पच हारे, काया का कोई भेद ना पाए।’

तो अंकुर लोक के आगे कह रहे हैं - इच्छा लोक, फिर उसके आगे वाणी लोक है। बहुत बड़े-बड़े क्षेत्रज हैं तीन लोक के ऊपर। सातवाँ

सहज लोक है। यहाँ तक प्रलय है 'सहज लोक तक जेतिक भाखा। सो रचना परले कर राखा ॥' इसके आगे परम-पुरुष का लोक है। वहाँ कभी नाश नहीं है। वो अद्भुत देश है।

कोई ना रहा एक वो लोक रहेगा

आया जो वहाँ से ख़बर उसकी कहेगा।

जिसको वो नज़र आय फिर वो कुछ न चाहेगा।

साहिब कह रहे हैं कि वहाँ से आया है यह हंसा।

जहवाँ से हंसा आया, अमर है वा लोकवा।
 तहाँ नहीं परले की छाया, तहाँ नहीं कछु मोह और माया।
 ज्ञान ध्यान को तहाँ न लेखा, पाप पुण्य तहवाँ नहीं देखा।
 पवन न पानी पुरुष न नारी, हृद अनहृद तहं नाहि विचारी।
 ब्रह्म न जीव न तत्व की छाया, नहीं तहं दस इन्द्री निर्माया।
 तहाँ नाहि ज्योति निरंजन राई, अक्षर अचिन्त तहाँ न जाई।
 काम क्रोध मद लोभ न कोई, तहंवा हर्ष शोक न होई।
 नाद बिन्द तहाँ न पानी, नहीं तहं सृष्टि चौरासी जानी।
 पिण्ड ब्रह्माण्ड को तहाँ न लेखा, लोकालोक तहंवा नहीं देखा।
 आदि पुरुष तहंवा अस्थाना, यह चरित्र एको नहीं जाना ॥

वेद चारों नाहि जानत, सत्य पुरुष कहानियाँ।

वेद को तब मूल नाहीं, अकथ कथा बखानियाँ॥

पुस्तक सूची

हिन्दी में

1. परा रहस्या
2. मासिक पत्रिका सत्यकेतु
3. पावन प्रार्थनाएँ
4. सद्गुरु चालीसा
5. वार्षिक डायरी
6. सद्गुरु भक्ति
7. कहाँ से तू आया और कहाँ
तुझे जाना रे?
8. सत्संग सुधारस
9. नाम अमृत सागर
10. अमृत वाणी
11. सद्गुरु नाम जहाज है
12. चल हंसा सतलोक
13. कोटि नाम संसार में तिनते
मुक्ति न होय
14. मूल नाम गुप्त है, जाने बिरला
कोय
15. गुरु सुमिरै सो पार
16. तीन लोक से न्यारा
17. सेहत के लिए ज़रूरी
18. सहजे सहज पाइये
19. रोगों से छुटकारा
20. सद्गुरु महिमा
21. भक्ति के चोर
22. अनुरागसागर वाणी
23. भक्ति सागर
24. हरि सेवा युग चार है, गुरु
सेवा पल एक
25. सत्य नाम के सुमरते उबरे
पतित अनेक
26. काग पलट हंसा कर दीना
27. कस्तूरी कुण्डल बसै मृग
खोजे बन माहिं
28. गुरु पारस गुरु परस है
29. गुरु अमृत की खान
30. शीश दिये जो गुरु मिले तो
भी सस्ता जान
31. मूल सुरति
32. भृंग मता होय जिहि पासा,
सोई गुरु सत्य धर्मदासा
33. मैं कहता हूँ आँखिन देखी
34. गुरु संजीवन नाम बतावे
35. नाम बिना नर भटक मरे
36. रोगों की पहचान
37. यह संसार काल को देशा
38. न्यारी भक्ति
39. साहिब तेरी साहिबी सब
घट रही समाय

41. आयुर्वेद का कमाल रोगों के निदान में
42. सुरति समानी नाम में
43. सबकी गठरी लाल है, कोई नहीं कंगाल
44. निन्दक जीवे युगन युग काम हमारा होय।
45. निराले सद्गुरु
46. कुँजड़ों की हाट में हीरे का क्या मोल
47. जीवड़ा तू तो अमर लोक का पड़ा काल बस आई हो
48. मुझे है काम 'सद्गुरु से जगत रूठे तो रूठन दे'
49. जेहि खोजत कल्पो भये घटहि माहिं सो मूर
50. आत्म ज्ञान बिना नर भटके
51. बिन सतगुरु बाँचे नहीं कोटिन करे उपाय
52. अँधी सुरति नाम बिन जानो
53. सत्यनाम निज औषधि सद्गुरु दर्ई बताय
54. सेहत संजीवनी
55. भक्ति दान गुरु दीजिए
56. मन पर जो सवार है ऐसा ऐसा विरला कोई
57. सत्यनाम है सार बूझौ सन्त विवेक करि
58. रोग निवारक
59. मुक्ति भेद मैं कहाँ विचारी
60. "तेरा बैरी कोई नहीं तेरा बैरी मन"
61. सुरति का खेल सारा है
62. सार शब्द निहअक्षर सारा
63. करूँ जगत से न्यार
64. बिन सत्संग विवेक न होई
65. सत्य नाम को जनि कर दूजा देई बहा
66. सुरत कमल सद्गुरु स्थाना
67. अब भया रे गुरु का बच्चा
68. मनहिं निरंजन सबै नचाए
69. सत्यपुरुष को जानसी तिसका सतगुरु नाम
70. आपा पौ आपहि बँध्यो
71. सत्य भक्ति का भेद न्यारा
72. जपो रे हंसा केवल नाम कबीर
73. सत्य भक्ति कोई बिरला जाना
74. जगत है रैन का सपना
75. 70 प्रलय मारग माहीं
76. सार नाम सत्यपुरुष कहाया
77. आवे न जावे मरे न जन्मे सोई सत्यपुरुष हमारा है
78. निराकार मन
79. सत्य सार
80. सुरति
81. भक्ति रहस्य
82. आत्म बोध
83. अमर लोक
84. सच्चा शिष्य
85. सद्गुरु तत्व
86. कोई कोई जीव हमारा है
87. विहगम मुद्रा
88. शक्ति बिना नहीं पंथ चलई
89. पुरुष शक्ति जब आए समाई तब नहीं रोके काल कसाई
90. सद्गुरु मोहि दीनी अजब जड़ा
91. मेरा करता मेरा साईया
92. कबीर कलयुग आ गया, सन्त न पूजै कोय।।
93. पूर्णिमा महात्म
94. चार पदार्थ इक मग माहीं
95. अध्यात्मिक प्रश्नोत्तर

उर्दू

01. सदगुरु भक्ति

मराठी भाषा

01. यह संसार काल को देशा
02. अनुरागसागर वाणी
03. नामा शिवाय मानव जीवन
व्यर्थ
04. करु जगत से न्यार

तमिल भाषा

01. यह संसार काल को देशा
02. अनुरागसागर वाणी

कन्नड़ भाषा

01. मन पर ओ असवार है ऐसा
बिरला कोई
02. करुं जगत से न्यार
03. अनुरागसागर वाणी

पंजाबी भाषा

01. सतिगुरु भगती
02. नाम अमृत सागर
03. कहुं जगत से निआर
04. अनुराग सागर घाटी

गुजराती भाषा

01. अनुरागसागर वाणी

02. नाम बिना नर भटक मरै
03. करु जगत से न्यार

डोगरी भाषा

01. न्यारी भक्ति
02. सहजे सहज पाइये

अंग्रेजी भाषा

01. Meditation on a Real
SATGURU Ensures
Permanent Salvation
02. Satguru Bhakti
(Uniqueness)
03. The Truth
04. Without Soul
Realisation Man Has
to Wander
05. The Whole Game is
That Of
Concentration
06. Atma-An Exposition
(Atam Bhodh)
07. 70 Dissolution
08. Anuragsagar vani
09. Naam World of This
World
10. Secret of Salvation
11. Crossing the Ocean
of Life
12. Stealer of Devotion